disha
Publication Inc

7 वर्ष UPSC

IAS/ IPS Mains

हिन्दी अनिवार्य

Year-wise

Solved Papers (2013-2019)

26 निबंध

140 व्याकरण प्रश्न

7 सारांश
अपठित गद्यांश
Hindi अनुवाद
English अनुवाद

मुख्य विशेषताएं

- प्रश्नों के उत्तर शब्द सीमा के अंतर्गत
- प्रश्न-पत्र में निदेशित सभी विशिष्ट अनुदेशों का अनुपालन
- प्रश्न 1 (निबंध) के सभी विकल्पों के उत्तर
- हिन्दी अनिवार्य प्रश्न-पत्र के लिए व्याकरण अध्ययन सामग्री

disha
Publication Inc

7 वर्ष

UPSC

IAS/ IPS Mains

हिन्दी अनिवार्य

Year-wise

Solved Papers (2013-2019)

Corporate Office

DISHA PUBLICATION
45, 2nd Floor, Maharishi Dayanand Marg, Corner Market, Malviya Nagar, New Delhi - 110017
Tel : 49842349 / 49842350

© Copyright Disha

No part of this publication may be reproduced in any form without prior permission of the publisher. The author and the publisher do not take any legal responsibility for any errors or misrepresentations that might have crept in. We have tried and made our best efforts to provide accurate up-to-date information in this book.

All Right Reserved

Typeset by Disha DTP Team

Review this book at

Check latest updates for this book

disha Publication Inc

www.dishapublication.com
Books & ebooks for School & Competitive Exams

www.mylearninggraph.com
Etests for Competitive Exams

Write to us at **info@dishapublication.com**

Contents

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2013 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र **1-10**

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2014 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र **11-26**

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2015 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र **27-40**

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2016 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र **41-56**

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2017 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र **57-72**

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2018 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र **73-88**

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2019 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र **89-105**

आगामी यू.पी.एस.सी. सी.एस. परीक्षाओं हेतु
महत्त्वपूर्ण व्याकरण **106-168**

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2013 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र

Time allowed : Three hours *Maximum Marks : 300*

प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश:

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित हैं।
- उत्तर हिन्दी में ही लिखे जाएँगे, यदि किसी प्रश्न-विशेष में अन्यथा निर्दिष्ट न हो।
- जिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्धारित है, वहाँ इसका अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर, निर्धारित शब्द-संख्या की तुलना में काफी लंबा या छोटा है तो अंकों की कटौती की जा सकती है।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो खाली छोड़ा गया हो, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

Q1. निम्नलिखित प्रत्येक पर 300 शब्दों में संक्षिप्त निबंध लिखिए: (2×50 = 100)

(a) हम अपने कर्मों में जीते हैं ना कि सालों में।

(b) कोई समाज बिना समयबद्ध न्याय के नहीं चल सकता।

Ans. (a) हम अपने कर्मों में जीते हैं ना कि सालों में

"जिंदगी बड़ी होनी चाहिए लंबी नहीं" आनंद फिल्म का यह प्रसिद्ध संवाद तो अधिकतर लोगों को याद ही होगा, जिसमें नायक द्वारा यह संदेश दिया गया है कि महत्त्व जीवन की लंबाई का नहीं अपितु किए गए कर्मों का है क्योंकि संसार किसी भी व्यक्ति को उसके कर्मों से ही याद रखता है।

संसार में कई ऐसे महान व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्हें उनके कर्मों के कारण याद किया जाता है, चाहे उनकी जीवन अवधि कम ही रही हो; जैसे स्वामी विवेकानंद, श्रीनिवास रामानुजन, हेनरी विवियन डेरोजियो, रानी लक्ष्मीबाई, भगत सिंह आदि। इन महान हस्तियों ने देश व समाज के हित में अपने संक्षिप्त जीवन काल में ही ऐसे कर्म किए, जिसके कारण संसार इन्हें आज भी याद करता है। समाज को मानवता के हित में बिना कर्म किए लंबे जीवन का कोई महत्त्व नहीं है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि जो उसे समाज से प्राप्त हुआ है, उसके बदले वह समाज को कुछ महत्त्वपूर्ण योगदान देकर जाए अन्यथा उसका जीवन व्यर्थ ही माना जाएगा।

तू कम ही जिया तो कोई ग़म नहीं,
तूने जो किया वो किसी से कम नहीं।

वर्तमान में कई ऐसे हजारों युवा हैं, जिन्होंने देश के लिए अपने प्राण न्योछावर किए; जैसे कैप्टन विक्रम बत्रा, कैप्टन विजयंत थापा, मेजर संदीप उन्नीकृष्णन

आदि। हेनरी मोसले, विलियम किंगडम क्लिफोर्ड, रोसलिंड फैंकलीन आदि वैज्ञानिकों की मृत्यु युवावस्था में ही हो गई थी, लेकिन इन्होंने विज्ञान के लिए इतना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, जिसके कारण वर्तमान के कई आविष्कार संभव हो सके।

अंत में सार यह है कि सभी को एक न एक दिन मृत्यु अवश्य आनी है, लेकिन मरने से पहले कुछ ऐसा कार्य कर जाना जो समाज को ऊँचाइयां दे सके तो उस व्यक्ति का नाम हमेशा सम्मान से लिया जाएगा और मानवता हमेशा उसके प्रति कृतज्ञ रहेगी और व्यक्ति अपने कर्मों के कारण संसार में अमर हो जाता है।

(b) कोई समाज बिना समयबद्ध न्याय के नहीं चल सकता

न्याय सामाजिक जीवन की वह व्यवस्था है जिसमें व्यक्ति के आचरण का समाज के व्यापक कल्याण के साथ समन्वय स्थापित किया जाता है। न्याय किसी भी समाज के प्रगतिशील एवं सभ्य होने के लिए आवश्यक शर्त है। चूँकि मानव एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए उसके द्वारा किए गए प्रत्येक कार्य का समाज के अन्य लोगों पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यदि कोई व्यक्ति कानून व व्यवस्था के नियमों का उल्लंघन करता है तो उसे कानून के माध्यम से बनाए गए नियमों के अनुसार दंडित किया जाता है। दंडित करने की यह प्रक्रिया एक कानूनी प्रक्रिया है जिसमें दोषी व पीड़ित दोनों का पक्ष सुना जाता है और अपराध के अनुसार दंड दिया जाता है।

लेकिन कभी-कभी इस कानूनी प्रक्रिया में बहुत अधिक समय लग जाता है जिसके कारण दोषी को लंबे समय तक कारावास में रहना पड़ता है और ऐसी स्थिति में वह तब तक समाज की नजरों में अपराधी ही माना जाता है जब तक की न्यायालय उसे दोषमुक्त ना कर दे। इस कारण चाहे व्यक्ति निर्दोष ही क्यों न हो, उसे अपना जीवन दोषी की तरह ही बिताना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति की गरिमा का हनन होता है और वह स्वतंत्रतापूर्वक समाज में जीवन-यापन नहीं कर पाता। भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश में न्यायिक प्रक्रिया अधिक जटिल होने और उचित संसाधनों के अभाव के कारण न्याय मिलने में बहुत लंबा समय लग जाता है। भारत के उच्च न्यायालयों में लगभग 43 लाख मुकदमे लंबित पड़े हैं जिनमें से लगभग 8 लाख मुकदमे एक दशक से भी अधिक समय से लंबित हैं। इस तरह से मुकदमे लंबित होने के कारण लोगों का न्याय व्यवस्था पर से विश्वास उठ जायेगा और समाज में अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी। इसलिए कहा जाता है की देर से मिला न्याय भी अन्याय के सामान ही होता है।

Q2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर, उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए:(6×10 = 60)

पत्रकारों के बीच विचारों की असहमति प्रशासकों की सुविधा का एक स्रोत है, जिसका अभिप्राय प्रेस की उस शक्ति का क्षरण होना है जो अनेकानेक विचारों द्वारा प्रेस द्वारा अभिव्यक्त किए जाते हैं। वह कोई जोरदार आवाज नहीं है, ना ही सुननेवालों के

समूह का कोई आकार है जो कि स्वीकार्य है और जो समाचार-पत्र के प्रभाव का सही मापदण्ड है। प्रेस की शक्ति तो पकड़ में न आने वाली चीज है, जो न तो उनसे सम्बद्ध होती है जो समाचार-पत्र की बिक्री से खूब पैसे कमाते हैं और ना ही उनसे जो सर्वाधिक प्रसार-संख्या में सफल हो जाते हैं।

जो पत्र आम जनता की कमजोरियों और उसकी संवेदना, पीड़ा के बारे में विचार करते हैं, जनता उनकी प्रसार-संख्या बढ़ाती है। यह सिनेमा की टिकट-खिड़की की अपील के समानान्तर है। फिल्मों की आकर्षक-शक्ति की सबलता उन अधिकांश चरित्रों से जुड़ी होती है जिन्हें वो प्रदर्शित करती हैं। फिल्मों की व्यावसायिक सफलता उनकी गुणवत्ता से नितान्त भिन्न चीज है जो कलाकार की पूर्णता/समर्पण से आती है। कला के सर्वोत्तम रूप के मूल्यांकन का साधन भीड़ से सम्बद्ध नहीं होता है। वह तो एक अर्जन है जिसके 'चुनाव' का स्वामित्व सीमित है, जो संख्या बल में सीमित है। वहाँ कुछ चुने-हुए सूक्ष्म प्रतिभाशाली, बोध-शक्ति सम्पन्न और अनेक अज्ञानी/अपढ़ के बीच एक संघर्ष है। बाद वालों में शिक्षाप्रद सुधार का लक्ष्य समाचार-पत्र की तरह फिल्मों का है। दोनों–समाचार-पत्रों और फिल्मों–के अन्तर्गत एक ही तरीके से प्रयास करना है। प्रलोभनों से ऊपर उठना समान है।

(i) लेखक किन दो चीज़ों की तुलना कर रहा है? **(10)**

(ii) जो समाचार-पत्र जनता के बारे में सोचते हैं, जनता उनके हेतु कैसी प्रतिक्रिया करती है? **(10)**

(iii) लेखक किस 'साधन' का संदर्भ दे रहा है? **(10)**

(iv) लेखकानुसार, समाचार-पत्रों का लक्ष्य क्या होना चाहिए? **(10)**

(v) लेखक किन लोगों को स्वीकृति नहीं प्रदान करता है? **(10)**

(vi) वो कौन से प्रभाव हैं जो किसी अच्छे समाचार-पत्र की गलत तस्वीर पेश करते हैं? **(10)**

Ans. (i) लेखक समाचार-पत्रों की सिनेमा से तुलना कर रहा है। लेखक के अनुसार दोनों ही का सर्वोत्तम मूल्यांकन का साधन भीड़ नहीं हो सकती है। दोनों को ही उनकी शिक्षाप्रदता एवं गुणता के आधार पर आकलित किया जा सकता है।

(ii) जो समाचार-पत्र जनता के हितों एवं संवेदनाओं के विषय में विचार करते हैं, जनता उनका समर्थन करती है। जनता ऐसे समाचार-पत्रों की प्रसार संख्या बढ़ाती है। इसकी तुलना सिनेमा की टिकट-खिड़की की अपील से की जा सकती है।

(iii) दिये गए गद्यांश में लेखक साधन का संदर्भ मूल्यांकन के परिप्रेक्ष्य में दे रहा है। यहाँ पर साधन का आशय तरीके से है; अर्थात् मूल्यांकन का तरीका भीड़ नहीं हो सकती है। समाचार-पत्रों को उनकी पकड़ में न आने वाली चीज के रूप में मापा जा सकता है।

(iv) लेखक के अनुसार, समाचार-पत्रों का लक्ष्य जनता की आवाज बनना होना चाहिए। समाचार-पत्रों को आम लोगों के प्रति सहानुभूतिपूर्वक विचार करना चाहिए एवं उनकी पीड़ा तथा संवेदना के लिए प्रयास करना चाहिए।

(v) लेखक भीड़ को स्वीकृति नहीं प्रदान करता है। लेखक के अनुसार, भीड़ में सभी लोग ज्ञानी और समझदार नहीं होते हैं। भीड़ में बोध-शक्ति सम्पन्न लोगों का संघर्ष अज्ञानी/अनपढ़ लोगों से होता है। अत: भीड़ अथवा संख्याबल का निर्णय श्रेष्ठता का पैमाना नहीं हो सकता है।

(vi) लेखक के अनुसार, सामाचार पत्रों का अच्छे और जनहित के मुद्दे उठाने के बावजूद उनकी कम बिक्री समाचार-पत्रों की गलत तस्वीर पेश करती है। अधि काधिक पैसे कमाना समाचार-पत्रों के मूल्यांकन का सही मापदण्ड नहीं हो सकता।

Q3. निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण (Precis) एक तिहाई शब्दों में लिखिए। शीर्षक देना अनिवार्य नहीं है। (शब्द-सीमा के अंतर्गत संक्षेपण न करने पर अंक काटे जा सकते हैं)– (60)

समकालीन विश्व में, 'राष्ट्र' (Nation) और 'राष्ट्र-राज्य' (Nation state) की अवधारणा के बीच में व्यापक मतभेद है। 'राष्ट्र-राज्य' को परिभाषित करना अपेक्षाकृत आसान है, वे विश्व राजनीतिक संगठन की आधारभूत इकाईयाँ हैं। वे प्राय: प्रभुसत्ता-सम्पन्न राज्य के समरूप हैं। वे वह इकाइयाँ हैं जिनके पास संयुक्त राष्ट्र (UN) में सीट है, अंग्रेजी में, आमतौर पर उन्हें 'देश' नाम दिया गया है। यह सुविधा-जनक होगा यदि हम उनको 'राज्य' के नाम से सरल बना दें, लेकिन दुर्भाग्यवश यह नाम कुछ राष्ट्र-राज्यों द्वारा इस्तेमाल किया जाता है जो वर्णित इकाइयों के राष्ट्र-राज्यों से छोटी हैं।

राष्ट्र-राज्य और प्रभुसत्ता राज्य को बराबर करना लुभाने वाले हैं, लेकिन यह आधुनिक जगत की अस्थिर प्रकृति की प्रभुसत्ता हेतु भ्रामक होगा। असल में, सभी राष्ट्र-राज्यों ने अपनी प्रभुसत्ता का कुछ हिस्सा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को समर्पित कर रखा है, यहाँ यू एन (UN) एक अच्छा उदाहरण है– राष्ट्र-राज्यों से अधिकार तो वो लेता है, लेकिन देता नहीं है। राज्यों के बीच व्यवहार में यहाँ शक्ति के जटिल समझौते और सम्बन्ध होते हैं। एक छोर पर, यह कुछ बड़े राज्यों को व्यापक शक्ति देता है। दूसरे छोर पर, कई छोटे राज्य, स्पष्ट रूप से शक्तिशाली पड़ोसियों या अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के संरक्षण के नीचे हैं और असलियत में उन्हें कई क्षेत्रों में स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने की कोई गुंजाइश नहीं है।

अधिकांश राष्ट्र-राज्य खुद को 'राष्ट्र' के रूप में वर्णित करते हैं, इसलिए हम सरल रूप से उन्हें उनके कहे के अनुसार क्यों नहीं लेते और कहें कि राष्ट्र-राज्य और राज्य एकरूप हैं? यह संभव नहीं है क्योंकि यह भिन्न व्यवस्था का सूक्ष्मीकरण है। कानूनी रूप से, एक राष्ट्र-राज्य एक परिभाषित सत्ता है, एक राष्ट्र एक जनसमुदाय है। जबकि आधुनिक जनसमुदाय, जो सामान्यतया खुद को राष्ट्र के साथ राष्ट्र-राज्य के फैलाव में लाने का आकांक्षी होता है, राष्ट्र की वह परिभाषा, जो यह अपेक्षित करती है कि वह अपने राष्ट्र-राज्य पर प्रभुत्व स्थापित करे, भी प्रतिबन्धक है। अधिकांश टिप्पणीकार सहमत होंगे कि पूर्ववर्ती सोवियत यूनियन के गणराज्यों के बहुसंख्यक जनसमुदाय, जैसे

कि जॉर्जीयंस, लूथियानन्स और उक्रेनियन्स स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व राष्ट्र थे और वह जनसमुदाय, जो अच्छी तरह से परिभाषित प्रादेशिक क्षेत्र थे, जैसे स्कॉटलैण्ड, वहाँ के बहुसंख्यक समझते हैं कि उन्हें भी उसी तरह राष्ट्र का दर्जा मिलना चाहिए। थोड़ी-सी अलग अभिव्यक्ति देते हुए, स्वायत्तता या स्वतंत्रता की आकांक्षा करना पर्याप्त है। यद्यपि ऊपरी तौर से राजशासन-व्यवस्था से साम्य रखते हुए आधुनिक राष्ट्र-राज्य काफी पुराने हैं, दस शताब्दी वर्ष पूर्व पीछे जाते हुए, विश्व के कुछ हिस्सों में, जैसे कि चीन, भारत और भूमध्यसागरीय प्रवाह में इन बहुत पुराने संगठनों की साधारण राज्यक्षेत्र के रूप में उत्पत्ति थी, जिसको एक सभ्यसमाज नियंत्रण करने में समर्थ था। पहले प्रकार की यह राज-शासन व्यवस्था इसी से विकसित हुई अथवा आधुनिक राष्ट्र-राज्य द्वारा पुनः धीरे-धीरे से स्थापित हुई और उसके निशान बड़ी मजबूती से आधुनिक समय में टिके रहे। ऐस्ट्रो-हंगेरियन, रसियन और ओटोमन साम्राज्य स्पष्ट रूप से राजवंशीय शासन थे, जो कि 1917-1918 तक विद्यमान रहे। इनके जनसमुदाय की कोई सामान्य राष्ट्रीय पहचान नहीं थी और सोवियत संघ, जो कि वास्तविक रूप से रूसी साम्राज्य की अनेक परम्पराओं को 1991 तक लेकर चला, संवैधानिक रूप से कई राष्ट्रों का एक राज्य था। यहाँ तक कि, आज कई ऐसे उदाहरण संभव हैं जहाँ राष्ट्र-राज्य और राज्य आसानी से मेल नहीं खाते। जबकि, वास्तविक रूप से सभी राष्ट्र राज्यों की सरकारें अपनी शासन-व्यवस्था को राष्ट्र के रूप में बतलाती हैं। कई राज्यों द्वारा नियंत्रित जनसमुदाय, जो कि राष्ट्रीय अस्मिता को स्वीकार नहीं करते हैं, को वहाँ के राज्य घोषित करते हैं। ब्रिटेन में, कई स्कॉट्स और वैल्स महसूस करते हैं कि वो एक स्कॉट्स या वैल्स हैं ना कि ब्रिटिश-राज्य या वो दोनों स्कॉटिश-ब्रिटिश या वैल्स-ब्रिटिश राष्ट्रीयता हैं। अरब देशों में कई यह महसूस करते हैं कि वह एक अरब राष्ट्र हैं न कि एक राष्ट्र, जो कि कई अरब राज्यों द्वारा परिभाषित होते हैं और जो इराक से मोरक्को और दक्षिण यमन तक फैले हैं। कई लोगों के लिए, एक मानव-जाति (राष्ट्र-रहित) की पहचान ही इतनी प्रबल है कि बदले में (राज्य निर्धारित) राष्ट्रीय पहचान कमजोर पड़ जाती है और आखिरकार वह महत्वहीन हो जाती है। यहाँ हम पहले अमेरिकन या अफ्रीकन मानव-जाति समूह (जन-जातियों) के कई सदस्यों के उदाहरण दे सकते हैं।

यद्यपि राष्ट्र-राज्य और राष्ट्र दोनों समरूप नहीं हैं, निस्संदेह, दोनों सूक्ष्मता से जुड़े हुए हैं। एन्थोनी स्मिथ (देखें विशेषकर स्मिथ 1991) राष्ट्रों को उनमें विभाजित करते हैं जो कि मानव जाति समूहों में मुख्यतः विकसित हैं, जो अपनी मानव-जाति पहचान को रूपान्तरित और विस्तारित करते हुए खुद को विस्तृत जन-समुदाय तक फैलाते हैं और उनमें जो कि विशिष्ट विकसित राज्य हैं जहाँ राज्य में ही राष्ट्रीय पहचान की एक सामान्य समझ उदित हो चली है जो पूर्ववर्ती नानाविध जनसमुदाय को सम्मिलित करते हैं। (538 शब्द)

Ans. राष्ट्र एवं राष्ट्र-राज्य के मध्य अंतराल विद्यमान है। राष्ट्र-राज्य एक संप्रभु राजनीतिक संगठन है जिसे यू.एन. में भी सीट प्राप्त होती है। इसे अंग्रेजी भाषा में सामान्यतः देश (कंट्री) कहा जाता है। इन्हें सरल भाषा में राज्य कहा जा सकता है; हालांकि, यह

कुछ अस्थिर प्रकार की संप्रभुता प्राप्त राष्ट्र-राज्यों के संदर्भ में भ्रम की स्थिति उत्पन्न करता है। इसे यू.एन. के उद्धरण से समझा जा सकता है। यह संगठन छोटे राष्ट्र-राज्यों के व्यवहार को तो प्रभावित करते हैं, साथ ही यह राष्ट्रों की किंचित संप्रभुता को भी अधिग्रहित करता है।

राष्ट्र-राज्य का आशय एक परिभाषित सत्ता से है। पूर्व सोवियत यूनियन के गणराज्यों के बहुसंख्यक जनसमुदाय; जैसे जॉर्जीयंस, लूथियानन्स और उक्रेनियन्स स्वतंत्रता-पूर्व राष्ट्र कहे जा सकते थे। सतही तौर पर कुछ स्वायत्तता प्राप्त करके ये राष्ट्र-राज्य की श्रेणी में आ सकते हैं। राजशासन से साम्य रखते हुए आधुनिक राष्ट्र-राज्य काफी पुराने हैं। लगभग 10 शताब्दी वर्ष पूर्व चीन तथा भारत साधारण राज्य क्षेत्र के रूप में उत्पन्न हुए जिस पर सभ्य समाज के नियंत्रण से आद्य राष्ट्र-राज्य निर्मित हुए। रशियन और ऑटोमन साम्राज्य को किसी राष्ट्र की सीमा में नहीं बांधा जा सकता था। ऐसे ही रूसी गणराज्य विभिन्न राष्ट्रों का समूह कहा जा सकता है, ये आधुनिक समय तक टिके रहे थे।

आज भी हम ऐसे उदाहरण पाते हैं जहाँ राष्ट्र-राज्य को राज्य के रूप में अभिव्यक्त करना कठिन है। जैसे ब्रिटेन में वेल्स तथा स्कॉटलैण्ड की अलग राष्ट्रीयता है, इसी प्रकार अरब क्षेत्र के कई राज्य मिलकर राष्ट्रीयता का प्रदर्शन कर सकते हैं। उक्त में राष्ट्र की राज्य से पृथकता प्रकट होती है। इससे अलग कई बार जातीय पहचान भी राज्य एवं राष्ट्र-राज्य की धुरी से पृथक् प्रतीत होती है। इस संदर्भ में अमेरिका में अफ्रीकी मूल के लोग प्रमुखता से देखे जा सकते हैं।

Q4. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए– (20)

Raman completed school when he was just eleven years old and spent two years studying in his father's college. When he was only thirteen years old, he went to Madras (which is now Chennai), to join the B.A. course at Presidency College. Besides being young for his class, Raman was also quite unimpressive in appearance and recalls, '..... in the first English class that I attended, Professor E.H. Elliot addressing me, asked if I really belonged to the junior B.A. class, and I had to answer him in the affirmative'. He, however, stunned all the sceptics when he stood first in the B.A. examinations.

Seeing what a brilliant student he was, his teachers asked him to prepare for the Indian Civil Services (ICS) examination. It was a very prestigious examination and very rarely did non-Britishers get through it. Yet Raman had impressed his teachers so much that they urged him to take it up at such an early age. In spite of their student's brilliance, the plan was not to work. Raman had to undergo a medical examination before he could qualify to take the ICS test and the Civil Surgeon of Madras declared him medically unfit to travel to England! This was the only examination that Raman failed, and he would later remark in his characteristic style about the man who

disqualified him, 'I shall ever be grateful to this man,' but at that time, he simply put the attempt behind him and went on to study Physics.

Ans. रमन ने स्कूल तब पूरा किया जब वह सिर्फ ग्यारह साल के थे और अपने पिता के कॉलेज में पढ़ाई करते हुए दो वर्ष बिताए थे। जब वे केवल तेरह वर्ष के थे, तब वे प्रेसीडेंसी कॉलेज में बी.ए. कोर्स में दाखिला लेने मद्रास (अब चेन्नई) चले गए। अपनी कक्षा में कम आयु के होने के अलावा, रमन दिखने में भी विल्कुल ही अप्रभावी थे और याद करते हैं, ''..... अंग्रेजी की पहली कक्षा में मैंने भाग लिया था, प्रोफेसर ई. एच. इलियट ने मुझे संबोधित करते हुए पूछा कि क्या मैं वास्तव में जूनियर बी. ए. कक्षा से हूँ, और मुझे हाँ में जवाब देना पड़ा। हालांकि उन्होंने बी.ए. की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करके सभी संशयवादिये को भौचक्का कर दिया था।

यह देखकर कि वे कितना प्रतिभावान छात्र थे, उनके शिक्षकों ने उन्हें भारतीय सिविल सेवा परिक्षा की तैयारी करने को कहा। यह बहुत ही प्रतिष्ठित परीक्षा थी और बहुत कम ही गैर-ब्रिटिश इसमें सफल हो पाते थे। फिर भी रमन ने अपने शिक्षकों को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने उन्हें इतनी कम उम्र में इसमें शामिल होने का आग्रह किया। अपने छात्र के प्रतिभावान होने के बावजूद, योजना सफल नहीं हो पायी। रमन के आई.सी.एस. परीक्षा के योग्य होने से पहले मेडिकल परीक्षण से गुजरना पड़ा और मद्रास के सिविल सर्जन ने उन्हें इंग्लैण्ड जाने के लिए चिकित्सकीय रूप से अयोग्य घोषित कर दिया। यही, एकमात्र परीक्षा थी जिसमें रमन असफल रहे, जिस व्यक्ति ने उन्हें अयोग्य ठहराया था, उसके बारे में अपनी विशिष्ट शैली में बाद में टिप्पणी करते थे कि 'मैं सदैव इस व्यक्ति का आभारी रहूँगा', परन्तु उस समय उन्होंने इस प्रयास को पीछे छोड़ दिया और भौतिकी का अध्ययन जारी रखा।

Q5. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिएः (20)

पैसे को किसी ऐसी चीज से परिभाषित किया जा सकता है जो खरीदारी के किसी साधन के रूप में शीघ्रता से एक हाथ से दूसरे हाथ चलती है। इसके इस्तेमाल ने वस्तु-विनिमय या किसी अन्य प्रकार के भुगतान को बदलकर रख दिया, जिसकी प्रक्रिया देनदार हेतु काफी असुविधाजनक होती थी। क्योंकि जिस वस्तु को बदला जा रहा होता था, उसकी कीमत का उस वस्तु से मूल्य निर्धारण करना काफी कठिन होता था। और फिर दोनों पक्षों को–एक विनिमयकर्त्ता के रूप में–इस बात के लिए राजी होना पड़ता था कि दूसरा पक्ष अदला-बदली के रूप में आगे बढ़कर जो दे रहा है, उसे वह स्वीकार करे। पैसे ने विशिष्टीकरण और श्रम-विभाजन में सहायता प्रदान की, जो कि उत्पादन का बड़े पैमाने पर आधार है। पैसा कोई भी पदार्थ या कानूनी रूप से स्थापित कोई चीज या प्रथा हो सकती है लेकिन उसका एक अनिवार्य अभिलक्षण यह है कि उसे शीघ्रता से और व्यापक रूप से स्वीकृत होना चाहिए। आदिम समुदायों में कुछ चीजें, जैसे कि मवेशी, सीपियाँ, चावल और चाय का प्रयोग होता था किंतु आधुनिक सभ्य-राष्ट्र धातु या कागज को स्थिर रूप से काम में लाते हैं। सिक्के या नोट्स के रूप में, ये अधिकतर उन विशेषताओं से सम्पन्न होते हैं जो कि एक पैसा-सामग्री में

वाछंनीय है, यथा- सुवाह्यता, स्थिरता, लक्षण में एकरूपता और स्वीकार्यता। धातुएँ मुख्यतः सोना, चाँदी, ताँबा और निकल के रूप में प्रयुक्त होती हैं। नोट्स कई भिन्न प्रणालियों में जारी किए जाते हैं। मानक पैसे और सांकेतिक पैसे में एक महत्त्वपूर्ण भिन्नता है। पहला एक निर्धारित (मानक) मूल्य से संघटित है जिससे किसी वस्तु के साथ अन्य चीजों की तुलना, उसके मूल्य को मापने हेतु की जाती है। मानक पैसे का मूल्य उसमें विद्यमान सामग्री पर निर्भर करता है, जबकि सांकेतिक पैसे का, जैसे नोट्स के संदर्भ में मूल्य कानून या प्रथा द्वारा निर्धारित होता है, उसके आन्तरिक मूल्य की परवाह किए बिना।

Ans. Money can be defined as a thing that quickly moves from one hand to another as a means of shopping. Its use changed the commodity exchange or any other type of payments, the process of which was quite inconvenient for the debtor. Because it was very difficult to determine the value of that item which was being replaced. And then both sides — as an exchange agent — had to agree to accept what the other party was going to offer for the exchange. The money helped in specialization and division of labour, which is a large-scale basis of production. Money can be any substance or a legally established thing or practice, but one of its essential characteristics is that it must be accepted quickly and widely. Some things, such as cattle, mussels, rice, and tea were used in primitive communities but modern civilized nations use metal or paper in a stable way. In the form of coins or notes, these mostly have features which are desirable in a money-material, such as portability, stability, uniformity in character and acceptability. The metals are mainly used as gold, silver, copper and nickel. Notes are issued in many different systems. There is a significant difference between standard money and symbolic money. The first is composed of a fixed (standard) price that is used to compare an object with others to measure its value. The value of standard money depends on the material present therein, whereas the value of symbolic money, such as in the context of notes, is determined by law or practice, regardless of its intrinsic value.

Q6. (a) निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए: (2×5 = 10)

(i) एक और एक ग्यारह होना

(ii) अन्धे की लाठी होना

(iii) ऊँची दुकान फीका पकवान

(iv) अँगूठा दिखाना

(v) नौ दो ग्यारह होना

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिये: (2×5 = 10)

(i) पेड़ पर अनेकों चिड़ियाँ बैठे हैं।

(ii) तुम ताजी भैंस का दूध लेकर आओ।

(iii) मेरे पड़ोस में एक बड़ी सुन्दर लड़की रहता है।

(iv) कल सड़क पर एक भयानक दुर्घटना हुआ।

(v) तुम्हारे को मेरे घर आने का निमंत्रण-पत्र मिला?

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए:

(2×5 = 10)

(i) सूर्य **(ii)** प्रेम

(iii) अंधकार **(iv)** परमात्मा

(v) नेत्र

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह वाक्य में प्रयुक्त करें कि उनका अर्थ स्पष्ट होते हुए उनके बीच का अंतर भी शब्दार्थ में लिखित रूप में वर्णित हो:

(2×5 = 10)

(i) मद – मत **(ii)** अक्षर – अक्षत

(iii) प्रतिज्ञा – प्रतीक्षा **(iv)** अनल – अनिल

(v) प्रमाण – प्रणाम

Ans. (a) (i) एक और एक ग्यारह होना

अर्थ: एकता में बल होना

वाक्य प्रयोग: सभी गाँव वालों ने मिलकर शहर तक की सड़क तैयार कर दी, इसे कहते हैं एक और एक ग्यारह होना।

(ii) अंधे की लाठी होना

अर्थ: एक मात्र सहारा होना

वाक्य प्रयोग: वृद्ध माता-पिता के लिए उनकी संतान अंधे की लाठी होती है।

(iii) ऊँची दुकान और फीका पकवान

अर्थ: दिखावे की तुलना में कम गुण होना

वाक्य प्रयोग: मैं आगरा शहर के प्रसिद्ध होटल में गया वहाँ जा कर लगा मानो ऊँची दुकान फीका पकवान।

(iv) अँगूठा दिखाना

अर्थ: मना कर देना

वाक्य प्रयोग: कुछ लोग मित्र होने का स्वांग तो करते हैं पर आवश्यकता पड़ने पर अँगूठा दिखा देते हैं।

(v) नौ दो ग्यारह होना

अर्थ: भाग जाना

वाक्य प्रयोग: भीड़ को नजदीक आते देख चोर नौ दो ग्यारह हो गए।

(b) (i) पेड़ पर अनेकों चिड़ियाँ बैठे हैं।

शुद्ध रूपः पेड़ पर अनेक चिड़ियाँ बैठी हैं।

(ii) तुम ताजी भैंस का दूध लेकर आओ।

शुद्ध रूपः तुम भैंस का ताजा दूध लेकर आओ।

(iii) मेरे पड़ोस में एक बड़ी सुन्दर लड़की रहता है।

शुद्ध रूपः मेरे पड़ोस में एक बहुत सुन्दर लड़की रहती है।

(iv) कल सड़क पर एक भयानक दुर्घटना हुआ।

शुद्ध रूपः कल सड़क पर एक भयानक दुर्घटना हुई।

(v) तुम्हारे को मेरे घर आने का निमंत्रण-पत्र मिला?

शुद्ध रूपः क्या तुम्हें मेरे घर आने का निमंत्रण-पत्र मिला?

(c) (i) सूर्य : भास्कर, दिवाकर

(ii) प्रेम : स्नेह, अनुराग

(iii) अंधकार : अंधेरा, तमस

(iv) परमात्मा : ईश्वर, जगदीश

(v) नेत्र : चक्षु, लोचन

(d) (i) मद-मत

वाक्य प्रयोगः किसी भी मद (क्षेत्र) में किया गया व्यय इस मत (मान्यता) पर आधारित होना चाहिए कि व्यय का सर्वोत्तम निष्पादन हो।

(ii) अक्षर-अक्षत

वाक्य प्रयोगः अक्षर (वर्ण) के समूह को अक्षत (समूचा) रूप में शब्द कहा जाता है।

(iii) प्रतिज्ञा-प्रतीक्षा

वाक्य प्रयोगः प्रतिज्ञा (प्रण) को पूरा करने के लिए भी उचित समय की प्रतीक्षा (इंतजार) करनी चाहिए।

(iv) अनल-अनिल

वाक्य प्रयोगः अनल (आग) का प्रसार कम करने के लिए अनिल (पवन) सदैव सहायक नहीं होता है।

(v) प्रमाण-प्रणाम

वाक्य प्रयोगः प्रत्यक्ष को प्रमाण (साक्ष्य) की आवश्यकता नहीं होती है, असत्य को दूर से प्रणाम (नमस्कार) कर लेना चाहिए।

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2014 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र

Time allowed : Three hours *Maximum Marks : 300*

प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश:

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित हैं।
- उत्तर हिन्दी में ही लिखे जाएँगे, यदि किसी प्रश्न-विशेष में अन्यथा निर्दिष्ट न हो।
- जिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्धारित है, वहाँ इसका अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर, निर्धारित शब्द-संख्या की तुलना में काफी लंबा या छोटा है तो अंकों की कटौती की जा सकती है।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो खाली छोड़ा गया हो, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

Q1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए: (1×100 = 100)

(a) राजनीति में स्त्रियों की भूमिका

(b) क्या भारत को चीनी अर्थव्यवस्था की वृद्धि से डरना चाहिए?

(c) भारतीय समाज में तलाक की स्वीकृति में वृद्धि

(d) क्या कठोर कानून नैतिकता के पालन के लिए बाध्यकारी हो सकते हैं?

Ans. (a) राजनीति में स्त्रियों की भूमिका

"जनता का जनता के द्वारा जनता के लिए शासन", अब्राहम लिंकन द्वारा लोकतंत्र की इस परिभाषा में यह इंगित किया गया है कि जनता ही शासन का आधार होती है, लेकिन राजनीतिक परिदृश्य को देखा जाए तो प्रतीत होता है कि जनता का अर्थ सिर्फ पुरुष ही है क्योंकि राजनीति में महिलाओं को वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका है जो आधी आबादी होने के नाते होना चाहिए था और विधायिका में उनकी भागीदारी अभी भी उपेक्षित है।

चूँकि जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि ही जनता के लिए कानूनों का निर्माण करते हैं, जिसके माध्यम से जनता के हितों की रक्षा और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके, लेकिन यदि विधायिका में पुरुष सदस्यों का वर्चस्व होगा तो यह अपेक्षा कम ही होगी कि महिलाओं की आवश्यकताओं के अनुरूप कानूनों का निर्माण किया जाए क्योंकि कई ऐसे संवेदनशील मुद्दे होते हैं, जिन्हें पुरुष उतना

महत्त्वपूर्ण नहीं मानते जितना कि महिलाएं। अमेरिका जैसे विकसित देश, जोकि विश्व का सबसे पुराना लोकतंत्र है, में भी विधायिका में महिलाओं के प्रतिनिधित्व की स्थिति चिंताजनक है। संयुक्त राज्य अमेरिका के निम्न सदन में महिलाओं की संख्या मात्र 19.3% जबकि उच्च सदन में 23% है। वहीं अगर दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र यानी भारत की बात की जाए तो यहां वर्तमान 17वीं लोकसभा में महिलाओं की संख्या 78 यानी महज 14.36% ही है। यहां तक कि देश में सबसे अधिक जनसंख्या वाले राज्य उत्तर प्रदेश से केवल 11 महिला प्रतिनिधि ही इस बार लोकसभा में पहुंच सकीं। वैश्विक तौर पर भी विधायिकाओं में महिलाओं का प्रतिशत मात्र 28 है जबकि बतौर मंत्री सरकार में इनकी भूमिका केवल 21% ही है। महिलाओं का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व तो कम है ही, साथ ही अप्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व अर्थात् मतदाता के रूप में भी बहुत कम है, केवल 48.13% महिलाएं ही मतदान करती हैं। मतदान करने वाली इन महिलाओं में भी अधिकतर ऐसी होती हैं जो अपने परिवार में पुरुष सदस्यों का या तो अनुसरण करती हैं या दबाववश उनके कहने पर किसी भी उम्मीदवार को वोट दे देती हैं।

प्रतिनिधित्व बढ़ाने के उपाय

राजनीति में महिलाओं की भूमिका में वृद्धि के लिए आवश्यक है कि विधायिका में महिलाओं के लिए स्थान आरक्षित किए जाएं। उदाहरण के तौर पर रवांडा जिसने वर्ष 2003 ई. में संविधान संशोधन करके संसद में 30% स्थान महिलाओं के लिए आरक्षित कर दिए, जिसका परिणाम यह हुआ कि वर्तमान में रवांडा में 61.3% संसद सदस्य महिलाएं ही हैं। भारत में महिलाओं के लिए पंचायतों में तो एक-तिहाई और कुछ राज्यों जैसे मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड आदि में 50% आरक्षण का प्रावधान है, लेकिन अभी भी ग्राम पंचायतों में सरपंच के रूप में चुनी गई अधिकतर महिलाएं सिर्फ मुखौटा होती हैं जबकि वास्तविक शक्ति उनके परिवार के किसी पुरुष सदस्य के पास होती है। संसद और राज्य विधान सभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है।

हालांकि इसके लिए वर्ष 2008 ई. में महिला आरक्षण विधेयक भी प्रस्तुत किया गया था, जिसका मकसद महिलाओं के लिए एक-तिहाई स्थान आरक्षित करना था, लेकिन यह विधेयक अभी भी स्टैंडिंग कमेटी के समक्ष लंबित है। यदि संसद में महिलाओं का बहुमत होता तो महिला अधिकारों से संबंधित मामलों जैसे सबरीमाला और हाजी अली दरगाह में प्रवेश को लेकर शीघ्र और प्रभावी कानूनों का निर्माण हो गया होता।

अत: किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह आवश्यक है कि उसके प्रत्येक नागरिक चाहे वह पुरूष हों या महिला, नीति निर्माण में प्रतिनिधिरु अवश्य होना चाहिए। इस दिशा में रवांडा द्वारा किया गया संविधान संशोधन सराहनीय है और

भारत को भी महिला आरक्षण विधेयक तुरंत पारित करने की आवश्कता है। साथ ही जागरूकता के माध्यम से महिलाओं को अधिक से अधिक मतदान के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

(b) क्या भारत को चीनी अर्थव्यवस्था की वृद्धि से डरना चाहिए?

वर्तमान दशक में चीन तेजी से आर्थिक वृद्धि कर रहा है और सांकेतिक जीडीपी के आधार पर चीन 14.14 ट्रिलियन डॉलर के साथ विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। वहीं भारत इसी आधार पर 2.94 ट्रिलियन डॉलर के साथ पांचवें स्थान पर है। बढ़ती आर्थिक वृद्धि के साथ चीन की रक्षा रणनीति और विदेश नीति में आक्रामकता आई है।

चीन की भारत के प्रति हमेशा आक्रामक नीति रही है। चीन समय-समय पर भारत के साथ सीमा विवाद को उकसाने का प्रयास करता रहा है, चाहे वह अक्साई चीन हो या डोकलाम। चूँकि चीन की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है, इसी के चलते उसने बीते दशक में अपने सैन्य बजट में अत्यधिक वृद्धि की है। विश्व के कुल सैन्य बजट में चीन अपनी जीडीपी का 4% सैन्य बजट पर खर्च करता है जबकि भारत केवल 1.5% ही खर्च करता है। चीन की नीति विस्तारवादी रही है और चीन कई पड़ोसी देशों में अपने सैन्य अड्डे स्थापित कर लिए हैं जो भारत की सुरक्षा के लिहाज से अत्यधिक चिंता का विषय है। चीन रणनीतिक रूप से हिंद महासागर में भारत को घेरने की कोशिश कर रहा है, जिसे 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल' रणनीति कहा जाता है, जिसके तहत चीन ने भारत के पड़ोसी देशों; जैसे बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका, मालदीव तथा पाकिस्तान में अत्यधिक निवेश करके इन देशों को कर्ज तले दबा दिया है और ये देश चीन का कर्ज चुकाने में असमर्थ हैं। कालांतर में चीन इसके बदले इन देशों में लंबे समय के लिए महत्त्वपूर्ण रणनीतिक स्थान लीज पर ले लेता है जो भारत की सुरक्षा के लिहाज से चिंता का विषय है। चीन अपनी अर्थव्यवस्था के दम पर ही कई देशों को कश्मीर मुद्दे पर भारत के विरुद्ध लामबंद करने का प्रयास कर पाकिस्तान का समर्थन करता रहा है।

भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगभग 87 बिलियन अमेरिकी डॉलर है, लेकिन इस व्यापार में भारत से होने वाले निर्यात की मात्रा बहुत कम है अर्थात् भारत को लगभग 60% व्यापार घाटा सहन करना पड़ता है। चीन की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था का कारण चीन में उत्पादन में तीव्र वृद्धि है, जिसके कारण चीन कई बार भारत में अपने विनिर्मित सामान को सस्ते दामों में निर्यात करता है, जिसे डंपिंग कहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय निर्माता सस्ते चीनी माल के साथ प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ होते हैं और भारतीय उद्योगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे भारत में बेरोजगारी की दर में वृद्धि होने की आशंका होती है।

हालांकि भारत की आर्थिक वृद्धि चीन से कम है, चीन की आर्थिक वृद्धि से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है, अपितु भारत को अपनी व्यापार नीति में परिवर्तन करते हुए अन्य द्विपक्षीय व्यापार भागीदारों को शामिल करना होगा, जिससे भारत की चीन के ऊपर निर्भरता कम हो और सस्ता चीनी माल भारतीय बाजार को विरूपित न कर सके। वहीं भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंध और मजबूत करने होंगे ताकि इन देशों में चीन का प्रभुत्व कम हो सके। साथ ही इन देशों को भारत द्वारा चीन से सस्ती दरों पर ऋण की पेशकश करनी चाहिए ताकि ये देश चीन के ऊपर एक तरफा आत्मनिर्भर न हों। वहीं सुरक्षा की दृष्टि से भारत को अपना सैन्य बजट बढ़ाने की आवश्यकता है, ताकि भविष्य में चीन द्वारा प्रस्तुत खतरों का सामना करने में हमारे सैन्य बल सक्षम हों।

(c) भारतीय समाज में तलाक की स्वीकृति में वृद्धि

भारतीय संस्कृति के अनुसार विवाह एक ऐसा बंधन है जिनमें पति और पत्नी सात जन्मों तक साथ निभाने और सुख-दु:ख साझा करने का एक दूसरे को वचन देते हैं। लेकिन, जब कभी पारिवारिक जीवन में असामंजस्य की स्थिति होती है तो कानून दोनों को यह अधिकार देता है कि वह तलाक लेकर अपना अलग स्वतंत्र जीवन जीयें। पति-पत्नी के बीच संबंध बहुत खराब हो जाए और उनके सुधरने की कोई गुंजाइश न हो तो तलाक का उपयोग अंतिम विकल्प के रूप में किया जाता है, लेकिन वर्तमान समय में देखा जा रहा है कि इस प्रवृत्ति में लगातार वृद्धि हो रही है।

वस्तुत: वैश्विक रूप से भारत में तलाक की दर सबसे कम 1% है, लेकिन इसमें वृद्धि अवश्य हुई है। चूँकि भारत में अधिकतर विवाह परिवारों के द्वारा तय किए जाते हैं, इसी वजह से भारत में तलाक लेना और अन्य देशों की तुलना में आसान नहीं है, वर्तमान समय में तलाक में वृद्धि के निम्निलिखित कारण हो सकते हैं-

- आजकल लोगों की मानसिकता में बदलाव आ रहा है और लोग किसी संबंध को जबरदस्ती ढोने के स्थान पर तलाक लेकर स्वतंत्र होना अधिक पसंद करते हैं। साथ ही तलाक को अब जीवन समाप्त होने के स्थान पर नए जीवन की शुरुआत की तरह देखा जाता है।
- वर्तमान में भारत में महिलाएं भी आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं और उन्हें पति के ऊपर आश्रित नहीं होना पड़ता, जिसके कारण वे स्वयं की देखभाल करने में पूर्ण रूप से सक्षम होती हैं, इसलिए यदि पुरुष अपनी पत्नी के साथ हिंसा या उसे दहेज के लिए प्रताड़ित करता है तो महिलाएं तलाक ले सकती हैं।
- कानून में यह स्पष्ट किया गया है कि यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी को तलाक देता है तो उसे महिला को गुजारा भत्ता देना आवश्यक होगा, इसी वजह से तलाक के बाद की आर्थिक चिंता समाप्त हो जाती है और महिलाएं आसानी से तलाक ले सकती हैं।

- भारत में पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रचलन के कारण पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों में गिरावट आ रही है और आजकल कुछ महिलाएं संयुक्त परिवार में रहना पसंद नहीं करती और वह अपने पति पर अलग रहने के लिए दबाव बनाती हैं और ऐसा नहीं होने पर तलाक की स्थिति उत्पन्न हो जाती हैं।
- आजकल काम के बढ़ते बोझ के कारण समय की कमी होती जा रही है, जिसकी वजह से पति और पत्नी के बीच लगाव कम होता जा रहा है और उनका वैवाहिक जीवन प्रभावित होने के कारण तलाक जैसी स्थिति आ जाती है।
- भारत में कामकाजी लोगों का प्रतिशत पढ़ रहा है, जिसके कारण कार्यस्थल पर कई लोगों का अपने सहकर्मियों के साथ विवाहेत्तर प्रेम संबंध स्थापित हो जाता है जो तलाक का एक प्रमुख कारण है।
- कभी-कभी विवाहित महिला या पुरुष को अपने जीवन साथी से पर्याप्त शारीरिक सुख प्राप्त नहीं हो पाता है जो वर्तमान समय में तलाक लेने के लिए पर्याप्त आधार माना गया है।

गैर-जरूरी तलाक को कम करने के उपाय

- पुरुषों को मानसिकता में बदलाव करना होगा और महिलाओं को पूर्ण स्वतंत्रता और समान अधिकार प्रदान करने होंगे जिसकी वजह से उनके मन में तलाक का विचार उत्पन्न न हो।
- घरेलू हिंसा व महिला उत्पीड़न जैसे अपराधों के लिए कानून और कठोर करने तथा दोषी को शीघ्र दंडित करने की आवश्यकता है, जिससे महिला उत्पीड़न में कमी होगी और तलाक की संख्या गिरेगी।
- दंपतियों को तलाक लेने से पहले पेशेवर परामर्शदाताओं से परामर्श करना चाहिए ताकि उनका संबंध पुनः जीवित तो हो सके।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में तलाक की स्वीकृति में वृद्धि हो रही है, लेकिन इस वृद्धि के कई उचित कारण हैं, फिर भी कुछ अनुचित कारणों के समाधान के लिए उपाय किए जा सकते हैं।

(d) क्या कठोर कानून नैतिकता के पालन के लिए बाध्यकारी हो सकते हैं?

नैतिकता अनिवार्य रूप से एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसका उद्देश्य समाज का हित होता है। नैतिकता की यह मांग है कि व्यक्ति अपने निजी हितों के स्थान पर समाज के कल्याण को अधिक महत्त्व दे, परंतु नैतिकता एक ऐच्छिक कार्यविधि है जिसकी अपेक्षा तो समाज करता है, परंतु क्रियान्वयन व्यक्ति विशेष के स्वविवेक पर निर्भर होता है। इसी स्वविवेक के कारण कुछ व्यक्ति समाज में कभी-कभी अनैतिक कार्य जैसे अपराध करते हैं जिसके कारण सामाजिक व्यवस्था में व्यवधान उत्पन्न होता है। समाज में अपराध के माध्यम से अनैतिक आचरण की रोकथाम

के लिए कानून बनाकर दंड के प्रावधान किए जाते हैं ताकि सामाजिक व्यवस्था बनी रहे।

लेकिन, समाज में बढ़ते अपराध इस ओर इशारा करते हैं कि केवल कठोर कानून बनाने मात्र से ही लोगों के नैतिक आचरण में सुधार नहीं हो सकता; जैसे चोरी, बलात्कार, भ्रष्टाचार आदि अपराधों के लिए पहले से कठोर कानून लोगों के मन में भय अवश्य उत्पन्न करते हैं जिसके कारण कुछ हद तक अनैतिक आचरण में कमी अवश्य होती है, लेकिन यहां आवश्यक यह है कि समाज में नैतिक मूल्यों का विकास किया जाए जो लोगों को नैतिक आचरण करने के लिए प्रोत्साहित करें क्योंकि दंड के माध्यम से भय उत्पन्न करके लोगों को अनैतिक आचरण करने से एक सीमा तक ही रोका जा सकता है। नैतिक मूल्यों के विकास के लिए आवश्यक है कि परिवार और शिक्षा के माध्यम से बच्चों में ही इन मूल्यों का समावेश किया जाए क्योंकि इससे यह होगा कि बच्चों में अनैतिक कर्मों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति विकसित होगी जिसके कारण आगे चलकर वे अनैतिक कर्म नहीं करेंगे और जब समाज में अनैतिक कर्म नहीं होंगे तो कठोर दंड की आवश्यकता भी नहीं रह जाएगी। कठोर कानूनों के माध्यम से हम अपराध होने के बाद अपराधी को दंडित करते हैं जबकि नैतिकता के विकास और आदर्शों की स्थापना के माध्यम से अनैतिक कर्मों को होने से पहले ही रोका जा सकेगा। जैसे भ्रष्टाचार करने पर भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत दंड का प्रावधान किया गया था, लेकिन फिर भी समाज में व्यापक रूप से भ्रष्टाचार प्रचलित था। वहीं प्रशासन में भ्रष्टाचार की रोकथाम के लिए सिविल सेवा परीक्षाओं में हीं नैतिकता को एक विषय के रूप में शामिल किया गया है जिससे कि नए सिविल सेवकों के मन में भ्रष्टाचार के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति विकसित की जा सके।

दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा और महिला उत्पीड़न के लिए कानून उपस्थित होने के बावजूद भी इन अपराधों में सापेक्षक कमी नहीं लाई जा सकी। वहीं अगर समाज में जागरूकता के माध्यम से इनके प्रति लोगों की अभिव्यक्ति को परिवर्तित करने का प्रयास किया जाए तो इन प्रथाओं का आसानी से उन्मूलन किया जा सकता है। पहले बच्चियों को बोझ समझा जाता था और बालिका भ्रूण हत्या बड़ी मात्रा में होती थी। इसे रोकने के लिए सरकार ने सख्त कानून भी बनाए। लेकिन इस कुप्रथा पर कानून से ज्यादा 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', 'सेल्फी विद डॉटर', और 'मेरी बेटी मेरा अभिमान' जैसी जागरूकता पहलों का अधिक सकारात्मक प्रभाव देखा गया। भारत में सार्वजनिक स्थल पर कचरा फेंकने और थूकने पर आर्थिक दंड का प्रावधान था। इसके बावजूद भी स्वच्छता में अपेक्षित वृद्धि नहीं हो पा रही थी, लेकिन 2014 में प्रधानमंत्री द्वारा 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया गया और जनता से आह्वान किया गया कि वे स्वच्छता में भागीदार बनें, जिसका परिणाम

यह हुआ कि आज स्वच्छता अभियान देश में एक जन आंदोलन बन गया है। अत: नैतिकता के पालन के लिए कठोर कानूनों के निर्माण के साथ-साथ समाज के व्यवहार में भी परिवर्तन कर नैतिकता का विकास करना होगा।

Q2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर, उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट और शुद्ध भाषा में दीजिए: (12×5 = 60)

वैश्विक पैमाने पर लोगों की एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की प्रक्रिया शताब्दियों पहले शुरू हुई थी जब मनुष्य जाति ने समूहों में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में विभिन्न कारणों से जाना शुरू किया। ये कारण थे–चारागाहों अथवा कृषियोग्य भूमि की तलाश, निष्ठुर शासन अथवा यंत्रणा से पलायन, विचार अथवा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की चाहत अथवा मात्र घूमने की लालसा। आप्रवासी अपने सामान की तरह अपने सांस्कृतिक आधिपत्य को सँजोते हैं और मार्ग में अथवा नयी व्यवस्था में उसे प्रोन्नत करने का प्रयत्न करते हैं। मार्ग में मिलने वाली दूसरी जनजातियों से वे या तो युद्ध या व्यापार या विवाह या समान उपक्रमों के माध्यम से साहचर्य स्थापित करते हैं। शुरुआत में वाग्युद्ध का तनावपूर्ण समय रहता है, कुछ समय बाद वातावरण शान्त हो जाता है और शान्ति अपने पूरे कौशल एवं रचनात्मकता के साथ फलने-फूलने लगती है। लेन-देन संबंधों का आधार बन जाता है। किसी भी संस्कृति के आधिपत्य के बिना एक स्वतंत्र वातावरण में प्रत्येक समूह एक बहुमुखीन समाज के रूप में पनपता है। अत: सम्भव है कि मंगोलिया के लोग अलास्का चले गए हों, एंग्लो-सेक्सन ब्रिटेन में बस गए हों, शायद हज़रत मूसा ने चुने हुए लोगों का पवित्र या पूर्व-निर्धारित भूमि की तलाश में नेतृत्व किया हो। शायद कोलम्बस ने यूरोपीय देशों को वैश्विक दुस्साहस की ओर अभिमुख करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हो। तभी से उपनिवेशवाद दूसरे देशों एवं संस्कृतियों को जीतने का एक साधन बन गया और इन विजित देशों को विजेताओं के प्रभुत्व में लाने लगा। आज व्यापार और धंधा बड़े पैमाने पर लोगों के एक देश से दूसरे देश को स्थानान्तरण के शक्तिशाली कारण हैं। प्रत्येक समूह पूर्वजों का अन्तर्बोध, पुराने घर की मीठी स्मृति, एक बीते हुए समय को सँजोए रखता है। एक या दो पीढ़ी गुज़र जाने के बाद सम्मिलन पुराने सम्बन्धों-सम्पर्कों के बहुत थोड़े निशान रहने देता है। शायद अगली शताब्दी में कोई यह भविष्यवाणी करने का खतरा उठाए कि दुनिया की आबादी अपनी पुरानी क्षेत्रीय पहचान को जीवित रखने में बहुत कठिनाई अनुभव करेगी। जिस समय हम जहाँ रहते हैं, वही हमारा क्षेत्र हो जाता है। हम नए स्थान के रंग-गंध के आदी हो जाते हैं। स्थानिकता वैश्विकता में घुल-मिल जाती है। आने वाले समय में बहुत-से थोड़े लोग ही रह जाएँगे जो अपनी पुरानी अस्मिता को बचाए रख सकने में सफल होंगे। नयी व्यवस्था समूचे तंत्र को सर्वत्र नवीकृत कर देगी। पहले से ही पुरानी मान्यताओं से मुक्त पीढ़ियाँ भविष्योन्मुख हैं एवं खोई हुई

अस्मिताओं को सँजोए रखने की भावुकता से पूर्णतया मुक्त हैं। कोई भी संस्कृति या पुरुष या स्त्री पृथकतावाद में नहीं रह सकता। केन्द्र की ओर आने की प्रवृत्ति वाली और केन्द्र से हटने की प्रवृत्ति वाली शक्यिाँ थोड़े समय के लिए ही रह सकती हैं। असंख्य पीढ़ियों ने भले ही यह प्रार्थना की हो कि प्रत्येक नागरिक की वैयक्तिकता बनी रहे, अपनी आस्था में वह सुरक्षित रहे और बाहरी प्रभावों से अपने को पूर्णतया मुक्त रखे लेकिन तब भी हम भली-भाँति जानते हैं कि हम अत्यधिक संवेदनशील, क्षतिग्रस्तता के भय से आक्रान्त, छिद्रपूर्ण, अयाचित प्रतिक्रियाओं और उत्तरों के प्रति संग्रहणशील और अनाश्रित हैं और कभी तुरन्त आश्रित भी। 'जीन्स', 'डी॰ एन॰ ए॰' और 'आर॰ एन॰ ए॰' पहले से ही सुगठित हैं, प्रत्येक ज्ञान-तन्तु यह जानती है कि पहले क्या हो चुका है। शरीर और मस्तिष्क दूसरों के विचारों, कथनों और कार्यों के प्रति ग्रहणशील हैं। अनभिज्ञता भय पैदा करती है, भय घृणा उत्पन्न करता है, घृणा आत्मविश्वास को नष्ट करती है और यह सब हमें ह्रास और मृत्यु की ओर ले जाता है। अतीत में बहुत-सी प्राचीन संस्कृतियाँ इसी प्रकार के अन्त की ओर उन्मुख हुई होगी। जीवित रहने के लिए एक को दूसरे के प्रति ग्रहणशील होना ही होगा, भले ही दूसरा कितना ही दोषपूर्ण क्यों न हो।

(a) आप्रवासीजन अपनी नयी व्यवस्था में पहली बार क्षेत्रीय लोगों से किस तरह सम्पर्क स्थापित करते हैं?

(b) प्रारम्भिक काल में लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के क्या कारण थे? प्रारम्भिक काल के कारणों में और आज के लोगों द्वारा किए जाने वाले स्थानान्तरण के कारणों में क्या भिन्नता है?

(c) संस्कृतियाँ कैसे आपस में सम्मिलन करती हैं?

(d) बहुत-सी प्राचीन संस्कृतियाँ कैसे नष्ट हुईं?

(e) लेखक क्यों यह कहता है कि यह सम्भव नहीं है कि कोई संस्कृति पृथकतावाद में जीवित रह सके?

Ans. (a) आप्रवासीजन जब किसी नयी व्यवस्था में प्रवेश करते हैं तो आरंभिक अवधि में उनका स्थानीय निवासियों से तनावपूर्ण व्यवहार देखने को मिलता है। यह तनाव क्षेत्रीय एवं आप्रवासी लोगों के सांस्कृतिक संक्रमण के कारण उत्पन्न होता है। हालांकि बदलती परिस्थितियों में वे सामंजस्यपूर्ण व्यवहार करने लगते हैं।

(b) आरंभिक काल में लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के कारणों में चारागाहों तथा कृषि भूमि की तलाश, निष्ठुर शासन तथा उत्पीड़न प्रमुख होते थे। इसके विपरीत आजकल प्रवास के मुख्य कारण आजीविका एवं व्यापार-धंधों की तलाश है। ये कारण आरंभिक प्रवासन के कारणों से पृथक हैं।

(c) प्रवासित लोग जहाँ भी जाते हैं वे अपनी संस्कृति का प्रसार अनायास ही कर देते हैं। जब इनका सामना किसी अन्य सांस्कृतिक पहचान वाले लोगों से होता है तो

परस्पर संक्रमण और सहचर्य के माध्यम से उनमें एकरूपता आती जाती है। यह एकीकरण ही नवीन सांस्कृतिक पहचान को जन्म देता है।

(d) उपनिवेशवाद के काल में यूरोपीय एवं अन्य कुछ शक्तिशाली समूहों का दूरस्थ क्षेत्रों में गमन हुआ। उपनिवेशवाद धीरे-धीरे दूसरे देशों की संस्कृति को जीतने का साधन बन गया। इस संदर्भ में अमेरिकी महाद्वीप की पुरातन संस्कृतियों का उद्धरण लिया जा सकता है जो बाह्य प्रभावों से नष्ट हो गयी।

(e) लेखक मानता है कि कोई भी संस्कृति पृथकतावाद में जीवित नहीं रह सकती है। संस्कृति की प्रवृत्ति केन्द्राभिमुख या अपकेन्द्रीय होती है। दोनों की स्थितियाँ स्थायित्व का पोषण नहीं करती हैं। भले ही हम नागरिकों की वैयक्तिकता की कितनी भी चर्चाएँ कर लें यह अनायास ही है।

Q3. निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण (Precis) एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। शीर्षक देने की आवश्यकता नहीं है: (1×60 = 60)

जब हम किसी नौकरी के लिए आवेदन करते हैं एवं अपनी जीवन-वृत्त प्रस्तुत करते हैं तो सामान्यत: हम यह प्रयत्न करते हैं कि हमारा अनुभव, पृष्ठभूमि एवं विशेषताएँ सामने आ जाएँ। बहुत-से लोग अपने जीवन में आने वाली कठिनाइयों को छिपा लेते हैं एवं अपनी महान् उपलब्धियों की ओर ध्यान आकर्षित कराते हैं। जब कार्यदाता ऐसे जीवन-वृत्तों को पढ़ते हैं तो बहुधा यह अनुभव करते हैं कि प्रत्येक आवेदनकर्त्ता यह लिख रहा है कि वह उन महानतम व्यक्तियों में से एक है जो इस दुनिया में आए।

इस संदर्भ में, खेल की दुनिया से संबंधित एक सच्ची कहानी की चर्चा की जा सकती है। किसी विश्वविद्यालय की फुटबॉल टीम दौड़ने का अभ्यास कर रही थी। उस टीम का एक खिलाड़ी 'लाइनमैन' की स्थिति पर था। यह खिलाड़ी बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थिति पर था और टीम का सबसे तेज 'लाइनमैन' माना जाता था। एक दिन यह खिलाड़ी अपने प्रशिक्षक के पास गया और उससे सबसे तेज 'रनिंग बैक्स' के साथ पूरे वेग से दौड़ने की अनुमति माँगी। प्रशिक्षक ने उसे अनुमति दे दी।

'लाइनमैन' रोज़ दौड़ने लगा लेकिन प्रत्येक दिन वह सबसे पीछे रहता था। दिन-प्रतिदिन उसने सबसे तेज 'बैक्स' के साथ दौड़ना जारी रखा, लेकिन प्रत्येक दिन वह सबसे पीछे ही रहा। यह स्वाभाविक ही था क्योंकि सामान्यत: 'लाइनमैन' 'रनिंग बैक्स' के समान तेज धावक नहीं माने जाते।

प्रशिक्षक ने इस घटना को आश्चर्यजनक मानते हुए स्वयं से पूछा–"यह खिलाड़ी क्यों सर्वश्रेष्ठ धावकों के साथ दौड़ने की स्पर्धा कर रहा है और लगातार सबसे पीछे ही आ रहा है जबकि यह दूसरे 'लाइनमैनों' के साथ दौड़ते हुए सबसे तेज धावक रह सकता है?"

प्रशिक्षक ने इस युवा खिलाड़ी को परखा और अन्ततोगत्वा यह देखकर कि यह 'लाइनमैन' रोज़ सबसे पीछे ही आ रहा है, उससे पूछा–"तुम दूसरे 'लाइनमैनों' के साथ दौड़कर विजेता होने को क्यों प्राथमिकता नहीं देते? इससे क्या लाभ कि तुम 'रनिंग बैक्स' के साथ दौड़कर पराजित होते रहो?"

प्रशिक्षक फुटबॉल के इस खिलाड़ी का उत्तर सुनकर आश्चर्यचकित रह गया। इस युवा ने कहा–"मैं यहाँ 'लाइनमैन' को पराजित करने के लिए नहीं हूँ। मैं पहले से ही यह जानता हूँ कि मैं यह कर सकता हूँ। मैं यहाँ यह सीखने के लिए आया हूँ कि तीव्र से तीव्रतर कैसे दौड़ा जा सकता है। महोदय, आपने यदि ध्यान दिया हो तो आप पाएँगे कि मैं दिन-प्रतिदिन 'रनिंग बैक्स' से अपनी दूरी कम करता रहा हूँ।"

यह घटनाक्रम हमारी आध्यात्मिक प्रगति के रहस्य को समेटे हुए हैं। सांसारिक कार्यों में हम सर्वश्रेष्ठ होने या दिखने की चाहत रखते हैं लेकिन जब आध्यात्मिकता का प्रश्न आता है तो हम ईश्वर से अपनी वास्तविकता नहीं छिपा सकते। हमारी प्रगति ईश्वर के लिए खुली किताब है। आध्यात्मिक प्रगति हमारे सच्चे प्रयत्नों पर निर्भर है। हम ईश्वर से अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों एवं असफलताओं को नहीं छिपा सकते।

फुटबॉल खिलाड़ी ने यह जान लिया था कि वह पुरानी उपलब्धियों की दुनिया में रहते हुए आगे नहीं बढ़ सकता। वह जानता था कि वह स्वयं को चुनौती देकर ही प्रगति कर सकता है। एक धावक के रूप में अपनी कमज़ोरियों को पहचान कर ही वह आगे बढ़ने का प्रयत्न कर सकता है। स्वयं को अपने से बेहतर व्यक्तियों के सम्मुख रखकर ही वह उस क्षेत्र में सर्वोत्तम बन सकता है, बेहतर व्यक्तियों के सामने उसकी कमज़ोरियाँ प्रगट हो जाएँगी और वह उन्हें दूर कर सकेगा। वह स्वयं का सुधारना चाहता था, वह प्रशंसा का भूखा नहीं था।

फुटबॉल खिलाड़ी यह देख सकता था कि दूसरे 'रनर्स' क्या कर रहे हैं और उनके प्रकाश में अपनी योग्यता को वह विकसित कर सकता था। नित्य के अभ्यास से वह यह जान गया था कि अगली बार उसे और बेहतर करना है। यह करने से वह अपने ध्येय तक पहुँचने में निकट से निकटतर होता गया। जब हम अपनी असफलताओं को देखते हैं तो हम जानते हैं कि हर रोज़ हमें और बेहतर करना है। ऐसे प्रयत्नों से पहले की तुलना में हमारी असफलताएँ कम से कमतर होती जाएँगी। समय होने पर हम अन्ततोगत्वा एक ऐसी स्थिति पर पहुँच जाएँगे जब असफलताओं का प्रतिशत शून्य रह जाएगा।

हम अपनी असफलताओं को ईश्वर से नहीं छिपा सकते क्योंकि वह सब कुछ देख रहा है। ईश्वर यह चाहता है कि हम अपने सद्प्रयत्नों से अपनी असफलताओं को दूर कर सकें। जब ईश्वर यह देखता है कि कठिनाइयों के रहते हुए भी हम सद्प्रयत्नों को करने में दत्तचित्त हैं तो हमारी सच्चाई उसके सामने होती है। तब ईश्वर से हमें

अनुग्रह एवं सहानुभूति मिलती है। इस प्रकार, संघर्ष करते हुए हमें सहायता मिलती है। ईश्वर हमें हमारी असफलताओं से ऊपर उठने में शक्ति प्रदान करता है ताकि हम उन असफलताओं को दूर कर सकें एवं प्रगति-पथ पर अग्रसर हो सकें।

Ans. नौकरी का आवेदन करते समय हमारा प्रयत्न अपनी अच्छाइयों को ही इंगित करना होता है। हम अपनी कमजोरियों को छिपाकर स्वयं को सर्वोत्तम सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। इस संदर्भ में एक सत्य घटना पर आधारित कथा का उल्लेख किया जा सकता है जिसमें एक फुटबॉल लाइनमैन प्रशिक्षक की अनुमति लेकर रनिंग बैक्स के साथ स्पर्धा करता है। लाइनमैन को रनिंग बैक्स की तुलना में कम कुशल धावक माना जाता है।

बार-बार लाइनमैन द्वारा स्पर्द्धा में पिछड़ने पर प्रशिक्षक ने जिज्ञासावश उस लाइनमैन से इसका कारण जानना चाहा कि वह लाइनमैन के समूह में स्पर्द्धा करके विजेता बनने में सक्षम है तो वह रनिंग बैक्स के साथ स्पर्धा क्यों कर रहा है। लाइनमैन का उत्तर था कि वह लाइनमैन से स्पर्द्धा में बेशक विजेता रहेगा, परन्तु उसका लक्ष्य विजेता बनना नहीं है अपितु तीव्रतम् दौड़ लगाने का अभ्यास करना है और वह निरंतर रनिंग बैक्स से अपनी दूरी घटाकर ऐसा कर भी रहा है।

यह घटना हमारी आध्यात्मिक प्रगति के रहस्य को उजागर करती है। चूँकि सांसारिक कार्यों में हम दिखावा कर सकते हैं, परंतु आध्यात्मिकता के संदर्भ में हम अपनी असफलताओं को नहीं छिपा सकते हैं। इनमैन ने भावी प्रगति के लिए अपनी कमजोरियों को पहचान कर स्वयं को चुनौती देकर प्रगति का मार्ग खोजा। उसकी असफलता की मात्रा में कमी उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती थी। अंततः वह सफल दौड़ लगाने में समर्थ हो जाएगा। ईश्वर हमारे ऐसे सद्कर्म से प्रभावित होता है। चूँकि हम ईश्वर से कुछ नहीं छिपा सकते। अतः हमें उससे अनुग्रह और सहानुभूति मिलती है और ईश्वर हमें कठिन परिस्थितियों का सामना करने तथा सफल होने की शक्ति प्रदान करता है।

Q4. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए: (1×20 = 20)

Most people involved in the film production industry know that there is a constant evolution. The change is in the way movies are made, discovered, marketed, distributed, shown and seen. Following independence in 1947, the 1950s and 60s are regarded as the 'Golden Age' of Indian cinema in terms of films, stars, music and lyrics. The genre was loosely defined, the most popular being 'socials', films which addressed the social problems of citizens in the newly developing state. In the mid-1960s, camera technology revolutionized the documentary method by enabling the synchronized recording of image and sound. Today, CINEMA 4D users are free to create scenes without worrying about the size of objects or how many objects

are in the scene, shaded settings, texture size, multipass-rendering or eye-catching particle systems.

Until the 1960s, filmmaking companies, many of whom owned studios, dominated the film industry. Artistes and technicians were either their employees or were contracted on a long-term basis. Since the 1960s, however, most performers went the freelance way, resulting in the star system and huge escalations in film production costs. Financing deals in the industry also started becoming markier and, since then. According to estimates, the Indian film industry has an annual turnover of ₹ 60 billion. It employs more than 6 million people, most of whom are contract workers as opposed to regular employees. In the late 1990s, it was recognized as an industry.

More money impacted the perception, visual representation, and definitions of reality. Like any other media of mass communication, the themes are relevant to their times.

Thus, filmmaking became more expensive and riskier. As opposed to the time of the Gemini Studios, when only 5 percent of a movie was shot outdoor, filmmakers often select oversea locations in order to create greater realism, manage costs more efficiently or source people and props. Filmmakers spend considerable time scouting for the perfect location.

Ans. फिल्म निर्माण उद्योग में शामिल अधिकांश लोग जानते थे कि इसकी निरंतर प्रगति हो रही है। परिवर्तन फिल्मों के निर्माण, नयेपन, विपणन, वितरण तथा दिखाए और देखे जाने के तरीके में है। 1947 में स्वतंत्रता के बाद, 1950 और 60 के दशक को फिल्म, सितारों, संगीत और गीतों के मामले में भारतीय सिनेमा का स्वर्ण युग माना जाता है। शैली को सहज रूप में परिभाषित किया जाता था, सबसे लोकप्रिय सामाजिक होना था, नागरिकों से जुड़ी सामाजिक समस्याओं को दर्शाने वाली फिल्में विकास का एक नया चरण थीं। 1960 के दशक के मध्य में कैमरा तकनीक द्वारा चित्रों और ध्वनि के सिंक्रोनाइज़्ड रिकॉर्डिंग ने फिल्मों के प्रदर्शन के क्षेत्र में क्रांति ला दी। आज 4-क सिनेमा में उपयोगकर्ता छवि के आकार, वस्तुओं की संख्या, शेडेड सेटिंग, टेक्स्चर साईज़, मल्टीपास-रेण्डरिंग अथवा ध्यानाकर्षण वाली कण प्रणाली की चिंता किये बिना दृश्यों का निर्माण करने के लिए स्वतंत्र हैं।

1960 के दशक तक फिल्म निर्माण कंपनियाँ, जिनमें से अधिकांश स्टूडियो के मालिक थे, फिल्म उद्योग पर छा गये थे। कलाकार और तकनीकी विशेषज्ञ या तो उनके कर्मचारी थे अथवा लम्बे समय के लिए अनुबंधित थे। हालांकि 1960 के दशक के बाद अधिकांश कलाकार छोटे अनुबंधों के माध्यम से चल गये, जिसके परिणामस्वरूप स्टार सिस्टम और फिल्म निर्माण की लागत में अत्यधिक वृद्धि हुई।

तब से इंडस्ट्री में वित्तीय समझौते पतनोन्मुख होने लगे। अनुमान के अनुसार, भारतीय फिल्म उद्योग का सालाना करोबार ₹ 60 अरब तक पहुँच गया। इसने 60 लाख लोगों को रोजगार दिया है, जिनमें से अधिकांश नियमित कर्मचारी के स्थान पर संविदा कर्मचारी हैं। 1990 के दशक के उत्तरार्द्ध में इसे एक उद्योग के रूप में मान्यता मिली।

अधिक धन ने वास्तविकता की धारणा, दृश्य प्रतिनिधित्व और परिभाषाओं को प्रभावित किया। जन संचार के किसी भी अन्य माध्यम की तरह, विषय अपने समय के लिए प्रासंगिक है।

इस प्रकार, फिल्म निर्माण अधिक महंगा और जोखिम भरा हो गया। जेमिनी स्टूडियो के समय के विपरीत, जब किसी फिल्म का 5 प्रतिशत हिस्सा आउटडोर शूट किया जाता था, अब फिल्मकार अक्सर अधिक यथार्थवाद लाने के लिए समुद्रपारीय स्थलों का चयन करते हैं, लागतों का अधिक कुशलता से प्रयोग करते हैं या स्रोत क्षेत्र से ही प्रबंधित करते हैं। फिल्म निर्माता सही स्थान के लिए प्रवास पर अधिक समय बिताते हैं।

Q5. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए: (1×20 = 20)

हास्य मनुष्य की एक ऐसी योग्यता अथवा गुण है जो स्थितियों को देखकर मनोविनोद की भावना उत्पन्न कर देता है। यह हास्यवृत्ति मनोरंजन का एक घेरा है अथवा मानवीय सम्प्रेषणीयता है जो ऐसी भावनाओं को उत्पन्न करती है अथवा मनुष्यों को हँसाती है अथवा प्रसन्नता का अनुभव कराती है।

आलोचना किसी क्रियाकलाप का फ़ैसला है अथवा सुचिन्तित व्याख्या है। रचनात्मक आलोचना सम्प्रेषणीयता का एक ऐसा प्रकार है जिसमें मनुष्य दूसरे के व्यवहार को ठीक करने का प्रयत्न करता है बिना किसी अधिकार भावना के सामान्यत: यह एक कूटनीतिक प्रयत्न है। उस मनुष्य के लिए जिसके कार्य सामाजिक रूप से ठीक नहीं हैं। यह रचनात्मक है। यह अधिकार या अपमान का विरोध करती हुई शान्तिपूर्ण प्रयत्नों की ओर बढ़ती है।

व्यंग्य एक ऐसा औज़ार है जो आलोचक द्वारा प्रयुक्त किया जाता है। यह सामान्यत: मनोरंजक या वाक्शक्ति से परिपूर्ण होता है, हालाँकि व्यंग्य का प्राथमिक उद्देश्य हास्य नहीं है। यह किसी घटना की, किसी व्यक्ति-विशेष की, किसी समूह की बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से की गयी आलोचना है।

व्यंग्य एक मूल्यवान साहित्यिक विधा है। यह किसी निश्चित निशाने को रखती है। यह निशाना आदमी, आदमियों का समूह, विचार, प्रवृत्ति, संस्था या सामाजिक अभ्यास हो सकता है। किसी भी दशा में निशाने की हँसी उड़ाई जाती है।

व्यंग्य क्रोध एवं हास्य का सम्मिश्रण है। यह परेशानी पैदा कर सकता है और यह विडम्बनायुक्त होता है। इसमें विडम्बना आक्षेप के रूप में होती है। अत: बहुधा इसे

ग़लत समझ लिया जाता है।

यह एक कलात्मक विधा है जिसमें मानवीय या व्यक्ति-विशेष की असफलताओं, ग़लतबयानियों का वर्णन होता है। यह वर्णन ऐसी व्यंग्यपूर्ण भाषा में होता है जिससे अपेक्षित सुधार आ सके। साहित्य या नाटक इसके मुख्य साधन हैं लेकिन यह फिल्मों, कलारूपों या राजनैतिक कार्टूनों में भी पाया जाता है। व्यंग्यकर्त्ता एक ऐसा कलाकार है जो प्रत्येक स्थान पर कुछ-न-कुछ गड़बड़ी देखता है लेकिन उसका प्रस्तुतीकरण क्रोध के स्थान पर हास्य पैदा करता है।

Ans. Humour is a quality of a human being which creates a feeling of recreation by looking at situations. This humour tendency is a circle of recreation or human communicability that generates such feelings or makes humans laugh or make them feel happy.

Criticism is the decision of an activity or a well-established explanation. Constructive criticism is a form of communicativeness in which one tries to correct the behaviour of another without any sense of authority. Generally, it is a diplomatic effort for a person whose work is not socially correct. It is creative. It moves towards peaceful, opposing right or insult.

Satire is a tool which is used by a critic. It is generally entertaining or full of eloquence, although humour is not the primary purpose of satire. It is an intelligent criticism of an event, of an individual, of a group, of intelligence.

Satire is a valuable literary discipline. It holds a certain target. This target can be a man, a group of men, an idea, a tendency, an institution or a social practice. In any condition, the laughter of the target is blown out.

Satire is a mixture of anger and humour. This can create problems and it is sarcastic. Irony occurs in the form of convulsions. So, it is often misunderstood.

It is an artistic disciplne in which the failures of human or individual, misrepresentations are described. This description is in such a satirical language that the expected improvement may take place.

Literature or drama is its main means, but it is also found in films, forms or political cartoons. The satirist is an artist who sees something wrong in every place but his presentation creates humour rather than anger.

Q6. (a) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए: (2×5 = 10)

(i) अंगारों पर लोटना
(ii) अक्ल पर पत्थर पड़ना
(iii) गुलर का फूल होना
(iv) दाई से पेट छिपाना
(v) मक्खियाँ मारना

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए: (2×5 = 10)

(i) हम कहे थे।

(ii) युवा पीढ़ी शुद्ध हिंदी लिखने का प्रयास कर रहा है।

(iii) मैं लिख लिया हूँ।

(iv) लड़की प्रणाम करता है।

(v) पुलिस ने राम में आरोप लगाया।

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए: (2×5 = 10)

(i) इन्द्र **(ii)** अवस्था

(iii) कंचन **(iv)** गणेश

(v) जलद

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट होते हुए उनके बीच का अंतर भी शब्दार्थ में लिखित रूप में वर्णित हो: (2×5 = 10)

(i) आभास – आवास **(ii)** अभिज्ञ – अनभिज्ञ

(iii) कृपण – कृपाण **(iv)** तप्त – तृप्त

(v) नीरद – नीरज

Ans. (a) (i) अंगारों पर लोटना

अर्थ: अत्यधिक दर्द सहना

वाक्य प्रयोग: किसी भी परिस्थिति में ईर्ष्यालु व्यक्ति को मित्र की सफलता के बाद अंगारों पर लोटना पड़ता है।

(ii) अक्ल पर पत्थर पड़ना

अर्थ: बुद्धि भ्रष्ट होना

वाक्य प्रयोग: जब मनुष्य के अक्ल पर पत्थर पड़ जाते हैं तो वह सही गलत का अंतर नहीं कर पाता है।

(iii) गूलर का फूल होना

अर्थ: दुर्लभ होना

वाक्य प्रयोग: दुकानदार हताश होकर बोलता है कि कुछ ग्राहक उधार सामान लेकर गूलर के फूल हो जाते हैं।

(iv) दाई से पेट छिपाना

अर्थ: अनुभवी व्यक्ति से भेद रखना

वाक्य प्रयोग: चयनकर्त्ताओं से अपनी फिटनेस की गलत रिपोर्ट साझा करना दाई से पेट छिपाने जैसा है।

(v) मक्खियाँ मारना

अर्थः समय व्यर्थ करना

वाक्य प्रयोगः आलसी लोग प्रायः काम करने के स्थान पर मक्खियाँ मारते देखे जाते हैं।

(b) (i) हम कहे थे।

शुद्ध रूपः हमने कहा था।

(ii) युवा पीढ़ी शुद्ध हिन्दी लिखने का प्रयास कर रहा है।

शुद्ध रूपः युवा पीढ़ी शुद्ध हिन्दी लिखने का प्रयास कर रही है।

(iii) मैं लिख लिया हूँ।

शुद्ध रूपः मैंने लिख लिया है।

(iv) लड़की प्रणाम करता है।

शुद्ध रूपः लड़की प्रणाम करती है।

(v) पुलिस ने राम में आरोप लगाया।

शुद्ध रूपः पुलिस ने राम पर आरोप लगाया।

(c) (i) इन्द्र – महेन्द्र, देवराज

(ii) अवस्था – स्थिति, दशा

(iii) कंचन – सोना, स्वर्ण

(iv) गणेश – गजानन, लम्बोदर

(v) जलद – बादल, मेघ

(d) (i) आभास – आवास

वाक्य प्रयोगः जब तक हमें आभास (अहसास) होता तब तक बहुत से मवेशी अपने आवास (घर) से भाग चुके थे।

(ii) अभिज्ञ – अनभिज्ञ

वाक्य प्रयोगः अभिज्ञ (बुद्धिमान) व्यक्तियों से कुतर्क करना रमेश की अनभिज्ञता (अज्ञानता) को दर्शाता है।

(iii) कृपण – कृपाण

वाक्य प्रयोगः एक कृपण (लोभी) पुत्र ने धन की प्राप्ति के लिए अपने भाई पर कृपाण (धारदार हथियार) से हमला कर दिया।

(iv) तप्त – तृप्त

वाक्य प्रयोगः तप्त (गर्म) धातु से आहत करने पर भी संत-महात्माओं ने आध्यात्म से तृप्त (आनंद) होने का मार्ग नहीं छोड़ा।

(v) नीरद – नीरज

वाक्य प्रयोगः नीरज (कमल) के खिलने के लिए जलाशय नीरद (बादल) की घनघोर वर्षा से भर जाता है।

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2015 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र

Time allowed : Three hours *Maximum Marks : 300*

प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश:

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित हैं।
- उत्तर हिन्दी में ही लिखे जाएँगे, यदि किसी प्रश्न-विशेष में अन्यथा निर्दिष्ट न हो।
- जिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्धारित है, वहाँ इसका अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर, निर्धारित शब्द-संख्या की तुलना में काफी लंबा या छोटा है तो अंकों की कटौती की जा सकती है।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो खाली छोड़ा गया हो, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

Q1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 600 शब्दों में निबन्ध लिखिए: **(1 × 100 = 100)**

(a) युवाओं में बढ़ता तनाव

(b) असफलता सफलता पाने का अगला कदम है

(c) क्या पढ़ने की आदत में गिरावट आ रही है?

(d) समाज में अंधविश्वासों से चलता संघर्ष

Ans. (a) युवाओं में बढ़ता तनाव

मानव जीवन की भूमिका बचपन है तो वृद्धावस्था उपसंहार है और इन दोनों के बीच की अवस्था युवावस्था है। इस अवस्था में मानव जीवन सर्वाधिक ऊर्जावान होता है। इस अवस्था में ज्यादातर किसी भी किशोर या किशोरी को उचित या अनुचित का भली-भांति ज्ञान नहीं होता और ये अज्ञानता का अंधेरा ही अधिकतर युवाओं के लिए तनाव का कारण बन जाता है।

युवावस्था में न्यूरोलॉजिकल परिवर्तन होते हैं जोकि परिवार से परे उनका ध्यान आकर्षित करते हैं। अधिकतर युवा युवावस्था में अपने कॅरियर संबंधी निर्णय खुद लेने की सोचते हैं, परंतु कई बार यह देखने को मिलता है कि उनके माता-पिता समाज में दिखावे के तौर पर अपने अनुसार कॅरियर फील्ड को चुनने के लिए दबाव बनाते हैं, जिसके कारण कई बार उस क्षेत्र में रुचि न होते हुए भी अपने माता-पिता के सपनों के बोझ तले दबा युवा उस क्षेत्र में सफल नहीं हो पाता तो

वह तनाव से ग्रसित हो जाता है, यहाँ तक कि कई बार तो आत्महत्या जैसे गलत कदम भी उठा लेते हैं।

आज के समय में बेरोजगारी भी अभिशाप बनकर उभरी है। अत: यह भी तनाव का एक महत्त्वपूर्ण कारक है क्योंकि आज का युवा शिक्षा प्राप्त करके डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनकर सुख-सुविधाओं युक्त जीवन निर्वहन करना चाहता है। परंतु जब उसका उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाता तो उसका मन असंतुष्ट रहता है तथा उसको शिक्षा से प्राप्त उपलब्धियां निरर्थक लगने लगती हैं जिसके कारण युवाओं में मानसिक तनाव बड़े पैमाने पर बढ़ता जा रहा है।

ऊपर से हमारा पारिवारिक और सामाजिक ढांचा भी ऐसा है कि मानसिक अवसाद या तनाव को बीमारी नहीं माना जाता जबकि तनाव जैसी समस्या को स्वीकारना और उसका हल खोजना बेहद जरूरी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत अवसाद/तनाव जैसी समस्या से जूझने वाले अग्रणी देशों में से एक है।

आमतौर पर यह समझा जाता है कि गरीबी, शिक्षा, असफलता, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से जूझने वाले युवा ज्यादा तनाव झेलते हैं। परंतु, एक शोध के मुताबिक उत्तर भारत के मुकाबले दक्षिण भारत में तनाव से ग्रसित होकर आत्महत्या करने वाले युवाओं की संख्या अधिक है और यह बात किसी से छिपी नहीं है कि दक्षिण भारत शिक्षा का प्रतिशत और रोजगार के बेहतर विकल्प में उत्तर भारत से बहुत आगे है।

मौजूदा दौर में समाज में आगे बढ़ने और सफल होने के जो मापदंड हैं, वे सिर्फ आर्थिक सफलता को ही सफलता मानते हैं। इस दौड़ में आज के युवा परिवार एवं समाज से दूर होते जा रहें हैं। उनके जीवन में न तो रचनात्मकता बची है और न ही आपसी लगाव का कोई स्थान रहा है।

आज का युवा लंबे समय घर से दूर रहकर पढ़ाई में बिताता है, इससे वह कॅरियर के शिखर पर तो पहुंच जाता है, परंतु मन और जीवन दोनों में सूनापन लिए होता हैं। कभी-कभी अकेलापन ही उसके अवसाद का कारण बन जाता है।

कई अंतर्राष्ट्रीय सर्वे से मालूम होता है कि भारत में आत्महत्या युवाओं की मौत का दूसरा बड़ा कारण है और इस कदम को उठाने के लिए बड़ी वजह है- तनाव। साथ ही साथ तनाव की वजह से आज के युवा कम आयु में ही मधुमेह, हृदयाघात जैसी घातक बीमारी से ग्रसित हो रहे हैं।

तनाव एक जटिल समस्या है। इससे निपटने के लिए सरकार व साथ में परिवार को महत्त्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। किसी भी देश के लिए युवा महत्त्वपूर्ण मानवीय संसाधन होते हैं, अत: इनको तनाव जैसी खतरनाक समस्याओं से बचा कर रखना परिवार की, समाज की एवं राष्ट्र की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है।

(b) असफलता सफलता पाने का अगला कदम है

मानव जीवन के दो महत्त्वपूर्ण पहलू हैं- सफलता और असफलता। कभी-कभी हम अपने प्रयत्नों में असफल हो जाते हैं, परंतु असफलता ही सफलता की ओर

बढ़ाया गया पहला कदम है। इसलिए जो असफल होते हैं, उन्हें निराश नहीं होना चाहिए। जो एक बार असफल हो जाते हैं, उन्हें बार-बार प्रयास करने चाहिए। जब हम एक बार असफल होते हैं तो हमारे पास असफलता का अनुभव होता हैं, उससे हम सीखते हैं और सीखते-सीखते एक दिन सफलता को प्राप्त कर लेते हैं।

हमें अनेक महापुरुषों के जीवन के अनुभव पढ़ने को मिलते हैं जो कि काफी प्रेरणादायक होते हैं; जैसे महान वैज्ञानिक अल्वा एडिसन, बल्ब बनाने का प्रयास कर रहे थे तो वे हजारों बार असफल रहें, परंतु जब उनसे असफलता के बारे में बात की गई तो उन्होंने इसका बड़ा सकारात्मक जबाव दिया और बोले कि मुझे ऐसे 10,000 कारणों का पता चल गया है, जिससे बल्ब नहीं बन सकता। अत: वे लगातार मिल रही असफलताओं के बाद भी निरंतर प्रयास करते रहे और उन्हें एक दिन इतनी बड़ी सफलता मिली।

हमें अपनी असफलता के कारण जानने चाहिए। जीवन में सफलता कभी भी घबराकर, डरकर, भागकर, किसी दूसरे द्वारा नहीं पाई जाती, बल्कि सफलता हमेशा मजबूत इरादों, अपने साहस एवं ईश्वर पर भरोसा करके ही पाई जा सकती है, व्यक्ति को हमेशा अपने ऊपर विश्वास बनाए रखना चाहिए। विश्वास अच्छा है, बल्कि अति विश्वास बुरा होता है क्योंकि विश्वास हमें शक्ति देता है वहीं अति विश्वास मुश्किलें बढ़ा देता है। कुछ लोग डर की वजह से भी असफल होते हैं क्योंकि डर सफलता को मनुष्य से और भी दूर कर देता है। असफलता नाम की कोई वस्तु नहीं है बल्कि हमारी सोच है, जो हमें असफल बनाती है। अत: आप क्या सोचते हैं, यह बहुत महत्वपूर्ण है। कोई घटना महत्वपूर्ण नहीं होती, बल्कि उस घटना की व्याख्या ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। अत: अपनी व्याख्या को बदलकर असफलताओं को सफलता में बदलने की निरंतर कोशिश करते रहनी चाहिए।

आपको अगर सफल होना है तो असफलता को भी स्वीकार करना होगा। असफलता का मतलब यह नहीं कि मैंने समय गंवाया, बल्कि इसका अर्थ है–मुझे पुन: प्रयत्न करने का मौका मिला।

हमें यह जानना चाहिए कि जीवन में कैसे सफल होते हैं। इसके लिए हमारे पास कुछ मानसिक विशेषताएं होनी चाहिए। पहला हमें कठिन परिश्रम करना होगा, दूसरा हमारे पास साहस होना चाहिए। अधिकांश लोग असफल होने पर अपने आप को निराशावादी बना लेते हैं, हर आशा में भी उसको निराशा नजर आती है। लेकिन, जो व्यक्ति अंधेरे पथ में भी खुद दीपक बन कर अपनी राह तलाश लेते हैं, वास्तव में वह इंसान सफल और कर्मठ होते हैं। आशावादी व्यक्ति हर निराशा के अंदर कोई न कोई आशा ढूंढ़ लेते हैं, जिससे उसका दृष्टिकोण सकारात्मक होता है।

अत: हमें जीवन में मिल रही लगातार असफलताओं से यह सीखने की जरूरत है कि असफलता ही सफलता का स्तंभ है। हार एवं जीत के बीच सिर्फ एक ही मार्ग है, प्रयास और इस कहावत को सिद्ध करने के लिए हमारे इतिहास में

अनेक उदाहरण भी हैं, जो हमें मिल रही असफलताओं से निराश नहीं होने देंगे, बल्कि सफल होने के लिए प्रेरित करेंगे। इसीलिए हमारे पास जीवन में जीतने के लिए शक्तिशाली चाह होनी चाहिए। वास्तव में असफलता हमें निराश करती है, लेकिन हमें जीवन में मिली असफलता से कुछ सीख कर सफल होने की शक्तिशाली चाह भी मिलती है। कहा भी गया है "जहाँ चाह वहाँ राह।" जब भी हमारा असफलता से सामना हो तो याद रखना चाहिए कि "असफलता ही सफलता की पहली सीढ़ी है" क्योंकि सफलता और सफलता के बीच एक ही मार्ग है- प्रयास, जो हमें सफलता का मार्ग दिखाता है।

(c) क्या पढ़ने की आदत में गिरावट आ रही है?

पढ़ने की आदत किसी इंसान के मानसिक विकास में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन दुर्भाग्य से यह आदत आजकल की पीढ़ी में कम होती जा रही है। अत: इस को बचाना बहुत आवश्यक हो जाता है।

पढ़ाई को एक आदत एवं संस्कृति के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। पढ़ने का प्रभाव वीडियो देखने या कंप्यूटर गेम खेलने से पूरी तरह अलग होता है। यह एक जैसी चीज नहीं है। पढ़ने से आपके दिमाग और परखने की क्षमता का पूरा व्यायाम होता है और इस पूरी प्रक्रिया का प्रभाव मनुष्य के जीवन पर अलग ही दिखाई देता है।

आज के समय में अधिकतर पुस्तकों का स्थान इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स ने ले लिया है। ऑडियो विजुअल माध्यम ने युवाओं के बीच अपनी जगह बना ली है, साथ ही इंटरनेट का बढ़ता प्रभाव युवाओं के बीच बड़े स्तर पर अपनी पहचान बना चुका है। हालांकि यह माध्यम भी अपने आप में काफी शिक्षाप्रद हो सकते हैं। यह अपने आप में काफी शक्तिशाली भी है, लेकिन सच्चाई यह है कि ज्यादा गहराई पढ़ने में ही होती है। सिनेमा या ऐसी ही दूसरी चीजों को देखने की तुलना में पढ़ने में ज्यादा गहनता होती है। अगर लोग अधिक से अधिक पढ़ रहे होते हैं तो वे ज्यादा ध्यान केंद्रित, ज्यादा शांत और ज्यादा विचारशील होते हैं, बल्कि जीवन को ज्यादा गहराई के साथ देखते हैं क्योंकि पढ़ना एक तरह की धारणा है। परंतु, आज के समय में पुस्तकों के मुकाबले इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रति लोगों का आकर्षण ज्यादा बढ़ रहा है। यह बहुत जरूरी है कि एक समाज के तौर पर हम अपने पढ़ने की संस्कृति को खोने न दें।

अभी जीवन की सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोगों ने जीवन को ज्यादा गहराई के साथ देखने की आदत को खो दिया है क्योंकि गहराई से सोचने की आदत का ज्यादा विकास पढ़ने से होता है। आज लगभग सारी दुनिया इस बात से चिंतित है कि लोगों की पढ़ने की आदत छूटती जा रही है। एक समय था जब नई पुस्तक के बाजार में आते ही उसे कैसे भी प्राप्त करने की जिज्ञासा होती थी। घरों के ड्राइंग रूम हों या बिस्तरों के सिरहाने पर किताबें आवश्यक होती थीं, परंतु आज

डिजिटल युग में लोगों की पढ़ने-पढ़ाने की आदत को बदल दिया है। इंटरनेट या खोजी साइटों ने लोगों को शॉर्टकट की राह दिखा दी है, यही कारण है कि लोगों का ध्यान पढ़ने की तरफ कम हो गया है। पढ़ने की आदत को सर्वाधिक प्रभावित इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया ने किया है क्योंकि आज की युवा पीढ़ी को पढ़ने का ज्यादा शौक नहीं रहा है। इनका काम शॉर्टकट से चल जाता है। इसका सीधा असर प्रिंट मीडिया में भी देखा जा सकता है। आजकल पत्र-पत्रिकाएं भी तेजी से डिजिटल दुनिया में जाने लगी हैं। बदलती जीवनशैली में आज अन्य आदतों के साथ ही पढ़ने की आदत भी कहीं खोती जा रही है। इंटरेनट ने जानकारी के छोटे-छोटे कैप्सूल के माध्यम से आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराकर शॉर्टकट की आदत डाल दी है। इसका सबसे बड़ा नुकसान आज की पीढ़ी की कल्पना शक्ति का खोना है।

पढ़ने-पढ़ाने की आदत छूटने से दुनिया के कई देश और संगठन अब वर्ल्ड बुक नाइट जैसे आयोजन कर लाखों किताबें बांटने की आवश्यकता महसूस करने लगे हैं। लोगों को पढ़ने की आदत डालने के लिए जागरूक किया जा रहा है। क्योंकि वैज्ञानिक सोच है कि पढ़ने से प्राप्त जानकारी हमारे मस्तिष्क पर सीधा असर डालती है। पढ़ने से प्राप्त ज्ञान में स्थायित्व आता है तथा चिंतन मनन की क्षमता बढ़ती है। इसलिए आज की युवा पीढ़ी को पढ़ने की आदत के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है ताकि उसका मानसिक और सोचने समझने की क्षमता में विकास हो सके। इसलिए हमारे देश में पुस्तक दान पर जोर रहा है।

(d) समाज में अंधविश्वासों से चलता संघर्ष

आदिम मनुष्य अनेक क्रियाओं और घटनाओं के कारणों को नहीं जान पाता था कि इनके पीछे कोई अदृश्य शक्ति है। वर्षा, बिजली, भूकंप, विपत्ति आदि अज्ञात तथा भूत-प्रेत और पिशाच प्रकोप के परिणाम माने जाते थे। ज्ञान का प्रकाश हो जाने पर भी ऐसे विचार विलीन नहीं हुए, बल्कि आज भी विद्यमान है, जिसे अंधविश्वास माना जाता है। आज का समाज इस अंधविश्वास के चलते काफी संघर्ष कर रहा है। आज की 21वीं सदी में भी समाज में अनेक लोग अंधविश्वास में यकीन रखते हैं। ऐसे लोग अक्सर बाबाओं, साधुओं, तांत्रिकों के बहकावे में आकर अपना धन, इज्जत यहाँ तक कि कभी-कभी अपनी जान भी गंवा बैठते हैं। समाज में अधिकतर ग्रामीण क्षेत्र के लोग एवं महिलाएं अंधविश्वास का शिकार होती हैं।

अधिकतर स्त्रियाँ पुत्र, संतान पाने के लिए साधुओं के चक्कर लगाती हैं। ऐसे बाबा या साधु, भोली-भाली औरतों से मोटी रकम वसूल लेते हैं। कई बार तो उनकी इज्जत पर भी खतरा हो जाता है। आज भी हमारे समाज में अंधविश्वास के चलते अनेक लोग बिल्ली द्वारा रास्ता काटा जाना, बाईं आंख के फड़कने को अशुभ समझना, नदी में सिक्का फेंकना ऐसी अनेक धारणाएं मौजूद हैं।

हमारे समाज में हर दिन कोई ऐसी घटना सुनने को मिल रही है; जैसे अभी हाल

ही में उत्तर भारत में अनेक राज्यों में महिलाओं की चोटी काटने की खबरें आईं, कई राज्यों में तो महिलाओं को डायन बताकर पीट-पीटकर मार डाला गया, कई जगहों पर तो बच्चों की बली देने जैसी दर्दनाक घटना भी देखने को मिलती है। अंधविश्वास के अनेक कारण हो सकते हैं, जिससे कि समाज में एक बहुत बड़ा खतरा पैदा हो गया है। हर व्यक्ति जीवन में किसी न किसी समस्या से घिरा हुआ है। ऐसे में जब परेशान लोगों को कोई उपाय का लालच देता है तो लोग ऐसे लोगों के चक्कर में आ जाते हैं; जैसे किसी को नौकरी नहीं मिल रही तो किसी को संतान नहीं हो रही तो किसी को बेटे की चाहत है, किसी का बिजनेस नहीं चल रहा; इन सबके चलते अधिकतर लोग अंधविश्वास में पड़कर गलत कृत्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं। कुछ लोग धैर्य नहीं रख पाते और जल्द से जल्द समस्या का हल चाहते हैं। अंधविश्वास का शिकार अनपढ़ और पढ़े-लिखे दोनों वर्ग के लोग होते हैं।

हालांकि कई राज्यों में अंधविश्वास के चलते इसको रोकने के लिए कानून तक बनाने पड़ गए; जैसे कर्नाटक सरकार ने 2017 में एक कानून पास किया कि ऐसे तंत्र-मंत्र, जिससे कि इंसान को खतरा है, को अपराध माना जाएगा। अमानवीय प्रथा एवं काला जादू पर रोक लगाई गई। अगर अंधविश्वास के चलते किसी व्यक्ति की जान जाती है तो मौत की सजा भी दी जा सकती है। अन्य राज्यों में भी इसी तर्ज पर अनेक कानून अंधविश्वास के चलते पास किए गए हैं ताकि वहां के समाज में अंधविश्वास को बढ़ावा न मिले। यह समस्या हमारे समाज में अधिक व्यापक तौर पर फैली हुई है।

अंधविश्वास को रोकने के लिए इसी तरह से सरकार को कदम उठाने की अति आवश्यकता है, साथ ही हमें समाज में, स्कूल कॉलेजों में जागरूकता फैलानी चाहिए। हम सभी को तर्क और विज्ञान के अनुसार सोचने की आवश्यकता है। हमें सोच और साथ ही अपनी मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है। भाग्य-दुर्भाग्य विधि का विधान है। यदि दुर्भाग्य नहीं होगा तो भाग्य को पहचानना मुश्किल हो जाएगा।

अंधविश्वास से मुक्ति पाने के लिए देश के सभी नागरिकों को आगे आना होगा। हर किसी के जीवन में कोई न कोई समस्या होती है, पर इसका मतलब यह नहीं कि हम पाखंडी बाबाओं, साधुओं, तांत्रिकों के झांसे में आकर अपने अमूल्य जीवन को समाप्त कर लें।

Q2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए: (12×5 = 60)

रिपोर्ट्स बताती हैं कि भारत के कॉलेजों से आने वाले 80 प्रतिशत लोग रोजगार के अयोग्य हैं। युवा-पीढ़ी के सम्पर्क में रहने वालों में से एक, मैं किन्तु सिर्फ इन आँकड़ों

से असहमत होऊँगा। युवाओं से सम्पर्क के आधार पर मैं केवल इतना कह सकता हूँ कि उनमें करीब 90 प्रतिशत इसलिए रोजगार के अयोग्य हैं क्योंकि वे एकदम अनिश्चित व अनुत्तरदायी हैं। युवा लोग, कहीं पार्श्व में रहते हुए गलतियों की शुरुआत गलत-व्यवहार से भरे विश्वास के साथ करते हैं। वे बहुत पैसा तो बनाना चाहते हैं किन्तु बिना कुछ किए हुए ही। ऐसा नहीं है कि वे बेकार हैं, अधिकांश अच्छी अंग्रेजी बोलते हैं और अपने बारे में विश्वास से भरे हैं। वे नवीनतम रिंगटोन्स, फिल्मों और चुटकुलों के जानकार हैं लेकिन जैसे ही कोई थोड़ा आगे बढ़ता है तो वे अपनी रिक्त आँखों से मुझे घूरने लगते हैं। वे बहुत पैसा कमाना चाहते हैं, जिसके लिए मीडिया-हाइप और नियमित प्रकाशित होने वाले वेतन-सर्वों को धन्यवाद, लेकिन उनके पास वो दक्षता नहीं है जो कि उनको इस प्रकार से पैसा अर्जन करने में मदद करे। उनकी डिग्री का लिहाज करते हुए स्नातक-स्तर के विषयों के कुछ प्रश्न पूछें, उनमें से अधिकांश एकदम हकलाने-से लगते हैं। और, अतिरिक्त पढ़ाई के विषय में, कोई भी किसी निष्कर्ष को नहीं पढ़ पाता हैं। लेकिन यहाँ कुछ और प्रश्न भी हैं। सदाचार और व्यवहार के बारे में प्रश्न, आप में क्या अच्छा है, आप अपना अतिरिक्ति समय कैसे व्यतीत करते हैं, और तब ये आश्वस्त लड़के व लड़कियों के समूह मेरे को इस संशय से ग्रस्त दिखलाई पड़ते हैं–"मुझे इन प्रश्नों का क्या उत्तर देना चाहिए?" उनको यह कहना उचित नहीं है कि यह उनकी अपनी जिंदगी है और उनको अपने बारे में मुझे बतलाना चाहिए, क्योंकि वो हमेशा बने-बनाए तैयार उत्तर देना चाहते हैं, ऐसा कहना जो उनको सहायता देते हुए इससे मुक्त करें। वे कहते हैं कि– "यदि मैं यह अभ्यास पर्याप्त मात्रा में करूँ, तो मैं ऐसा जरूर सिद्ध करूँगा।" इस तरह युवा लोग रातोंरात लोलुप पाठक, गिटार-वादक, स्टार-बल्लेबाज और यहाँ तक कि अभिनेता तक हो जाते हैं। मुझे आश्चर्य है यदि कोई नासमझ भेंटकर्ता उनकी आधी-अधूरी कहानियों पर विश्वास करें।

चूँकि, भारत आगे बढ़ रहा है, हमारे पास एक ऐसी लापरवाह पीढ़ी तैयार खड़ी है, जिसका एकमात्र लक्ष्य बिना कुछ किए एक अच्छी जिंदगी जीना है। ऐसा प्रतीत होता है कि हम मुलम्मा चढ़ी ऐसी फौज निर्मित कर रहे हैं, जो बिना कुछ दर्शन, बिना वचनबद्धता या सदाचार से भरी है। अपनी चमड़ी को बचाने और कुछ उपयुक्त करने में से किसी एक का चुनाव करने को कहने पर, अधिकांश युवाओं का जवाब दरअसल में अपने को बचाने का ही होगा। ऐसा माना जाता है कि जब हम युवा होते हैं तो हमारे अंदर कुछ आदर्शवाद विद्यमान होता है, हमारे विचार कुछ समझ नहीं निर्मित कर पाते किन्तु हम किसी प्रयोजन के प्रति खड़े होने के इच्छुक तो रहते हैं। आजकल के युवाओं में किसी प्रयोजन के प्रति कोई भावावेश नहीं होता। इस पीढ़ी के अत्यंत पूर्वाभ्यास से विनिर्मित उत्तरों को सुनकर मैं समझता हूँ कि नया मंत्र पैसा है। इसके अलावा यदि कोई कुछ और महत्त्वपूर्ण बातें कहता है, तो वे पुरातन है।

(a) वे क्या वजहें हैं, जिनके कारण युवा रोजगार के अयोग्य हैं?

(b) आज का युवा लेखक से क्या चाहता है?

(c) लेखक के अनुसार वर्तमान युवा पीढ़ी का एकमात्र प्रयोजन क्या है?

(d) आज के युवा के बीच विचारणीय नया मंत्र क्या है?

(e) वर्तमान युवा पीढ़ी का आदर्शवाद के प्रति क्या नजरिया है?

Ans. (a) विश्वविद्यालय में युवाओं द्वारा केवल अनुसरण करने की प्रवृत्ति को दर्शाया जाता है। वे स्वयं अनिश्चित एवं अनुत्तरदायी बने रहते हैं। यद्यपि वे पूर्णत: अयोग्य नहीं हैं तथापि वे कुछ भी नया नहीं सोच पाते हैं। वे केवल प्रचलित रीति का निरंतर अभ्यास करके उसमें सिद्धहस्त होना चाहते हैं। संक्षेप में ये युवा रचनात्मक सोच एवं नवोन्मेष के लिए अयोग्य हैं।

(b) आज के युवा लेखक से अपेक्षा करते हैं कि लेखक उनसे केवल वही प्रश्न पूछे जिनके जवाब उन्होंने नियमित अभ्यास से सीखें हैं। युवा अपनी निजी रुचियों से जुड़े प्रश्नों के उत्तर देने से भी इस आधार पर बचते हैं कि इस प्रश्न के उत्तर का उनके पास कोई दिशा निर्देश नहीं है। निष्कर्षत: युवाओं की अपेक्षा किसी नवीन विचारणीय प्रश्न की नहीं है।

(c) लेखक आज की युवा पीढ़ी के भीतर किसी भी भावावेष अथवा नव प्रवर्त्तक प्रायोजन का अभाव पाता है। वर्तमान युवा पीढ़ी बिना कुछ अतिरिक्त किये ही अच्छी जिन्दगी जीना चाहती है। वे केवल छद्म रूप से प्रायोजनों के पक्ष में खड़े होने के इच्छुक रहते हैं।

(d) आज के युवाओं के बीच नया विचारणीय मंत्र केवल पैसा कमाना ही प्रतीत होता है। इसके लिए वे केवल पूर्वाभ्यासों एवं विनिर्मित विचारों को ही सतत् अभ्यास में लाते रहते हैं। उनके लिए पैसे कमाने के अतिरिक्त अन्य कोई उद्देश्य महत्वपूर्ण नहीं रह गया है।

(e) वर्तमान युवा पीढ़ी के मन में आदर्शवाद के प्रति अत्यंत पूर्वाग्रह से ग्रसित नजरिया दिखायी पड़ता है। वे आदर्शवादिता के प्रति अनिच्छुक दिखायी पड़ते हैं। वे आदर्शवाद को पुरातन एवं महत्त्वहीन समझते हैं। धन कमाना उनके लिए आदर्शवाद की तुलना में प्राथमिक ध्येय है।

Q3. निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण (Precis) एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। शीर्षक देने की आवश्यकता नहीं है। संक्षेपण अपनी भाषा में लिखा जाना चाहिए: (1×60 = 60)

रक्षा क्षेत्र में विदेशों पर निर्भरता कम करना और आत्मनिर्भरता प्राप्त करना सामरिक और आर्थिक दोनों कारणों से आज यह एक विकल्प के बजाय एक आवश्यकता है। सरकार ने अतीत में हमारे सशस्त्र बलों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आयुध निर्माणियों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के रूप में उत्पादन क्षमताओं का

निर्माण किया। हालाँकि, विभिन्न रक्षा उपक्रमों के उत्पादन की क्षमताओं को विकसित करने के लिए भारत में निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने पर जोर देने की आवश्यकता है। विभिन्न वस्तुओं के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए 'मेक इन इंडिया' जैसी एक महत्त्वपूर्ण पहल की गई है। अन्य वस्तुओं की अपेक्षा रक्षा उपकरणों के घरेलू उत्पादन की अधिक जरूरत है, क्योंकि इनसे न केवल बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत होगी, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा चिन्ताओं को भी दूर किया जा सकेगा।

रक्षा क्षेत्र में सरकार ही एकमात्र उपभोक्ता है। अत: 'मेक इन इंडिया' हमारी खरीद नीति द्वारा संचालित होगी। सरकार की घरेलू रक्षा उद्योग को बढ़ावा देने की नीति, रक्षा खरीद नीति में अच्छी तरह परिलक्षित होती है। जहाँ 'बाइ इंडियन' तथा 'बाइ एंड मेक इंडियन' श्रेणियों का बाई ग्लोबल से पहले स्थान आता है। आने वाले समय में आयात दुर्लभ से दुर्लभतम होता जाएगा। और जरूरी व्यवस्था के निर्माण और विकास के लिए सर्वप्रथम अवसर भारतीय उद्योग को प्राप्त होगा। भले ही भारतीय कंपनियों की वर्तमान में प्रौद्योगिकी के मामले में पर्याप्त क्षमता न हो, उन्हें विदेशी कंपनियों के साथ संयुक्त उद्यम, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की व्यवस्था और गठबंधन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

अब तक रक्षा क्षेत्र में घरेलू उद्योग के प्रवेश के लिए लाइसेंस और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रतिबंध आदि को लेकर कई बाधाएँ थीं। रक्षा विनिर्माण क्षेत्र में निवेश की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए अब कई नीतियों को उदार बनाया गया है। सबसे महत्त्वपूर्ण रक्षा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा देने के लिए एफ.डी.आई. नीति को उदार बनाया गया है। लाइसेंस नीति को भी उदार बनाया गया है और अब घटकों, हिस्से-पुर्जों, कच्चा माल, परीक्षण उपकरण, उत्पादन मशीनरी आदि को लाइसेंस के दायरे से बाहर रखा गया है। जो कंपनियाँ इस तरह की वस्तुओं का उत्पादन करना चाहती हैं, अब उन्हें लाइसेंस की जरूरत नहीं होगी।

रक्षा क्षेत्र में घरेलू और विदेशी दोनों निवेशकों के लिए एक बड़ा अवसर उपलब्ध है। एक तरफ जहाँ सरकार निर्यात, लाइसेंसिंग, एफ.डी.आई. सहित निवेश और खरीद के लिए नीति में जरूरी बदलाव कर रही है, वहीं उद्योग को भी जरूरी निवेश और प्रौद्योगिकी के मामले में उन्नयन करने की चुनौती को स्वीकार करने के लिए सामने आना चाहिए। रक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जो नवाचार से संचालित होता है और जिसमें भारी निवेश और प्रौद्योगिकी की आवश्यकता है। लिहाजा उद्योग को भी अस्थायी लाभ के बजाय लंबी अवधि के लिए सोचने की मानसिकता बनानी होगी। हमें अनुसंधान विकास तथा नवीनतम विनिर्माण क्षमताओं पर ज्यादा ध्यान देना होगा। सरकार, घरेलू उद्योग हेतु एक ऐसी पारिस्थितिकी प्रणाली विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है जिससे वह सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में बराबर के स्तर पर व्यावसायिक उन्नति कर सके।

Ans. रक्षा जैसे संवेदनशील क्षेत्र में घरेलू उत्पादन एक प्रमुख आवश्यकता है। इस संदर्भ में सार्वजनिक क्षमताओं के उपयोग के साथ-साथ निजी क्षेत्र का भी योगदान आवश्यक है। इस

दिशा में 'मेक इन इण्डिया' जैसी पहल महत्त्वपूर्ण है, इससे विदेशी मुद्रा की बचत होने के साथ-साथ राष्ट्रीय सुरक्षा की चिन्ताओं को भी दूर किया जा सकेगा। घरेलू रक्षा उद्योग विदेशी उद्यमों के साथ सह-उत्पादन एवं गठबंधनों के माध्यम से पर्याप्त क्षमता प्राप्त कर सकते हैं, हालांकि इन्हें रक्षा खरीद के मामले में घरेलू संरक्षण की आवश्यकता होगी।

रक्षा उद्योग के घरेलू प्रोत्साहन के लिए इस क्षेत्र में एफडीआई को उदार बनाने लाइसेंस नीति के सरलीकरण जैसे कदम उठाए गए हैं। इसी प्रकार रक्षा उद्योग से जुड़े कल पुर्जों तथा सहायक उत्पादों को लाइसेंस मुक्त किया गया है। भारत में रक्षा उद्योग के बड़े अवसर को देखते हुए सरकार आवश्यक कदम उठा रही है। अत: निजी क्षेत्र को भी इस क्षेत्र में बड़े निवेश तथा प्रौद्योगिकी उन्नयन की चुनौती को स्वीकार करते हुए त्वरित लाभ के स्थान पर दीर्घकालिक एवं स्थाई लाभ के लिए क्षमता निर्माण एवं नवाचार पर ध्यान देना चाहिए। सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र दोनों क्षेत्रों के परस्पर सहयोग से ही इस क्षेत्र की व्यावसायिक उन्नति हो सकती है।

Q4. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए: (1 × 20 = 20)

अरब देश का ज्यादा हिस्सा रेगिस्तान है। यहाँ चारों ओर रेत और चट्टानें हैं। रेत या बालू इतनी गर्म होती है कि दिन में नंगे पाँव आप उस पर चल नहीं सकते। रेगिस्तान में इधर-उधर पानी के चश्मे हैं, जो बहुत ही नीचे धरती पर उभरे हुए हैं, वे इतने नीचे हैं कि सूरज भी उन्हें नहीं सोख सकता। हैं तो वे चश्मे बहुत कम परन्तु जहाँ भी कोई एक है वहाँ पेड़ लम्बे उगते हैं और बेहद सुंदर दिखाई देते हैं, चश्मे के चारों ओर छायादार हरी अमराई बनाते हुए। ऐसी जगहों को मरूद्यान (ओएसिस) कहते हैं।

अरबवासी जो शहरों में निवास नहीं करते वर्ष-भर रेगिस्तान में ही रहते हैं। वे तम्बुओं में रहते हैं, जो आसानी से गाड़े और उखाड़े जा सकते हैं, ताकि वे एक नखलिस्तान से दूसरे नखलिस्तान की ओर अपनी भेड़ों, बकरियों, ऊँटों और घोड़ों के लिए घास-पानी की खातिर जा सकें। रेगिस्तानवासी अरब खूब पकी हुई अंजीरें और खजूर खाते हैं, जो खजूर के पेड़ों पर उगते हैं। वे उन्हें सुखाते हैं और फिर पूरे वर्ष खाद्य पदार्थ के रूप में उनका उपयोग करते हैं।

इन अरबवासियों के पास संसार के सर्वोत्तम घोड़े हैं। एक अरबवासी अपने सवारी घोड़े के कारण खुद को गौरवान्वित महसूस करता है और घोड़े को अपनी पत्नी और बच्चों जैसा ही प्यार करता है। ऊँट तो उसके खूबसूरत घोड़े से भी ज्यादा उपयोगी है, बहुत विशाल और ताकतवर भी। एक ऊँट लगभग दो घोड़ों से ज्यादा असबाब ढो सकता है। अरब लोग अपने ऊँटों को समान से खूब लादते हैं और रेगिस्तान में मीलों मील सवारी भी करते हैं। मानों वह सच में 'रेगिस्तान का जहाज' हो। अक्सर उसे ऐसा ही पुकारा जाता है।

Ans. The greater part of the Arab country is desert. There are sand and rocks all around here. The sand is so hot that you cannot walk on it barefoot during the day. There are water resources here and there in the desert, which are

very low on the earth, those are so low that even the sun cannot dry them, those resources are very small but wherever there is one, trees grow tall there and look very beautiful, making shady greenery around the water resources. Such places are called oasis.

The Arabians who do not live in cities, live in the desert whole of the year. They live in tents, which can be easily buried and uprooted, so that they can move from one oasis to another for the sake of their grass and water for sheep, goats, camels and horses. The desert living Arabs eat a lot of ripe fig and dates, which grow on palm trees. They dry and use them as a whole year food item.

These Arabians have the best horses in the world. An Arabian feels proud because of his riding horse and loves the horse as much as his wife and children. The camel is more useful than his beautiful horse and is also very huge and powerful . A camel can carry more luggage than about two horses. The Arabians load their camels with luggage and also ride miles and miles in the desert. As if it were really the ship of the desert. It is often called as such.

Q5. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए: (20)

Language and communication are something that children learn by talking to one another. But schools consider this an act of indiscipline. Instead, we have a special grammar class to learn language! One educationist remarked, "It is nice that children spend just a few hours at school. If they spend all 24 hours in schools, they will turn out to be dumb!" In most schools, teachers talk, children listen. The same is true for other skills also. Children learn a great deal without being taught, by tinkering and pottering on their own.

Changes in the school system, if they are to be of lasting significance, must spring from the actions of teachers in their classrooms, teachers who are able to help children collectively. New programmes, new materials and even basic changes in organizational structure will not necessarily bring about healthy growth. A dynamic and vital atmosphere can develop when teachers are given the freedom and support to innovate. One must depend ultimately upon the initiative and respectfulness of such teachers and this cannot be promoted by prescribing continuously and in detail what is to be done.

In education, we can cry too much about money. Sure, we could use more, but some of the best classrooms and schools I have seen or heard of, spend far less per pupil than the average in our schools today. We often don't spend well what money we have. We waste large sums on fancy buildings, unproductive administrative staff, on diagnostic and remedial specialists, on expensive equipment that is either not needed, or underused or badly misused, on tons of identical and dull textbooks, readers and workbooks, and

now on latest devices like computers. For much less than that what we do spend, we could make our classrooms into far better learning environments than most of them are today.

Ans. भाषा और संचार ऐसी चीज है, जिसे बच्चे एक-दूसरे से बात करके सीखते हैं, लेकिन स्कूल इसे अनुशासनहीनता मानते हैं। इसके बजाय, हमारे पास भाषा सीखने के लिए व्याकरण की कक्षा हो! एक शिक्षाविद् का कथन है, ''यह अच्छा है कि बच्चे स्कूल में सिर्फ कुछ घंटे ही बिताते हैं। यदि वे 24 घंटे स्कूल में बिताएंगे तो वे मूर्ख बन जाएंगे।'' अधिकांश स्कूलों में शिक्षक बोलते हैं, बच्चे सुनते हैं। अन्य कौशल के लिए भी यही सच है। बच्चों को बिना पढ़ाए-लिखाए खुद से कुछ करके बहुत कुछ सीखने को मिलता है, जैसे खुद से चीजों को बनाना।

स्कूल प्रणाली में परिवर्तन, यदि वे स्थाई महत्व के हैं, तो बच्चों की सामूहिक रूप से मदद करने में सक्षम शिक्षकों के कार्यों से उनकी कक्षाओं में बहार आ जानी चाहिए। नए कार्यक्रम, नई सामग्री और यहाँ तक कि संगठनात्मक संरचना में बुनियादी बदलाव भी आवश्यक रूप से स्वस्थ विकास नहीं ला पाएंगे। जब शिक्षकों को नवाचार करने की स्वतंत्रता और समर्थन दिया जाए तो एक महत्त्वपूर्ण एवं गतिशील वातावरण विकसित हो सकता है। ऐसे शिक्षकों की सम्मानजनक पहल पर अंततः विश्वास किया जाना चाहिए और इसे पूर्व निर्धारित रूप में प्रचारित और विस्तारित नहीं किया जा सकता है कि क्या किया जाना है।

शिक्षा में पैसे को लेकर रोना रो सकते हैं। निश्चित रूप से कुछ कक्षाओं और स्कूलों को जिनको मैंने देखा है या सुना है, औसत से बहुत कम प्रति छात्र व्यय होता है, हम प्रायः पर्याप्त रूप से अपने धन का खर्च नहीं करते हैं। हम फैंसी इमारतें, अनुत्पादक प्रशासनिक ढांचे, नैदानिक और उपचारात्मक विशेषज्ञों, महंगे उपकरणों पर जिनकी आवश्यकता नहीं होती है अथवा कम आवश्यकता होती है, काफी मात्रा में एक समान तथा निरस पाठ्य-पुस्तकों एवं अभ्यास पुस्तिकाओं पर तथा अब नवीन कंप्यूटर उपकरणों पर अत्यधिक धन का अपव्यय करते हैं। जितना व्यय हम करते हैं, उससे कम व्यय में हम अपनी कक्षाओं को उनमें से अधिकांश की तुलना में बेहतर सीखने का माहौल दे सकते हैं।

Q6. (a) निम्नलिखित मुहावरों को अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए: (2×5 = 10)

(i) अक्ल पर पत्थर पड़ना **(ii) आस्तीन का साँप**

(iii) उन्नीस-बीस का अंतर होना **(iv) हवाई किले बनाना**

(v) दाल में काला होना

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए: (2×5 = 10)

(i) हम कॉलेज जाऊंगा।

(ii) प्रातःकाल सूरज उगता है।

(iii) वह अपने माता-पिता का इकलौता संतान है।

(iv) उसने कल मुझे गाली दिया।

(v) नौकर आटा पिसा लाया।

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए: (2×5 = 10)

(i) बेटी **(ii) गंगा**

(iii) सोना **(iv) हवा**

(v) तलवार

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह से वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए और उनके बीच का अंतर भी शब्दार्थ में लिखित रूप में वर्णित हो: (2×5 = 10)

(i) अविरल – अविकल **(ii) रंग – रंक**

(iii) मैला – मेला **(iv) नीर – नारी**

(v) परिणाम – परिमाण

Ans. (a) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

(i) अक्ल पर पत्थर पड़ना

अर्थ: बुद्धि भ्रष्ट होना

वाक्य प्रयोग: नंदू पहलवान से कुश्ती का मुकाबला करने के लिए तैयार होने वाले के अक्ल पर पत्थर ही पड़ गए होंगे।

(ii) आस्तीन का सांप

अर्थ: करीबी शत्रु

वाक्य प्रयोग: प्राय: आस्तीन के सांप मुख्य शत्रु से अधिक हानि पहुंचाते हैं।

(iii) उन्नीस-बीस का अंतर होना

अर्थ: बहुत कम अंतर होना

वाक्य प्रयोग: मुख्य चयनकर्ता तब असमंजस में पड़ गए जब दो ऐसे खिलाड़ियों के मध्य चयन करना पड़ा, जिनके मध्य उन्नीस-बीस का अंतर था।

(iv) हवाई किले बनाना

अर्थ: निराधार बातें करना

वाक्य प्रयोग: अयोग्य लोग सदैव हवाई किले बनाते रहते हैं जबकि कार्य कम कर पाते हैं।

(v) दाल में काला होना

अर्थ: कुछ गड़बड़ होना

वाक्य प्रयोग: शिकायतकर्ता के लगातार अपनी बातें बदलने पर पुलिस को शक हुआ कि दाल में जरूर काला है।

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए:

(i) हम कॉलेज जाऊँगा।

शुद्ध रूप: मैं कॉलेज जाऊँगा।

(ii) प्रात:काल सूरज उगता है।

शुद्ध रूप: प्रात:काल में सूर्योदय होता है।

(iii) वह अपने माता-पिता का इकलौता संतान है।

शुद्ध रूप: वह अपने माता-पिता की इकलौती संतान है।

(iv) उसने कल मुझे गाली दिया।

शुद्ध रूप: उसने कल मुझे गाली दी।

(v) नौकर आटा पिसा लाया।

शुद्ध रूप: नौकर गेहूँ पिसा कर लाया।

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(i) बेटी - पुत्री, आत्मजा

(ii) गंगा - सुरसरि, त्रिपथगा

(iii) सोना - स्वर्ण, कनक

(iv) हवा - वायु, पवन

(v) तलवार - असि, खडग

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट होते हुए उनके बीच का अंतर भी शब्दार्थ में लिखित रूप में वर्णित हो।

(i) अविरल - अविकल

वाक्य प्रयोग: गंगा की अविरल (सघन) धारा को बनाए रखने के लिए इसके जल को अविकल (व्यवस्थित) रूप में बनाए रखना चाहिए।

(ii) रंग - रंक

वाक्य प्रयोग: विविध रंग (वर्ण) के खिलौने देखकर रंक (निर्धन) का पुत्र उत्सुक हो उठा।

(iii) मैला - मेला

वाक्य प्रयोग: जहाँ मैला (गंदगी) हो वहाँ मेला (उत्सव) की रौनक फीकी पड़ जाती है।

(iv) नीर - नारी

वाक्य प्रयोग: नीर (जल) में सूर्य को डूबते देख कर एक नारी (स्त्री) का मन प्रफुल्लित हो गया।

(v) परिणाम - परिमाण

वाक्य प्रयोग: परिणाम (नतीजा) की चिंता किए बिना अपने श्रम का परिमाण (मात्रा) को बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए।

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2016 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र

Time allowed : Three hours *Maximum Marks : 300*

प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश:

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित हैं।
- उत्तर हिन्दी में ही लिखे जाएँगे, यदि किसी प्रश्न-विशेष में अन्यथा निर्दिष्ट न हो।
- जिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्धारित है, वहाँ इसका अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर, निर्धारित शब्द-संख्या की तुलना में काफी लंबा या छोटा है तो अंकों की कटौती की जा सकती है।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो खाली छोड़ा गया हो, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

Q1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 600 शब्दों में निबन्ध लिखिए: (1 × 100 = 100)

(a) संस्कृति क्यों महत्त्वपूर्ण है?

(b) स्मार्ट नगर एवं अनस्मार्ट नागरिक!

(c) न्यायिक सक्रियता (Activism) बनाम न्यायिक असीमितता (Overreach)!

(d) हमारी विरासत और स्कूली बच्चे!

Ans. (a) संस्कृति क्यों महत्त्वपूर्ण है?

संस्कृति का आशय व्यक्तियों के किसी समूह द्वारा किये जाने वाले क्रिया-कलाप के समुच्चय से है। संस्कृति की विशेषताओं में भाषा, कला एवं साहित्य, पर्व-उत्सव, रहन-सहन, खान-पान एवं पहनावा इत्यादि को शामिल किया जाता है। विभिन्न समाजों में संस्कृतिगत् विविधता देखने को मिलती है। उदाहरण के लिए उत्तर भारत की सांस्कृतिक विशेषताएँ दक्षिण भारत की संस्कृति से पर्याप्त भिन्नता रखती है। सांस्कृतिक विविधता विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है, इनमें भौगोलिक कारक, जलवायविक कारक, ऐतिहासिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि को मुख्य रूप से शामिल किया जा सकता है। संस्कृति का महत्व इस बात में सन्निहित है कि यह समाज में एकरूपता लाती है तथा उनमें आपसी तालमेल को भी बढ़ाती है।

संस्कृति के अध्ययन के क्रम में हम ऐसी बहुत-सी बातें सीखते हैं यथा, हमारी

वर्तमान जीवन शैली का क्रमबद्ध विकास, ऐसे ऐतिहासिक अनुभव जो हमें वर्तमान परिस्थितियों में उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती हैं, साथ ही हम सामाजिक व्यवहारों का बेहतर आकलन भी कर पाते हैं। उदाहरण के लिए भारत की सांस्कृतिक विशेषता (विशेषत: उत्तर भारत की) विभिन्न धर्मों, नृजातीय समूहों तथा भाषा-भाषियों के समन्वय का बोध कराती हैं। यह सांस्कृतिक तत्व सामाजिक सौहार्द बनाए रखने के लिए बहुलवादी दृष्टिकोण की माँग करता है। परिणामत: भारतीय संविधान में धार्मिक एवं सांस्कृतिक अधिकारों को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गयी है।

संस्कृति समूह विशेष के लोगों में एकत्व का प्रसार करती है। यह 'एकत्व' ही बाहरी तत्वों से द्वंद्व की स्थिति में समूह की सुरक्षा में सहायक होता है। इसका ज्वलंत उदाहरण मराठा समुदाय का शिवाजी के नेतृत्व में एकजुट होकर मुगलों का मुकाबला करना है। आगे मराठा साम्राज्य का, मराठा सरदारों के मध्य विघटन हो गया। ऐसे ही सिख समुदाय ने भी अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं के आध ार पर खालसा के रूप में एकजुट होकर सिख साम्राज्य का निर्माण किया। उक्त विवरण से यह प्रकट होता है कि सांस्कृतिक एकजुटता द्वंद्व की स्थिति में महत्वपूण र्ा भूमिका निभाती है।

सांस्कृतिक प्रथाएँ किसी भी बाह्य हस्तक्षेप का प्रतिरोध करती हैं। ये बाहरी तत्वों से होने वाले सामाजिक संक्रमण को भी अवरुद्ध करती हैं। भारत में इस्लामी आक्रमणों के क्रम में इस्लामी संस्कृति का प्रवेश हुआ था। ठीक उसी समय देसी संस्कृति ने भक्ति आन्दोलन को जन्म दिया। ध्यातव्य है कि भक्ति आन्दोलन केवल धार्मिक कारकों तक ही सीमित नहीं रहा था, अपितु इसने सामाजिक, भाषायी एवं अन्य सांस्कृतिक घटकों पर अपनी छाप छोड़ी। हाल के दिनों में भू-मण्डलीकरण के प्रभाव में उत्पन्न सांस्कृतिक अनुक्रमण के विरुद्ध भी देसी संस्कृतियों का टकराव तथा एक सीमा के बाद सह-अस्तित्व देखा जा सकता है।

संस्कृति का एक अन्य महत्व समाज में अनुशासन बनाए रखना भी है। संस्कृति समाज में एक मूक दिशा-निर्देशों की भाँति व्यवहार करती है। उदाहरण के लिए भारतीय संस्कृति में वृद्धों की सेवा को एक कर्त्तव्य माना जाता है, इस कर्त्तव्य को संस्कृति का समर्थन भी प्राप्त है। फिर जो कोई भी इसके विरुद्ध आचरण करता है, उसे समाज दण्डित करता है। इसी प्रकार हमारे पारिवारिक संबंध भी संस्कृति पर आधारित होते हैं। इसमें व्यक्ति सम्मान, कर्त्तव्य, दायित्वों आदि से संबंधित दिशा-निर्देश प्राप्त करता है।

यदि हम समाज पर संस्कृति के प्रभावों का अवलोकन करें तो इसके मिले-जुले परिणाम पाते हैं। समाज पर संस्कृति के प्रभाव सर्वकालिक रूप से एक समान नहीं होते हैं। कुछ संस्कृतियाँ समय के साथ अपना महत्व खो देती हैं जबकि कुछ संस्कृतियाँ बदलते समय के साथ कुरीति में भी परिवर्तित हो जाती हैं। उदाहरण के

लिए ब्राह्मणों के पास धार्मिक एवं शैक्षणिक कार्यों के अतिरिक्त आय के साधन अनुपलब्ध थे, परंतु अब जबकि वे लगभग सभी तरह के पेशे में संलग्न हैं, यह संस्कृति महत्त्वहीन हो गयी है। इसी प्रकार, स्त्रियों को जीवन भर किसी पुरुष के संरक्षण में रखने की परंपरा वर्तमान में लैंगिक समानता एवं कानून व्यवस्था के परिदृश्य में अपसंस्कृति अथवा कुरीति बन गयी है।

भारत जैसे देश में संस्कृति का अत्यधिक महत्व है। भारत विभिन्न धार्मिक, भाषायी एवं नृजातीय समूहों वाला देश है। भारत में संस्कृतियों की यह विविधता सांस्कृतिक रूप से अल्पसंख्यक समूहों में अतिसंवेदनशीलता को जन्म देती है। इस स्थिति में यह आवश्यक है कि सभी सांस्कृतिक समूहों को पर्याप्त संरक्षण देकर उनमें विश्वास उत्पन्न किया जाए। यदि भारत अपनी बहुलवादी सांस्कृतिक पहचान को संजोए रखता है तो निश्चित रूप से यह राष्ट्र की एकजुटता तथा समृद्धि में सहायक सिद्ध हो सकता है।

(b) स्मार्ट नगर एवं अनस्मार्ट नागरिक

नगरों के निरंतर होते विस्तार तथा ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर होने वाला पलायन, नगरों में नागरिक सुविधाओं पर दबाव उत्पन्न कर रहा है। इन समस्याओं का समाधान तकनीक के प्रयोग के बिना असंभव प्रतीत होता है। इससे स्मार्ट नगर की अवधारणा का जन्म हुआ। स्मार्ट नगरों की सार्थकता इस बात पर निर्भर करती है कि नागरिक इसका उपयोग किस प्रकार करते हैं। संक्षेप में स्मार्ट नगरों के सफल संचालन के लिए स्मार्ट नागरिकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इस संदर्भ में पश्चिमी देशों का उदाहरण लिया जा सकता है जहाँ नागरिक अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति अधिक सजग हैं।

स्मार्ट नगर का आशय ऐसे नगरों से है जहाँ नगरीय प्रबंधन तथा नागरिक सेवाएँ तकनीकी रूप से उन्नत होती हैं। तकनीकी आधारित प्रबंधन प्रणाली अपेक्षत: अधिक दक्ष होती है; जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल एवं प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, कचरा निपटान, पार्किंग सुविधाएँ, पर्व एवं उत्सवों का आयोजन इत्यादि। इस प्रकार का नगरीय प्रबंधन नगरों को किसी भी प्रकार के आकस्मिक व्यवधान से बचाता है। इसी प्रकार नागरिक सेवाओं का तकनीकी आधारित होना इन सेवाओं को अधिक दक्ष तथा लक्ष्योन्मुखी बनाती है। इससे नागरिक जीवन की गुणवत्ता बेहतर होती है; जैसे- नागरिकों के लिए प्रमाण पत्रों एवं दस्तावेजों को ऑनलाइन बनवाने की सुविधा, नागरिकों के लिए बिलों एवं शुल्कों के ऑनलाइन भुगतान की सुविधा, नागरिकों के महत्व की जानकारी को डिजिटल रूप में उपलब्ध करवाना इत्यादि। इस प्रकार स्मार्ट नगर बेहतर शहरी जीवन का द्योतक है।

भारत में स्मार्ट नगर का अत्यधिक महत्व है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में शहरी जनसंख्या की वृद्धि दर 2.76% प्रति वर्ष है। वर्ल्ड अर्बनाइजेशन प्रॉस्पेक्टस रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2050 तक भारत की 52.8% आबादी शहरों में निवास करेगी।

ये आँकड़े दर्शाते हैं कि भारत में नगरीय क्षेत्रों में भावी जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए स्मार्ट नगर जैसी योजनाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। भारत के नगरीय क्षेत्र (विशेषत: मैट्रो शहर) प्रदूषण, पेयजल अभाव, सीवेज कुप्रबंधन, ट्रैफिक जाम, अस्वास्थ्यकर आवासों इत्यादि समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इसके कारण शहरों में नागरिकों का जीवन स्तर दुष्प्रभावित होता है। भारत सरकार इन समस्याओं के समाधान के रूप में 100 स्मार्ट शहरों के विकास, अमृत योजना के अंतर्गत 500 शहरों में नागरिक सुविधाओं के उन्नयन जैसे योजनाओं पर कार्य कर रही है।

ध्यातव्य है कि स्मार्ट नगरों का पर्याप्त लाभ तभी मिल सकता है जब इसके प्रति नागरिक भी सजग हों। नगरों के तकनीकी प्रबंधन में बिगडेटा की अहम भूमिका होती है। नागरिकों को अपने डेटा की सुरक्षा के लिए जागरूकता का अभाव डेटा के दुरूपयोग का कारण बन सकता है। यदि तकनीकी आधारित ट्रैफिक मैनेजमेंट में लोग ट्रैफिक नियमों का पालन नहीं करेंगे तो मानवीय हस्तक्षेप के अभाव में दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाएगी। यदि नागरिक डिजिटल सेवाओं (मुख्यत: डिजिटल ट्रान्जेक्शन) के प्रति सतर्कता नहीं बरतेंगे तो उनके साथ धोखा-धड़ी की संभावना बढ़ जाएगी। सार्वजनिक सेवाओं के ऑनलाइन आवेदन एवं प्राप्ति इत्यादि के लिए नागरिकों का डिजिटली साक्षर होना भी आवश्यक है। कचरा प्रबंधन का आरंभिक चरण गीले तथा सूखे कचरे का पृथक्कीकरण करना है। इसके लिए नागरिकों के स्तर पर कार्य किये जाने की आवश्यकता होगी। अत: यह कहा जा सकता है कि नागरिकों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

स्मार्ट नगरों की क्रियाशीलता स्मार्ट नागरिकों पर निर्भर करती है। भारत जैसे देश में जहाँ व्यापक स्तर पर अशिक्षा तथा विधियों और नियमों की अनदेखी करने की परंपरा व्याप्त है, वहाँ नागरिकों को तथाकथित स्मार्ट नागरिक बनाने के लिए सघन जन जागरूकता की आवश्यकता होगी। इस दिशा में पहल करते हुए सरकार ने स्वच्छता, डिजिटल साक्षरता, ट्रैफिक नियमों के अनुपालन आदि को लेकर जागरूकता अभियान प्रारंभ किए हैं। इसके अतिरिक्त संसद द्वारा भी परिवहन संबंधी विधियों को अधिक कठोर किया गया है ताकि लोग विधियों तथा संबंधित नियमों की अनदेखी न करें। पश्चिमी देशों में जहाँ पर भी शहरों का प्रबंधन तकनीक के प्रयोग से संचालित होता है, वहाँ नागरिकों की सक्रिय एवं पर्याप्त भागीदारी देखी जा सकती है।

विविध देशों ने अपनी अर्थव्यवस्था का सफलतापूर्वक डिजिटलीकरण किया है। इससे उन देशों को कर प्रबंधन एवं मौद्रिक नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में सहायता मिली है। ब्रिटेन एवं अमेरिका जैसे देशों ने अपनी स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक प्रभावी बनाने के लिए तकनीकी का प्रयोग किया है। नागरिकों की सक्रिय भागीदारी ने इसकी सफलता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत ने भी अपने डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए डिजिटल साक्षरता को प्राथमिक लक्ष्य के रूप में चिह्नित किया है।

किसी भी नवीन अवधारणा की सफलता उसके प्रयोक्ताओं पर भी निर्भर करती है। कुशल प्रयोक्ता, अकुशल कार्यपद्धति को भी सफलतापूर्वक संचालित कर सकते हैं। स्मार्ट नगरों के संबंध में भी यही तथ्य प्रासंगिक है। स्मार्ट नगरों का अस्तित्व भी स्मार्ट नागरिकों से ही सुरक्षित रखा जा सकता है। यदि नागरिक अनस्मार्ट (अकुशल) बने रहेंगे तो स्मार्ट नगर भी धराशाही हो जाएँगे।

(c) न्यायिक सक्रियता बनाम न्यायिक असीमितता

भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहाँ हमने संसदीय व्यवस्था को अपनाया है। संसदीय व्यवस्था के तीन महत्त्वपूर्ण स्तंभ होते हैं, जिनमें विधायिका, कार्यपालिका, एवं न्यायपालिका होती है। इन तीनों के कामकाज भी अलग-अलग होते हैं, जहाँ विधायिका राष्ट्र हित के लिए कानून बनाती है तो कार्यपालिका इन कानूनों को लागू करती है और न्यायपालिका का काम संविधान की रक्षा करना है।

तीनों अंगों के साथ शक्तियों के स्पष्ट विभाजन के साथ ही इनसे अपेक्षा की गई है कि यह एक दूसरों के कार्यों में यथासंभव हस्तक्षेप नहीं करेंगे तथा इन्हें अपने अधिकार क्षेत्रों में सर्वोच्चता प्रदान की गई है। परंतु इसी के साथ संविधान में यह व्यवस्था भी की गई है कि अगर शासन के तीनों अंगों में से कोई भी अंग अपने क्षेत्राधिकार का उल्लंघन करता है, तब अन्य सभी अंग एक दूसरे को प्रति संतुलित करेंगे। इसी परिप्रेक्ष्य में जब न्यायपालिका द्वारा कार्यपालिका एवं विधायिका के कार्यक्षेत्र में जनहित की दृष्टि से हस्तक्षेप किया जाता है तो वह न्यायिक सक्रियता कहलाता है। इसके अंतर्गत देश की न्यायपालिका सामाजिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों को नियमित करने में शासन के अन्य अंगों विधायिका तथा कार्यपालिका से अधिक प्रभावी भूमिका निभाती है। यह लोकहित, विधि के शासन एवं संविधान की मूल भावना के संरक्षण का प्रभावी यंत्र है। सामान्य शब्दों में न्यायपालिका द्वारा प्रमुखत: जनहित याचिका जैसे माध्यमों से अपने निर्देशों द्वारा विधियों तथा नीतियों के संशोधन के निर्माण का कार्य किया जाने लगा है, इसे ही न्यायिक सक्रियता कहते हैं; जैसे- चुनाव में नोटा के प्रयोग का निर्देश, नीति निर्माण में हस्तक्षेप करते हुए सरकार को सूखा राहत कोष गठन करने के निर्देश, बीसीसीआई के अध्यक्ष की नियुक्ति इत्यादि।

हालांकि न्यायिक सक्रियता जब एक सीमा से आगे बढ़ जाती है तो सीधे तौर पर संविधान को चुनौती प्रदान करने लगती है तथा शक्ति पृथक्करण के सिद्धांत की भावना का उल्लंघन करती है, क्योंकि न्यायपालिका का कार्य विधायिका और कार्यपालिका के कार्यों का पुनरावलोकन करना है, न की स्वयं विधायिका एवं कार्यपालिका की भूमिका का निर्वहन करना, इसे न्यायिक असीमितता कहते हैं। न्यायिक सक्रियता की अति से सीधे तौर पर लोकतंत्र को भी चुनौती प्राप्त होती है, क्योंकि जनमत द्वारा विधि एवं नीति निर्माण का कार्य विधायिका एवं कार्यपालिका को सौंपा गया है, न की न्यायपालिका को। अत: बढ़ती न्यायिक असीमितता से जनमत एवं लोकतंत्र का अतिक्रमण होता है।

इससे न सिर्फ संविधान एवं लोकतंत्र को चोट पहुंचती है, बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं के बीच तनाव भी उत्पन्न होता है, जिससे वे एक दूसरे को नियंत्रण करने का प्रयास करना आरंभ कर देते हैं। इन सब से संविधान में निर्मित संतुलन बिगड़ता है। इसके अलावा इसके कारण लोकतंत्र के अंतर्गत प्रशासनिक व्यवस्था भी प्रभावित होती है। दरअसल कई बार न्यायपालिका के निर्देश तथा लागू विधि अथवा बनाई नीतियों में विरोधाभास उत्पन्न होने के कारण प्रशासन भ्रमित होता है एवं प्रशासनिक कार्यों की कार्यकुशलता प्रभावित होती है; जैसे- पर्यावरणीय मुद्दे, कौन-सी गाड़ी किस ईंधन से चलेगी इसका निर्णय न्यायपालिका द्वारा करना, सिनेमा हॉल में राष्ट्रगान चलाने की अनिवार्यता को लागू करना, आदि निर्देश। इस प्रकार देखा जाए तो यह न्यायपालिका की अपने अधिकार क्षेत्र की कई बार असीमितता प्रतीत होती है।

संविधान में तीनों अंगों के संतुलन का प्रावधान है। जब तीनों अंग स्वतंत्र रूप से अपने दायित्वों का उचित तरीके से निर्वहन करेंगे तभी लोकतंत्र को शक्ति मिलेगी एवं मजबूत होगा एवं कार्य प्रणाली में दक्षता आएगी। न्यायपालिका का काम शासन करना नहीं है, बल्कि न्याय क्षेत्र में रहकर न्याय प्रणाली को मजबूत करना है। अत: स्वस्थ लोकतंत्र के लिए यह जरूरी है कि उसमें न्यायपालिका, कार्यपालिका एवं विधायिका तीनों संविधान सम्मत अपने दायित्वों का निर्वहन करें।

(d) हमारी विरासत और स्कूली बच्चे

हमारी विरासत या धरोहर हमारी संस्कृति की पहचान की द्योतक रही है। विरासत का मतलब हमारे पूर्वजों द्वारा दी गई कला एवं वस्तु तथा अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों से होता है। इन्हें सहेज कर रखना हमारा कर्त्तव्य ही नहीं, बल्कि मौलिक अधिकार भी है क्योंकि किसी भी व्यक्ति का अपनी विरासत से संबंध इस प्रकार होता है, जिस प्रकार एक बच्चे का अपनी मां से। हमारी विरासत ही हमारा गौरव है, जो कि हमारे इतिहास का बोध कराती है। हमारी कला और संस्कृति की आधारशिला भी हमारी विरासत ही है, परंतु आज के समय में हमारी विरासत चाहे ऐतिहासिक हो, सांस्कृतिक हो या कलात्मक हो, अधिकतर युवा अपनी इस विरासत से भटकते नजर आ रहे हैं। अपनी विरासत को संजोए रखने के लिए यह बहुत जरूरी है कि स्कूली बच्चों को इससे परिचित कराया जाए क्योंकि यह ही एक ऐसा माध्यम है जो हमारी विरासत का इस पीढ़ी से अगली पीढ़ी में पहुंचा सकता है।

हमारी विरासत और पुराने समय की यादों को संजोकर रखने तथा इन अनमोल वस्तुओं की कीमत को ध्यान में रखकर ही संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनेस्को ने वर्ष 1983 से हर साल 18 अप्रैल को विश्व विरासत दिवस मनाने की घोषणा की थी। हमारी विरासत हमें विज्ञान और तकनीक से भी रूबरू कराती है, यह मनुष्य तथा प्रकृति के बीच जटिल संबंध को दर्शाती है और मानव विकास की कहानियाँ बयां करती है। देखा जाए तो हमारी विरासत को कई गतिविधियों से

नुकसान पहुँच रहा है, जिनमें से प्रमुख हैं- आतंकवादी गतिविधियाँ व युद्ध, भूकंप एवं अनियमित शहरीकरण आदि। लेकिन, आगे बढ़ने की इस होड़ में विरासत के सभी पहलुओं को नजरअंदाज किया जा रहा है।

विरासत को बचाने के लिए वैसे तो विभिन्न देशों में अपने-अपने तरीकों से सरकारी योजनाएं कार्यरत हैं, लेकिन अगर आज के स्कूली बच्चों को इस सभ्यता से परिचित कराया जाए तो उन्हें अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति को समझने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। NCF 2005 की रिपोर्ट के अनुसार बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए क्योंकि यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है, जिससे हमारी व्यवस्था आजतक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। इसके लिए हमें बच्चों में सर्जनशीलता का विकास करना पड़ेगा। इसके लिए समय-समय पर स्कूलों में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराने चाहिए तथा कल्चर रिसोर्स ट्रेनिंग के तहत स्कूलों में प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रम कराने की आवश्यकता है, जिससे कि बच्चे कई ऐतिहासिक स्थलों की, कलाओं की, प्रदर्शनी बनाकर इनके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें। बच्चों को अपने इतिहास के बारे में बताएं तथा किसी ऐतिहासिक स्थल जैसे कि आर्ट गैलरी, मकबरे आदि स्थानों पर समय-समय पर बच्चों को लेकर जाना चाहिए ताकि वे उनकी संरचना एवं महत्व को समझ सकें और बच्चों में इन विरासतों के प्रति जिज्ञासा बनी रहे। वैसे भी हमारी भारतीय संस्कृति में हमेशा शैक्षणिक संस्थान और उससे संबंधित संस्थानों को विद्या मंदिर का सम्माननीय स्थान दिया है और शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा स्कूली बच्चों को विरासत एवं संस्कृति के बारे में विस्तार से सिखा कर उनमें एक जिम्मेदारी और नागरिकता की भावना पैदा की जा सकती है। इस शिक्षा के माध्यम से ही आज के युवाओं के अंदर पनप रही अशिष्टता को दूर किया जा सकता है और विरासतों के प्रति सजगता को बढ़ाया जा सकता है, जिससे कि अनमोल विरासत का विलुप्तिकरण रूक सकेगा।

अत: स्कूली बच्चे और विरासत एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं, अगर उनको विरासत के बारे में संपूर्ण जानकारी प्रयोगात्मक रूप से उपलब्ध कराई जाए क्योंकि हमारी विरासत अपने-आप में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से परिपूर्ण है तो आज के स्कूली बच्चों को संपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक रूप से परिपूर्ण कर सकती है।

Q2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए: (12×5 = 60)

यह कहा जाता है कि स्त्रियाँ आधे आकाश पर छाई हुई हैं। हम इसमें संशोधन कर कह सकते हैं कि वे इससे अधिक स्थान की अधिकारी हैं। लेकिन तो भी प्रत्येक देश के इतिहास के सभी कालों, संस्कृति और परम्परा, क्षेत्र, धर्म जाति, वर्ग, श्रेणी, नस्ल,

वर्ण, वैविध्यपूर्ण अतीत एवं वर्तमान में स्त्रियों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों से कमतर आँका जाता रहा है। उनके साथ एक तरतीब से भोजन, कार्य, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं विकास में प्रतिभागी होने के अवसरों, नेतृत्व और अपने स्वप्नों को साकार करने में भेदभाव बरता जाता रहा है। वे सच्चे अर्थों में विश्व की सबसे बड़ी 'अल्पसंख्यक' कही जा सकती हैं।

पितृसत्ता-व्यवस्था स्त्रियों को ऐसे व्यक्तियों के रूप में नहीं देखती जिनकी अपनी एक पहचान हो। वे इस रूप में भी नहीं देखी जातीं कि वे अपने आप में सम्पूर्ण हैं कि उनका अपना सम्मान और स्वायत्तता है कि वे सम्मान की अधिकारिणी हैं कि सामाजिक व्यवस्था में, कानून में एवं संस्थाओं में उनके समान अधिकार हैं। इसके बजाय वे पुरुषों के मात्र औज़ार के रूप में देखी जाती हैं। उन्हें पीढ़ी को आगे ले जाने वाले प्रतीक के रूप में, सेवाभाव रखने वाली, यौन-तृप्ति की पूर्ति का साधन और परिवार की सामान्य सम्पन्नता के वाहक के रूप में माना जाता रहा है। उनकी सांस्कृतिक स्वीकृति केवल इस रूप में है कि वे किसी पुरुष की पुत्री, पत्नी या माँ हैं। इसके अतिरिक्त उनकी कोई और पहचान नहीं है और उपर्युक्त पहचान के न रहने पर वे हेय दृष्टि से देखी जाती हैं।

एकल स्त्रियाँ इस वृत्त के बाहर खड़ी दृष्टिगोचर होती हैं। इनमें वे शामिल हैं जो सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य विवाह योग्य अवस्था की हैं लेकिन अभी तक विवाहित नहीं हैं अथवा वे जो विधवा हैं, तलाकशुदा हैं या अलग हो चुकी हैं। पुरुष के सुरक्षावृत्त की अनुपस्थिति समाज द्वारा अच्छी नहीं मानी जाती। यह तब और भी बढ़ जाती है जब एक स्त्री इस सुरक्षा-वृत्त की अस्वीकार कर देती है या अपने साथी को दुर्घटना या बीमारी के कारण खो देती है। पुरुष को सर्वाधिक द्वेष उस स्त्री से है जो न केवल अकेले रहती है बल्कि पुरुष की छाया के बाहर अपनी अस्मिता के साथ जीवन व्यतीत करती है।

महिलाएँ सर्वाधिक विकसित देशों में भी 60 से 80 प्रतिशत तक भोजन का उत्पादन करती हैं और विश्व के आधे भोजन-उत्पादनकर्ता होने का श्रेय भी उन्हें ही है। सांस्कृतिक रूप से भी यदि देखा जाए तो अधिकांश घरों में स्त्रियाँ ही भोजन-प्रदाता हैं। तथापि भारतवर्ष में सामाजिक-सांस्कृतिक रीतियाँ यह सुनिश्चित करती हैं कि घरों में स्त्रियाँ न केवल बाद में खाएँगी और कम खाएँगी बल्कि कभी-कभी तो ऐसा भी हो सकता है कि उनके खाने के लिए कुछ न बचे। ऐसे घरों में जहाँ पर्यापत मात्रा में भोजन है, वहाँ भी स्त्रियों को पोषण-युक्त भोजन नहीं मिल पाता। एकल स्त्रियाँ भी सामाजिक बन्धनों और अतिरिक्त भेदभाव के चलते इस श्रेणी में आ जाती हैं जबकि वे अकेले अपने दम पर दुनिया में संघर्ष करती हैं।

भारत उन देशों में से एक है जहाँ पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या कम है। देश की जनसंख्या में उनका प्रतिशत पिछली शताब्दी से लगातार गिर रहा है। 2001 की

जनगणना से यदि ज्ञात हुआ कि प्रत्येक 1000 पुरुषों के समानान्तर 933 स्त्रियाँ हैं। यदि पुरुषों की तरह स्त्रियों को समान जीवन-अवसर मिलें और साथ ही उनके स्वास्थ्य और पोषण का ध्यान रखा जाए तो यह संभावना बलवती हो जाएगी कि पुरुषों और स्त्रियों की संख्या बराबर हो जाए। फिलहाल 2001 में पुरुषों की तुलना में स्त्रियाँ 3 करोड़ 50 लाख कम थीं। ये अनुपात 2011 की जनगणना में थोड़ा सुधरा अर्थात् 933 की तुलना में 940 हो गया। एक बड़ी चिंता का विषय यह है कि 2001 में 6 साल तक के बच्चों में लड़कों की तुलना में लड़कियों की जन्म-दर 927 ही रह गयी और 2011 में और गिर कर 914 रह गयी। ये आँकड़े बताते हैं कि सामाजिक और सांस्कृतिक विसंगतियों एवं बढ़ती तकनीक के चलते लगातार स्त्रियों के जीवन-अवसर कम होते जा रहे हैं। कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में नियमित रूप से लाखों लड़कियाँ एवं स्त्रियाँ मारी जा रही हैं।

(a) जनगणना के आँकड़े लड़कियों एवं स्त्रियों के बारे में क्या संदेश देते हैं? (12)

(b) भोजन एवं स्त्रियों के संदर्भ में मिलने वाली असमानता की विडम्बना क्या है? (12)

(c) इस कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है कि स्त्रियाँ आधे से अधिक आकाश में छाई हुई हैं? (12)

(d) पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियाँ कैसे "मात्र औज़ार" बनकर रह गयी हैं? (12)

(e) लेखक के अनुसार एकल स्त्री को कैसे हमारे समाज में आसानी से क्षति पहुँचाई जा सकती है? (12)

Ans. (a) जनगणना के आँकड़ों से यह प्रकट होता है कि देश में पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या कम है। 6 साल तक के बच्चों का निम्न लिंगानुपात में आगे और भी गिरावट आने की संभावना है। निष्कर्षत: स्त्रियों की संख्या पुरुषों के बराबर करने के लिए प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

(b) भोजन एवं स्त्रियों के संदर्भ में प्रमुख विडम्बना यह है कि स्त्रियाँ भोजन की प्रमुख उत्पादनकर्ता होने के बावजूद सांस्कृतिक एवं सामाजिक कारणों से इसके उपभोग से वंचित रह जाती हैं। भारतवर्ष में स्त्रियों के बाद में भोजन ग्रहण करने के चलते वे पर्याप्त भोजन प्राप्त करने से भी वंचित रह जाती हैं।

(c) लेखक यह कहना चाहता है कि इतिहास में महिलाओं के साथ जिस प्रकार भेदभावपूर्ण व्यवहार किया गया है उससे इनका विकास अवरुद्ध हुआ है। अत: उन्हें पुरुषों के समकक्ष लाने के लिए एवं न्यायपूर्ण विकास सुनिश्चित करने के लिए आधे से अधिक आकाश की आवश्यकता है या यूँ कहें कि जिन परिस्थितियों में उन्होंने यह मुकाम हासिल किया है वह अतुलनीय है।

(d) पितृसत्तावादी समाज ने स्त्रियों को स्वतंत्र अस्तित्व देने के स्थान पर उसे महज औजार के रूप में प्रयोग किया है। स्त्रियों को पीढ़ी को बढ़ाने वाली, सेवाभाव

रखने वाली तथा यौन तृप्ति के साधन के रूप में प्रयोग करने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

(e) एकल स्त्रियों को समाज में सुभेद्य समझा जाता है। उन्हें पुरुष के सुरक्षावृत्त की अनुपस्थिति में समाज के द्वेषपूर्ण आचरण का सामना करना पड़ता है। यह स्थिति किसी तलाकशुदा महिला अथवा विधवा स्त्री के संबंध में और भी अधिक उत्पन्न होती है, जब वे अपनी अस्मिता के साथ अपना जीवन जीना चाहती हैं।

Q3. निम्नलिखित अनुच्छेद का सारांश लगभग एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। इसका शीर्षक लिखने की आवश्यकता नहीं है। सारांश अपने शब्दों में ही लिखिए: (1 × 60 = 60)

हममें से अधिकांश लोग इस बात से सहमत होंगे कि वफ़ादार होना प्रशंसनीय है। हम अपने परिवार के प्रति, मित्रों के प्रति तथा अपने देश के प्रति वफ़ादारी की अनुशंसा करते हैं। वास्तव में उन सभी व्यक्तियों तथा समूहों के प्रति हमें वफ़ादार होना भी चाहिए जिनके प्रति हम आभारी होते हैं। जब हम वफ़ादारी की बात करते हैं तो हमारा अभिप्राय यह होता है कि जब वे कठिनाइयों में अथवा किसी विपदा में हों तो हम उनकी सहायता के लिए प्रस्तुत रहें। साथ ही हर समय उनकी भलाई हमारी अभिरुचि हो।

आमतौर पर यह भी स्पष्ट रूप से पाया जाता है कि कोई व्यक्ति बेवफा तब होता है जब वह अपने माता-पिता के प्रति उदासीन रहता है या वह अपने देश की सेना के विरुद्ध विद्रोह करता है और अपने देश के लोगों को अंधाधुंध मौत के घाट उतारता है। इस प्रकार के लोगों को हममें से अधिकांशत: अनुमोदित नहीं करते।

लेकिन, अनेक बार ऐसी स्थिति भी पैदा होती है कि जब यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि कौन वफ़ादार है और कौन नहीं। एक चतुर बच्चा शिक्षा छोड़ कर धन कमाने के अपने माता-पिता के आग्रह का विरोध कर सकता है। उसका यह विश्वास हो सकता है कि वह अपनी शिक्षा को कुछ और वर्ष ज़ारी रखते हुए भविष्य में अपने माता-पिता को और बेहतर ढंग से कुछ लौटा सकता है। यदि वह अपनी शिक्षा को अभी स्थगित कर देता है तो उसकी प्रतिभा विनष्ट हो जाएगी और उसका लाभ किसी को भी नहीं मिल पाएगा।

कुछ कल्पनाहीन लोग ही इस प्रकार का निर्णय लेने वाले लड़के या लड़की की निंदा करेंगे। किंतु आमतौर पर इस प्रकार का बच्चा यदि कर्त्तव्यनिष्ठ एवं संवेदनशील हो तो उसकी मदद की जानी चाहिए और उसे प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिए, बजाए इसके कि उसकी आलोचना की जाए। दूसरी तरफ कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में यदि कोई बच्चा अपने ग़रीब माता-पिता के मदद संबंधी आग्रह को ठुकरा देता है तो उसे बेवफ़ा समझा जाता है। यदि वह भविष्य में सफलता हासिल करता है तो वह अपनी युवावस्था की बेवफ़ाई पर प्रायश्चित करता है।

कभी-कभी यह समस्या तब और बड़ी हो जाती है जब किसी व्यक्ति को अपने देश की सरकार से जोड़ कर इस संबंध में देखा जाता है। अपने देश में गंभीरता और दायित्व-निर्वाह के साथ रहने वाले व्यक्तियों का वह समूह, जो अपने देश को खुशहाल तथा समृद्ध देखना चाहता है, कभी-कभी सरकार के विरुद्ध यह सोचकर विद्रोह कर देता है कि वह सरकार निकम्मी है, उसके पास उस सरकार के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं बचा। ऐसे लोगों को सरकार तत्काल विद्रोही और प्रवंचक घोषित कर देती है। हो सकता है कि वे विद्रोही हों, किन्तु उन्हें प्रवंचक कहना उचित नहीं लगता। हो सकता है कि वह समूह अपने देशवासियों के प्रति अधिक वफ़ादार हो, बजाए इसके कि वह सरकार के प्रति वफ़ादार हो।

दुर्भाग्य से तब तक यह कहना बहुत कठिन है कि उस समूह का विद्रोह देश के प्रति वफ़ादारी के कारण प्रेरित है अथवा उसके निजी स्वार्थों के कारण, जब तक कि वह विद्रोह सफल न हो जाए। तब यह प्रश्न उठता है कि अब जब विद्रोही सफल हो गए हैं और उन्होंने नई सरकार बना ली है तो क्या वे यह स्वीकार करेंगे कि देश की समस्त जनसंख्या और उनके राजनीतिक शत्रुओं के भी कुछ अधिकार तो अवश्य हैं; जैसे अपने विचारों को पूरी आज़ादी के साथ प्रस्तुत करने का अधिकार और जन-समर्थन जुटाने के प्रयत्न का अधिकार। या वे समूह अपनी शक्तियों का उपयोग राजनीतिक शत्रुओं को समाप्त करने में कर रहे हैं। यदि वे पहला आचरण कर रहे हैं तो समझो कि वे अपने देश के प्रति पूरी तरह वफ़ादार हैं, न कि वे अपने समूह के लाभ के प्रति वफ़ादार हैं और यदि वे दूसरे प्रकार का आचरण कर रहे हैं तो हमें यह समझना चाहिए कि वे जिस सरकार को गिरा कर आए हैं, उससे अधिक वफ़ादारी देश के प्रति के भी नहीं कर रहे हैं। इसका बोध हमें अत्यधिक देरी से जाकर ही होता है। (686 शब्द)

Ans. वफादारी को निर्विवाद रूप से उत्तम गुण माना जाता हैं, चाहे वह परिवार के प्रति हो, व्यक्ति के प्रति हो या पूरे देश के प्रति। वफादारी का आशय विपत्ति में रुचिपूर्ण तरीके से सहायता के लिए तत्पर रहना है। बेवफा होने पर व्यक्ति अपनों को ही क्षति पहुँचाने अथवा सहायता न करने के लिए तत्पर हो जाता है। हालांकि ऐसी स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है जब वफादार की पहचान करना कठिन हो, जैसे कि एक बालक द्वारा शिक्षा को स्थगित करके धन कमाने के अपने माता-पिता के अनुरोध को अस्वीकार करना। इस स्थिति में यदि माता-पिता गरीब एवं असहाय हों तभी बालक को बेवफा कहा जाएगा। यदि बालक भविष्य में सफल हो जाता है तो वह युवावस्था की बेवफाई का प्रायश्चित करेगा।

यह स्थिति और भी जटिल तब हो जाती है जब कोई व्यक्ति अपनी सरकार के विरुद्ध यह सोच कर उग्र विद्रोह कर देता है कि यह सरकार निकम्मी है, इस स्थिति में उसके राष्ट्र विरोधी होने तथा सरकार विरोधी होने के मध्य अंतर कर पाना कठिन हो जाता है। तीसरी स्थिति यह हो सकती है कि वह निहित स्वार्थ से प्रेरित होकर विद्रोह कर रहा हो न कि देशवासियों के हित में। सत्य का पता तभी चल सकता है जब विद्रोह

सफल हो जाए एवं विद्रोह का नेतृत्वकर्ता कुछ आचरण करे। यदि उनका आचरण उनके राजनीतिक विरोधियों के प्रति समतापूर्ण होता है तो वे देश के प्रति वफादार कहे जा सकते हैं। यदि ऐसा नहीं होता है तो वे वफादार नहीं कहे जाएँगे। हालांकि इस बात का पता अत्यधिक देरी से ही चल सकता है।

Q4. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए: (1 × 20 = 20)

एक अमीर अपने जहाज़ पर समुद्री यात्रा कर रहा था, उसी समय एक तूफ़ान आया। जहाज़ पर एक गुलाम जो पहली बार समुद्री यात्रा कर रहा था, आतंकित हो कर रोने-चिल्लाने लगा। यह कुछ देर तक चलता रहा और कोई भी उसे चुप नहीं करा सका। क्रोधित हो कर अमीर ने पूछा "क्या यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जो इस नीच कायर को चुप करा सके?"

एक दार्शनिक भी उस जहाज़ पर यात्रा कर रहा था। उसने अमीर से कहा– "मैं इस आदमी को चुप करा सकता हूँ। महोदय, आप मुझे बस इस बात की अनुमति दें कि मैं जो चाहूँ, इसके साथ करूँ।" अमीर ने कहा– "आपको अनुमति दी जाती है, आप जो चाहें, करें।"

दार्शनिक ने कुछ नाविकों को बुलाया एवं उन्हें आदेश दिया कि इस गुलाम को समुद्र में फेंक दिया जाए। नाविकों ने ऐसा ही किया। निरुपाय हो कर उस ग़रीब आदमी ने भयवश चिल्लाते हुए अपने हाथ-पाँव बड़ी तीव्रता से चलाने शुरू कर दिए। लेकिन कुछ ही समय में दार्शनिक ने नाविकों को यह आदेश दिया कि वह उस गुलाम को जहाज़ पर वापस ले आएँ। जहाज़ पर आते ही पस्त और भयभीत गुलाम बिल्कुल चुप हो गया। अमीर इस आकस्मिक परिवर्तन पर चकित हो गया। उसने दार्शनिक से इसका कारण पूछा। दार्शनिक बोला– "हम कभी यह नहीं समझते कि हम किसी भी स्थिति में कितने ठीक-ठाक हैं जब तक कि हम किसी बदतर स्थिति में नहीं पहुँच जातें।"

Ans. A rich man was on a voyage on his ship; at the same time a storm arrived. A slave who was travelling for the first time at the ship, being panicked he began to shout. This went on for a while and no one could silence him. Being enraged, the rich man asked, "Is there anyone here who can silence this lowly coward?"

A philosopher was also travelling on that ship. He told the rich man, "I can silence this man. Sir, you just allow me to do whatever I want with him." The rich man said, "You are allowed, do whatever you want."

The philosopher called some sailors and ordered them to throw the slave into the sea. The sailors did the same. Being solution-less, the poor man started screaming with fear and moving his hands and feet with great intensity. But after a short time, the philosopher ordered the sailors to bring the slave back to the ship. As soon as he arrived on the ship, the tired and frightened slave became absolutely silent. The rich man was amazed at this sudden change.

He asked the philosopher reason about it. The philoshpher said, "We never understand how well we are in any circumstance until we get into a worse situation."

Q5. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए: (1 × 20 = 20)

Man has always been fascinated by dreams, He has always tried to find explanations for his dreams. Perhaps dreams tell us about the future or the past, perhaps they tell us about our deepest fears and hopes. I don't know. Today, I want to give you a completely different explanation. But before I do so, I must give you one or two facts about dreams. First of all, everybody dreams. You often hear people say, 'I never dream', when they mean, 'I can never remember my dreams.' When we dream, our eyes moves rapidly in our sleep as if we were watching a moving picture, following it with our eyes. This movement is called 'REM', that is Rapid Eye Movement. REM sleep is the sleep that matters. Experiments have proved that if we wake people up throughout the night during REM, they will feel exhausted the next day. But they won't feel tired at all if we wake them up at times when they are not dreaming. So the lesson is clear: it is dreaming that really refreshes us, not just sleep. We always dream more if we have had to do without sleep for any length of time.

If that is the case, how can we explain it? I think the best parallel I can draw is with computers. After all, a computer is a very primitive sort of brain. To make a computer work, we give it a program. When it is working, we can say it is 'awake'. if ever we want to change the program, that is to change the information we put into the computer, what do we do? Well, we have to stop the computer and put in a new program or change the old program.

Ans. मनुष्य हमेशा सपनों से मोहित होता रहा है। उसने हमेशा अपने सपनों को समझने की कोशिश की है। शायद सपने हमें भविष्य या अतीत के बारे में बताते हैं, शायद वे हमें हमारे गहरे डर और आशाओं के बारे में बताते हैं। मुझे नहीं पता। आज मैं आपको सपनों के बारे में बिल्कुल पृथक् व्याख्या देना चाहता हूँ, परन्तु इसके पहले मैं सपनों के बारे में एक-दो, तथ्य देना चाहता हूँ। सबसे पहले, सभी सपने देखते हैं। आपने अक्सर लोगों को कहते सुना है, मैं कभी सपने नहीं देखता, तब उनका मतलब होता है, मैं कभी अपने सपनों को याद नहीं रख सकता। जब हम सपने देखते हैं तब नींद में हमारी आँखें तेजी से चलती हैं, जैसे हम आँखों से कोई फिल्म देख रहे हों। इस गतिविधि को आरईएम (REM) कहा जाता है। यह तीव्र नेत्र गति (रैपिड आई मूवमेण्ट) है। आरईएम निद्रा वह, निद्रा है जो मायने रखती है। प्रयोगों से यह सिद्ध हुआ है कि यदि हम आरईएम के दौरान रातभर लोगों को जगाकर रखें तो अगले दिन उन्हें थकान महसूस होगी। लेकिन वे बिल्कुल थकावट महसूस नहीं करते, अगर हम उन्हें जगा देते हैं जब वे सपने नहीं देख रहे होते हैं। अत: यह स्पष्ट है: यह सपना ही है, जो हमें वास्तव

में तारोताजा करता है, न कि केवल नींद। हम हमेशा अधिक सपने देखते हैं, अगर हमें लम्बे समय तक बिना सोये रहना पड़ा हो।

अगर ऐसा है, तो हम इसे कैसे समझा सकते हैं? मुझे लगता है इसकी बेहतर समानता कम्प्यूटर के साथ हो सकती है। आखिरकार कम्प्यूटर मस्तिष्क का एक प्रमुख प्रकार है। कम्प्यूटर के कार्य करने के लिए हम इसे एक प्रोग्राम देते हैं। जब यह काम कर रहा होता है तो हम कह सकते हैं कि यह जाग रहा है। अगर कभी हम कम्प्यूटर में डाली गई जानकारी को बदलना चाहते हैं, तो हम क्या करते हैं? हमें कम्प्यूटर को बंद करना होगा या पुराने प्रोग्राम को बदलना होगा।

Q6. (a) निम्नलिखित मुहावरों को अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए: (2×5 = 10)

(i) अंगारों पर लोटना **(ii)** ईंट का जवाब पत्थर से देना

(iii) खटाई में पड़ना **(iv)** घोड़े बेच कर सोना

(v) जूते चाटना

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए: (2×5 = 10)

(i) गलीमत है कि मैं गिरते गिरते बच गया।

(ii) हम जाता हूँ।

(iii) लड़की खाता है।

(iv) हमने स्कूल जाना है।

(v) उसने मुझे दिल्ली बुलाई।

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए: (2×5 = 10)

(i) पंकज **(ii)** ईर्ष्या

(iii) आदित्य **(iv)** अर्जुन

(v) आकाश

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह से वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए और उनके बीच का अंतर भी शब्दार्थ में लिखित रूप में वर्णित हो: (2×5 = 10)

(i) प्रमाण – प्रणाम **(ii)** अक्षर – अक्षत

(iii) आभास – आवास **(iv)** प्रतिज्ञा – प्रतीक्षा

(v) अधम – अधर्म

Ans. (a) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(i) अंगारों पर लोटना

अर्थः अत्यधिक दु:ख सहना

वाक्य प्रयोगः ऑफिस के कार्यक्रम में न शामिल किया जाना मेरे लिए अंगारों पर लोटने जैसा था।

(ii) ईंट का जवाब पत्थर से देना

अर्थः कड़ा प्रतिरोध करना

वाक्य प्रयोगः भारतीय सैन्य बलों ने पाकिस्तानी सेना के किसी भी हरकत पर ईंट का जवाब पत्थर से देने का फैसला किया है।

(iii) खटाई में पड़ना

अर्थः रूक जाना

वाक्य प्रयोगः एन वक्त पर पाकिस्तान के अड़ियल रूख से कश्मीर पर वार्ता खटाई में पड़ गयी।

(iv) घोड़े बेच कर सोना

अर्थः बेफिक्र होना

वाक्य प्रयोगः हरिया खेतों में काम करके इतना थक गया कि घर आते ही घोड़े बेचकर सो गया।

(v) जूते चाटना

अर्थः चापलूसी करना

वाक्य प्रयोगः कुछ धूर्त लोग ही सफल होने के लिए जूते चाटने जैसा बर्ताव करते हैं।

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए।

(i) गलीमत है कि मैं गिरते गिरते बच गया।

शुद्ध रूपः गनीमत है कि मैं गिरते-गिरते बच गया।

(ii) हम जाता हूँ।

शुद्ध रूपः मैं जाता हूँ।

(iii) लड़की खाता है।

शुद्ध रूपः लड़की खाती है।

(iv) हमने स्कूल जाना है।

शुद्ध रूपः हमें स्कूल जाना है।

(v) उसने मुझे दिल्ली बुलाई।

शुद्ध रूपः उसने मुझे दिल्ली बुलाया।

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(i) पंकज – नीरज, जलज

(ii) ईर्ष्या – द्वेष, जलन

(iii) आदित्य – सूर्य, भास्कर

(iv) अर्जुन – पार्थ, गांडीवधर

(v) आकाश – नभ, अम्बर

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह से वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए और उनके बीच का अंतर भी शब्दार्थ में लिखित रूप में वर्णित हो।

(i) प्रमाण – प्रणाम

वाक्य प्रयोग: प्रत्यक्ष को प्रमाण (साक्ष्य) की आवश्यकता नहीं होती है, असत्य को दूर से प्रणाम (नमस्कार) कर लेना चाहिए।

(ii) अक्षर – अक्षत

वाक्य प्रयोग: अक्षर (वर्ण) के समूह को अक्षत (समूचा) रूप में शब्द कहा जाता है।

(iii) आभास – आवास

वाक्य प्रयोग: आभास (अहसास) होता है कि अपने आवास (घर) में रहना अत्यधिक सुखद होता है।

(iv) प्रतिज्ञा – प्रतीक्षा

वाक्य प्रयोग: प्रतिज्ञा (प्रण) को पूरा करने के लिए उचित समय की प्रतीक्षा (इंतजार) करनी चाहिए।

(v) अधम – अधर्म

वाक्य प्रयोग: अधम (निकम्मा) व्यक्ति अपने कार्यों में अधर्म (धर्म संगत नहीं) का ही अनुसरण करता है।

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2017 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र

Time allowed : Three hours *Maximum Marks : 300*

प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश:

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित हैं।
- उत्तर हिन्दी में ही लिखे जाएँगे, यदि किसी प्रश्न-विशेष में अन्यथा निर्दिष्ट न हो।
- जिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्धारित है, वहाँ इसका अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर, निर्धारित शब्द-संख्या की तुलना में काफी लंबा या छोटा है तो अंकों की कटौती की जा सकती है।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो खाली छोड़ा गया हो, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

Q1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 600 शब्दों में निबन्ध लिखिए: **(2 × 50 = 100)**

(a) तकनीक के अत्यधिक प्रयोग से उत्पन्न खतरे

(b) धर्मनिरपेक्षता लोकतंत्र की शक्ति है

(c) नोटबन्दी से भारतीय अर्थव्यवस्था को दीर्घ अवधि में होने वाले लाभ

(d) आयुर्वेद-पद्धति के प्रति पाश्चात्य देशों का आकर्षण

Ans. (a) "तकनीकी के अत्यधिक उपयोग से उत्पन्न खतरे"

विकास चाहे देश का हो या फिर व्यक्ति का, यह अनेक तरीकों से तकनीक से जुड़ा हुआ है। मानव जीवन के अस्तित्व और प्रगति के लिए जरूरी है कि हर पहलू में विज्ञान और तकनीक का इस्तेमाल हो। चिकित्सा, अर्थव्यवस्था, शिक्षा रक्षा एवं सुरक्षा, संचार, व्यापार, ऊर्जा आदि क्षेत्रों में तकनीकी विकास तथा नए शोध से क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। जहाँ एक ओर तकनीकी का अर्थ "ज्ञान व कौशल" से है, वहीं दूसरी तरफ तकनीकी का बढ़ता अत्यधिक प्रयोग मानव जीवन के समक्ष अनेक खतरे उत्पन्न कर रहा है।

तकनीक ने जहाँ एक तरफ इंसान को बहुत सारे फायदे पहुंचाए हैं, इसी के साथ साथ दूसरी तरफ इससे अनेक खतरे उत्पन्न हो रहे हैं। तकनीकी से औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिला है तो वहीं दूसरी तरफ औद्योगिक क्षेत्रों से निकलने वाले दूषित गैस व पानी ने पर्यावरण के संतुलन को पूरी तरह से बिगाड़ कर रख

दिया है। विज्ञान एवं तकनीकी सहायता से बनाए गए तमाम आधुनिक संसाधन जैसे गाड़ियाँ आदि के इस्तेमाल से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है और ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या पैदा हो गई है।

वहीं तकनीक से उत्पन्न कंप्यूटर, इंटरनेट मोबाइल, टीवी आदि ऐसे उपकरण बने हैं, जिनका इस्तेमाल अब मनुष्य अधिकतर जरूरत के लिए कम बल्कि मनोरंजन के लिए अधिक करने लगा, जिससे कि अनावश्यक समय की बर्बादी होती है। इसी के साथ घर बैठे दुनिया की सभी चीजों को मनुष्य इंटरनेट एवं तमाम आधुनिक उपकरणों के माध्यम से देख पाता है, जिससे मनुष्य में आलसीपन बढ़ रहा है। मनुष्य इस तकनीक का इतना आदि हो चुका है कि मोबाइल का प्रयोग, टीवी का प्रयोग, गेम खेलना, आदि से उसके स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बहुत अधिक बढ़ गई हैं। अभी हाल में ही में 'ब्लू व्हेल चैलेंज' जैसे गेम को खेलते हुए बहुत बच्चे आत्महत्या तक कर चुके हैं।

तकनीक के गलत उपयोग से क्राइम रेट में भी बढ़ोतरी हो रही है। इंटरनेट के माध्यम से गलत अफवाह फैला कर सांप्रदायिक हिंसा को बढ़ावा मिल रहा है। इसी के साथ इंटरनेट के माध्यम से युवाओं को इस्लामिक स्टेट जैसे आतंकी संगठन से जोड़ा जा रहा है एवं ट्रेंड किया जा रहा है, जिससे कि आतंकी हमलों को भी बढ़ावा मिल रहा है।

तकनीकी ने जहाँ आर्थिक क्षेत्र को बढ़ावा दिया है, इसी के साथ बैंक, एटीएम, आदि में धोखाधड़ी के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। तकनीक के माध्यम से बैंकों में सेंधमारी बढ़ गई है जिससे लाखों ग्राहकों का पैसा घर बैठे ही लोग चुरा रहे हैं।

कृषि क्षेत्र में भी तकनीकी के बढ़ते प्रयोग से गलत नतीजे सामने आ रहे हैं, जैसे कि उत्पादन में इजाफा करने वाली GM-Crop अपने दावों पर इतर साबित हो रही हैं। कई वैज्ञानिक आंकड़े बताते हैं कि GM-Crop के चारे ने जानवरों को न केवल नुकसान पहुंचाया है बल्कि दुधारू पशुओं के दूग्ध उत्पादन पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

इसी प्रकार 'डिजाइनर बेबी' की संकल्पना सामाजिक असमानता व भेदभाव की एक नई खाई पैदा करेगी। इससे समाज में एक नए वंचित वर्ग का जन्म होगा। समाज में पहले से मौजूद असमानता के बीच यह कदम उत्प्रेरक का कार्य करेगा। डिजाइनर बेबी को समाज में ज्यादा अवसर प्राप्त होंगे जिससे एक वर्ग समाज में तेजी से बढ़ने लगेगा।

अत: जहाँ एक तरफ तकनीकी ने मनुष्य के जीवन को आसान बना दिया है, वहीं इससे इनकार भी नहीं किया जा सकता कि किसी भी तकनीकी के साथ उसके

सही या गलत दोनों पक्ष जुड़े हैं। इसीलिए तकनक का प्रयोग न केवल मानव जीवन की उत्थान में, बल्कि इस तरह होना चाहिए कि इसका लाभ पूरे जीव जगत व प्रकृति को हो। तकनीकी का गलत प्रयोग मनुष्य जीवन के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरण के लिए खतरा बन सकता है।

(b) धर्मनिरपेक्षता लोकतंत्र की शक्ति है

भारत एक लोकतांत्रिक देश है जिसके लिए कई आधारभूत स्तंभ हैं; जैसे स्वतंत्रता, समानता, न्याय एवं धर्मनिरपेक्षता। इन तत्वों में धर्मनिरपेक्षता लोकतंत्र की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। आधुनिक भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है। इस देश के सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार है। यह भारत के नागरिकों को प्राप्त एक मौलिक अधिकार है। धर्मनिरपेक्षता सर्वधर्म समभाव तथा सामाजिक समरसता के आधार पर लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करता है। धर्मनिरपेक्षता लोकतंत्र की ऐसी शक्ति है जिससे व्यक्ति धर्म आधारित तनाव एवं टकराव से बचते हुए तथा अपने धर्म में आस्था रखते हुए भी दूसरे धर्मों के प्रति भी आदर भाव रखता है। धर्मनिरपेक्षता का आशय है कि राज्य शासन के द्वारा किसी भी धर्म में हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा। धर्मनिरपेक्षता ही यह सुनिश्चित करती है कि राज्य के कानून, नीतियाँ संविधान में सभी धर्मों के लोगों के लिए समान हैं तथा धर्म के आधार पर किसी भी व्यक्ति के साथ भी कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा।

भारतीय तथा पाश्चात्य संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता का आशय भिन्न है। पाश्चात्य संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता से आशय राज्य शासन के कार्यों में धार्मिक विषयों का अलगाव है। इसके साथ ही यहाँ आधुनिकता, ज्ञान विज्ञान, तर्क बुद्धि तथा अनुभव को भी धर्मनिरपेक्षता के स्थान में समाहित किया गया है। भारतीय संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता के स्थान पर पंथनिरपेक्षता शब्द का भी प्रयोग किया जाता है क्योंकि भारतीय परंपरा के अनुसार धर्म का अर्थ नैतिक कर्त्तव्य एवं सदाचरण से है, जिससे अलग होना संभव नहीं है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए 42वें संविधान संशोधन द्वारा प्रस्तावना में "पंथनिरपेक्ष" जोड़ा गया।

लोकतंत्र को सशक्त एवं स्थाई बनाने के लिए धर्मनिरपेक्षता आवश्यक है क्योंकि लोकतंत्र लोगों का, लोगों के लिए तथा लोगों द्वारा शासन है। यहाँ पर लोगों को प्राथमिकता दी गई है। अत: लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए समाज में सर्वधर्म समान, धार्मिक सहिष्णुता एवं धार्मिक सद्भाव बना रहे, इसके लिए धर्मनिरपेक्षता आवश्यक हो जाती है। धर्मनिरपेक्षता के अभाव में धार्मिक तनाव, धार्मिक कट्टरता तथा सांप्रदायिकता जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं जोकि लोकतंत्र के लिए खतरा है तथा लोकतंत्र के लिए चुनौती भी पैदा करती है। हालांकि आज की युवा पीढ़ी जाति, वंश और धार्मिक अंतरों को अधिक महत्व नहीं देती है, बल्कि कंधे

से कंधा मिलाकर विकास कार्यों में सहभागिता तथा सभी धार्मिक सम्मेलनों में शामिल होने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यही धर्मनिरपेक्ष राज्य की निशानी है। भारतीय संविधान के अनुसार भारत का कोई राष्ट्रीय धर्म नहीं होगा। राज्य सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करेगा। न ही राज्य धार्मिक आधार पर शिक्षा का प्रचार व प्रसार करेगा, न ही लोगों को धार्मिक आधार पर शिक्षा का प्रसार करने की स्वतंत्रता प्राप्त है। लोकतांत्रिक भावना के अनुरूप देश के नागरिकों को यह छूट है कि वह किसी भी धर्म या पंथ में अपनी आस्था रख सकते हैं, अपने धार्मिक रीति-रिवाजों के अनुसार पूजा पाठ कर सकते हैं। अपने धर्म का प्रचार-प्रसार कर सकते हैं। परंतु, आज के समय में कुछ सांप्रदायिक घटना देखने को मिलती हैं जो कि लोकतंत्र के लिए खतरा है। समाज में नफरत तथा अलगाव की भावना को बढ़ावा मिलता है जो कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश के लिए हानिकारक है।

अत: लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए तथा वैश्विक स्तर पर स्थायित्व प्रदान करने हेतु धर्मनिरपेक्षता अति आवश्यक है। धर्मनिरपेक्षता से सामाजिक समरसता तथा सामाजिक सद्भाव में वृद्धि होती हैं, जिससे कि लोकतंत्र को मजबूती प्रदान होती है। अत: धार्मिक उन्माद, धार्मिक कट्टरता आदि प्रवृत्ति पर रोक लगाकर धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे कि हमारे देश का लोकतंत्र और अधिक मजबूत हो सके और सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना बनी रहे।

(c) नोटबंदी से भारतीय अर्थव्यवस्था को दीर्घ अवधि में होने वाले लाभ

भारत एक विकासशील देश है जो दिन प्रतिदिन विकास की बुलंदियों को छूता जा रहा है। ऐसे में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए नोटबंदी करने का निर्णय बहुत सही था, लेकिन यह प्रक्रिया कठिन भी था। ऐसा करने से बहुत से आम लोगों को तकलीफ हुई, परंतु भ्रष्टाचार और काले धन जैसी समस्या कम हुई जिसके कारण कहा जा सकता है कि भारत की अर्थव्यवस्था में सुधार की नई क्रांति आई। नोटबंदी विमुद्रीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सरकार देश में प्रचलित पुरानी मुद्रा को बंद कर देती है और नई मुद्रा को लागू करती है। ऐसा ही 8 नवंबर 2016 को भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विमुद्रीकरण की घोषणा की। हालांकि ऐसा पहली बार नहीं हुआ, भारत में अभी तक 3 बार विमुद्रीकरण हो चुका है।

विमुद्रीकरण का उद्देश्य बहुत व्यापक था, एक तरफ इसका उद्देश्य नकली नोट में काले धन पर प्रहार करना था, वहीं दूसरी तरफ प्रत्यक्ष कर के दायरे में अधिक से अधिक लोगों को लाना, आतंकी फंडिग पर रोक लगाना, नक्सलवाद पर रोक लगाना तथा केस आधारित भुगतान व्यवस्था को कम करना था। विमुद्रीकरण

को हम तात्कालिक एवं दीर्घकालिक रूप में देख सकते हैं। तात्कालिक रूप में विमुद्रीकरण एक आपदा के समान लगता है क्योंकि रातों-रात की गई घोषणा ने लोगों को आश्चर्य में डाल दिया। इससे हर वर्ग के लोग प्रभावित हुए। मजदूर, किसान, व्यापारी, छात्र सभी वर्ग के लोगों को बैंकों की लाइन में खड़ा होना पड़ा था। अगर विमुद्रीकरण का आधिकारिक रूप से विश्लेषण करें तो हमें इसके कई सकारात्मक लाभ प्राप्त होंगे।

- देश में ज्यादातर काला धन उच्च मुद्रा में संचित होता है और वह अधिकतर मुद्रा भ्रष्टाचारियों के पास थी, विमुद्रीकरण होने से यह महज एक कागज का टुकड़ा बन गई।
- देश के अंदर आंतरिक और बाह्य सुरक्षा को प्रभावित करने के लिए भी अधिकतर काला धन ही बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जाता है। विमुद्रीकरण होने पर इन गतिविधियों पर रोक लग गई।
- देश के अंदर नकली मुद्रा का प्रचलन भी बड़े पैमाने पर बढ़ गया था, जिसकी वजह से देश की अर्थव्यवस्था प्रभावित हो रही थी। विमुद्रीकरण होने पर नकली मुद्रा प्रचलन से बाहर हो गई।
- भारत के अंदर नक्सलवाद की गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए अधिकतर काले धन का प्रयोग किया जाता था, जिससे कि वह हथियार खरीदने में सक्षम होते थे। विमुद्रीकरण होने पर इसमें कमी आई।
- काला धन बैंकों में वापस गया, जिससे कि बैंक दर कम हुई और कम ब्याज दर पर बैंक ऋण प्रदान करेंगे और बाजार में मुद्रा की आपूर्ति बढ़ेगी।
- कर संग्रह बढ़ेगा, जिससे सरकार के राजकोषीय घाटे में कमी आएगी।
- नोटबंदी के बाद से डिजिटल लेन-देन में बढ़ोतरी दिखाई दी। यह देश के लिए लाभदायक होगा क्योंकि डिजिटल लेन-देन में नगदी लेन-देन की अपेक्षा अधिक पारदर्शिता होती है।
- आतंकी फंडिंग में काफी हद तक रोक लगी।
- हवाला कारोबार में कमी आई क्योंकि यह पूरा कारोबार कैश में ही होता है और इसमें टैक्स की भी चोरी होती है।
- राजनीति और चुनावी प्रक्रिया में भी पारदर्शिता आई।

भ्रष्टाचार रोकने के लिए सरकार के इस प्रयास से हालांकि अर्थव्यवस्था में कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिले, परंतु काले धन एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ सरकार के द्वारा किया गया यह प्रयास सही था, क्योंकि भारत के अंदर भ्रष्टाचार, काला धन, आदि की समस्या व्यापक पैमाने पर बढ़ गई थी, जिसे खत्म करने

के लिए नोटबंदी जैसा निर्णय लेना आवश्यक हो गया था। नोटबंदी से काफी हद तक अर्थव्यवस्था के डिजिटलीकरण में सहायता मिली तथा अप्रत्यक्ष कर संग्रह में वृद्धि हुई।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि विमुद्रीकरण किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को दीर्घकालीन लाभ पहुंचाता है तथा साथ ही यह राष्ट्र को आर्थिक मजबूती प्रदान करता है। अत: सरकार द्वारा लिया गया यह निर्णय सराहनीय है।

(d) आयुर्वेद पद्धति के प्रति पाश्चात्य देशों का आकर्षण

आज भारतीय वैदिक स्वास्थ्य प्रणाली 'आयुर्वेद' की स्वीकारोक्ति विश्व स्तर पर बढ़ रही है। इसकी पुष्टि अमेरिका और इंग्लैंड में दो शासकीय घोषणाओं से होती है। पहली है, पिछले वर्ष इंग्लैंड द्वारा 'कंप्लीमेंट्री एंड अल्टरनेटिव मेडिसिन' की श्रेणी में प्रयुक्त चिकित्सा पद्धति को वैज्ञानिकता प्रदान करने के लिए हाउस ऑफ लॉर्ड्स समिति का गठन। इस समिति का गठन अपने आप में अद्‌भुत है क्योंकि इससे आयुर्वेद के पुरातन स्वरूप को नए वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रयोग किया जाएगा और इसमें कोई संदेह नहीं है कि आयुर्वेद में निहित गंभीर वैज्ञानिकता पुन: प्रकट होगी तथा प्राचीनता को नवीनता के आधार पर कसा जा और परखा जाएगा, इससे पुरातन चिकित्सा नए रूप में प्रकट होगी। दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रयास है – अमेरिका के एक प्रभावशाली आयोग द्वारा भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा को पश्चिमी चिकित्सा पद्धति की तुलना में अधिक कारगर एवं प्रभावशाली बताना और नए वैज्ञानिक ढंग से इसका प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग करने पर बल देना।

ऐलोपैथी दवाओं का अभ्यस्त पश्चिमी जगत आज इसी कारण घोर निराशा एवं हताशा से भर गया है, क्योंकि जिस रोग के लिए इन दवाओं का प्रयोग किया जाता है, वह रोग ठीक होना तो दूर, दूसरे अन्य पहचान में न आने वाले लोगों का प्रादुर्भाव हो जाता है। परिणामत: पश्चिमी जनमानस में इन दवाओं के प्रति गहरी अरुचि एवं संदेह का भाव घर करने लगा है। ऐसे में पूर्णतया निरापद चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद को अपनाने, प्रयोग-उपयोग करने की प्रक्रिया चल पड़ी है और इसी का प्रभाव-परिणीति है कि ब्रिटेन में आयुर्वेद एवं अन्य वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति से उपचार करने वाले चिकित्सकों की संख्या 50 हजार हो गई है। बी.बी.सी. द्वारा कराए गए एक स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार ब्रिटेन में लोग वैकल्पिक दवा हेतु प्रतिवर्ष 1.6 अरब पाउंड खर्च करते हैं। इसमें से 5 करोड़ पाउंड आयुर्वेदिक दवा के लिए नियोजित होता है। वहाँ पर विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों के प्रयोगों का प्रचलन बढ़ने लगा है।

ब्रिटेन के समान अमेरिका में भी आयुर्वेद उपचार पद्धतियों के प्रति रुझान व रुचि में अभिवृद्धि हुई है। अमेरिका के स्वास्थ्य मंत्री के नेतृत्व में गठित व्हाइट हाउस

के एक आयोग की रिपोर्ट के अनुसार पश्चिमी चिकित्सा प्रणाली की अपेक्षा पूर्वी स्वास्थ्य प्रणाली ज्यादा उपयोगी उपादेय सिद्ध हो रही है। आयोग का मानना है कि अधिकांश अमेरिकी अब ऐलोपैथी की बजाय आयुर्वेद, योग आदि की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। यह आकर्षण अमेरिका में आयुर्वेद की लोकप्रियता को प्रदर्शित करता है और इसी का प्रभाव है कि अमेरिका में सन् 1990 से 1997 के बीच कराए गए एक स्वास्थ्य सर्वेक्षण में इस चिकित्सा पद्धति से उपचार कराने वालों की संख्या 33.8% से बढ़कर 42.1% हो गई है। विशुद्ध रूप से आयुर्वेदिक उपचार में 2.5 से 12.1% की वृद्धि हुई है। इसी कारण अमेरिका ने वर्ष 1997 में इस चिकित्सा पद्धति पर 27 अरब डॉलर पर खर्च किया।

आयुर्वेद की इस निरापद एवं उत्कृष्ट शिक्षा प्रणाली से रूस भी अछूता नहीं है। वहां पर यह प्रणाली खूब लोकप्रिय हो रही है। इसी वजह से रूसी सरकार ने भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा पंचकर्म को शासकीय मान्यता प्रदान कर दी है। यही नहीं रूसी प्रशासन एवं सरकार ने भारत सरकार से आयुर्वेद और पंचकर्म से संबंधित पाठ्य-पुस्तकों, साहित्य आदि को रूसी भाषा में अनूदित, प्रकाशित करने का भी अनुरोध आग्रह किया है। इसके अलावा पोलैंड भी भारत सरकार के सहयोग से आयुर्वेद के अनेक पहलुओं पर अनुसंधान-अन्वेषण कर रहा है। वहां भी यह उपचार प्रक्रिया विकसित होने लगी है। इस प्रकार कनाडा, जर्मनी, फ्रांस, हांगकांग, ऑस्ट्रेलिया तथा कई अरब देशों में भी आयुर्वेदिक उपचार प्रक्रिया को प्रश्रय मिला है।

भारत में उपजी-बढ़ी आयुर्वेदिक उपचार प्रक्रिया की विश्वव्यापी स्वीकृति एवं उपयोग इसके पीछे निहित वैज्ञानिकता एवं समग्रता को मान्यता प्रदान करते हैं। यह पुरातन चिकित्सा पद्धति अपने-आप में संपूर्ण एवं समग्र है। इसमें निरोगी काया एवं मानसिक स्वास्थ्य का समग्र विधान भरा पड़ा है। इसी कारण भारत द्वारा अनुभव एहसास की गई इस प्राचीन एवं पुरातन पद्धति की ओर पश्चिमी जगत भी उन्मुख आकर्षित हो रहा है। अत: आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को 21वीं सदी की चिकित्सा पद्धति की उपाधि से अलंकृत किया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। ऋषियों द्वारा खोजी गई इस चिकित्सा पद्धति में ही आधुनिक मानव के परिपूर्ण स्वास्थ्य, निरोगता एवं प्रसन्नता का मर्म छिपा पड़ा है।

Q2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए: (12×5=60)

मस्तिष्क का सर्वोत्तम भोजन पुस्तकें हैं। एक विचारक का कथन है कि मानव जाति ने जो कुछ सोचा, किया और पाया है, वह पुस्तकों में सुरक्षित है। मानव-सभ्यता और संस्कृति के विकास का पूरा श्रेय पुस्तकों को जाता है। पुस्तकों का महत्त्व और मूल्य

बेजोड़ है। पुस्तकें अंत:करण को उज्ज्वल करती हैं। अच्छी पुस्तकें मनुष्य को पशुत्व से देवत्व की ओर ले जाती हैं, उसकी सात्विक वृत्तियों को जागृत कर उसे पथभ्रष्ट होने से बचाती हैं एवं मनुष्य, समाज और राष्ट्र का मार्गदर्शन करती हैं। पुस्तकों का हमारे मन और मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव पड़ता है और वे प्रेरणादायक होती हैं।

पुस्तकें मनोरंजन के क्षेत्र में भी मानव की सेवा करती हैं। यहाँ मनोरंजन का तात्पर्य केवल हास-विलास से नहीं है अपितु मनोरंजन का अर्थ गहन है। जो पुस्तकें पाठकों को गहराई से छू लेती हैं और उनके मन को रमा लेती हैं वे सच्चे अर्थों में मनोरंजक पुस्तकें हैं। जो पुस्तक पाठक को जितनी गहराई में ले जाती है, वह उतनी ही आह्लादकारी होती है। यों हल्के-फुल्के साहित्य का महत्त्व भी कम नहीं है। ऐसा साहित्य मनुष्य के तनाव को एक बड़ी सीमा तक कम कर देता है और उसके मुरझाए मन को खिला देता है।

अच्छी पुस्तकें मानव को ज्ञान और मनोरंजन प्रदान करती हैं। विज्ञान, वाणिज्य, कला और कानून की पुस्तकें मानव के ज्ञान में वृद्धि करती हैं। इन्हें पढ़ कर मनुष्य अपने भीतर आंतरिक शक्ति का अनुभव करता है। सच्ची बात तो यह है कि पुस्तकें हमारी सच्ची मार्गदर्शक हैं। वे हमें नए-नए क्षेत्रों और रहस्यों का ज्ञान तो कराती ही हैं, साथ ही चिंतन और मनन के लिए भी बाध्य करती हैं। पुस्तकें मनुष्य की दुविधा को समाप्त कर दृढ़ संकल्प जगाती हैं। गाँधी जी 'गीता' को माँ की संज्ञा देते थे क्योंकि प्रत्येक कठिन स्थिति में वह उनका मार्गदर्शन करती थी। पुस्तकें ऐसी मार्गदर्शक हैं जो न तो दंड देती हैं, न क्रोधित होती हैं और न ही प्रतिदान में कुछ माँगती हैं लेकिन साथ ही अपना अमृत-तत्त्व देने में कोई कोताही नहीं बरतती हैं।

पुस्तकें मनुष्य को सच्चा सुख और विश्रांति प्रदान करती हैं। पुस्तक-प्रेमी सबसे अधिक सुखी होता है। वह जीवन में कभी शून्यता का अनुभव नहीं करता है। पुस्तकों पर पूरा भरोसा किया जा सकता है।

विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं। पुस्तकों में निहित विचार सम्पूर्ण समाज की कायापलट करने में समर्थ हैं। आज का संसार विचारों का ही संसार है। समाज में जब भी कोई परिवर्तन आता है अथवा क्रान्ति होती है, उसके मूल में कोई न कोई विचाधारा ही होती है। श्रेष्ठ पुस्तकें समाज में नवचेतना का संचार करती हैं और समाज में जनजागृति लाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। पुस्तकें पढ़ने से मनुष्य का दृष्टिकोण व्यापक हो जाता है और उसमें उदात्त-भावना आ जाती है।

पुस्तकें ऐसी अमरनिधि हैं जो पिछली पीढ़ी के अनुभवों को अविकल रूप में अगली पीढ़ी तक पहुँचाती हैं। इनमें निहित ज्ञान को कोई नष्ट नहीं कर सकता। संक्षेप में पुस्तकों का महत्त्व अतुलनीय है।

(a) पुस्तकों को बेजोड़ क्यों माना गया है? **(12)**

(b) इस कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है कि 'मनोरंजन का अर्थ गहन है'? **(12)**

(c) पुस्तकें हमारी सच्ची मार्गदर्शक क्यों हैं? **(12)**

(d) गाँधी जी 'गीता' को माँ की संज्ञा क्यों देते थे? **(12)**

(e) पुस्तकें समाज में नवचेतना का संचार कैसे करती हैं? **(12)**

Ans. (a) पुस्तकें मनुष्य को विचारशील बनाती हैं, जिससे मनुष्य पशुत्व से देवत्व की ओर जाता है। कहा भी गया है कि मानव जाति ने जो कुछ सोचा, किया और पाया है वह पुस्तकों में सुरक्षित है। पुस्तकों के इन्हीं गुणों को रेखांकित करते हुए लेखक ने पुस्तकों को बेजोड़ बताया है।

(b) 'मनोरंजन का अर्थ गहन है' से लेखक का आशय मनोरंजन को हास-विलास से पृथक् अंतर्मन को छू लेने से है। मनोरंजन से तात्पर्य मनुष्य के विचारों पर गहरा प्रभाव डालने एवं आंतरिक आह्लाद उत्पन्न करना है। यह मनुष्य के अवचेतन मन को प्रभावित करता है।

(c) पुस्तकों को मनुष्य का सच्चा मार्गदर्शक माना जाता है क्योंकि पुस्तकें हमें चिंतन-मनन के लिए प्रेरित करती हैं। पुस्तकें बिना किसी पूर्वाग्रह के हमारा मार्गदर्शन करती हैं। पुस्तकें हमें ज्ञान और मार्गदर्शन दोनों प्रदान करती हैं तथा विभिन्न विषयों जैसे विज्ञान, वाणिज्य, कला एवं विधि इत्यादि की जानकारी उपलब्ध कराती हैं।

(d) गांधी जी ने 'गीता' को 'माँ' की संज्ञा दी है। गांधी जी के अनुसार, उन्होंने इस पुस्तक से कठिन परिस्थितियों में मार्गदर्शन प्राप्त किया। उनका मानना था कि पुस्तकें क्रोध जैसे मानवीय दुर्गुणों से रहित होती हैं तथा अपने अमृत तत्व (ज्ञान) का सतत् प्रसार करती हैं। गांधी जी इन्हीं गुणों के कारण गीता की तुलना माँ से करते हैं।

(e) पुस्तकें समाज में नवीन विचारों का निवेश करती हैं। पुस्तकों में निहित विचार संपूर्ण समाज का कायाकल्प करने की क्षमता से युक्त होते हैं। पुस्तकें अपने इन्हीं गुणों के कारण नवचेतना का संचार करती हैं। इस प्रकार पुस्तकें समाज में जन जागृति लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

Q3. निम्नलिखित अनुच्छेद का सारांश लगभग एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। इसका शीर्षक लिखने की आवश्यकता नहीं है। सारांश अपने शब्दों में ही लिखिए। (60)

श्रम संसार में सफलता प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण साधन है। श्रम कर के ही हम अपनी आकांक्षाओं को पूरा कर सकते हैं। संसार कर्मश्रेत्र है अत: कर्म करना ही हम सबका धर्म है। किसी भी कार्य में हमें तभी सफलता मिल सकती है जब हम परिश्रम करें।

श्रम ही जीवन को गति प्रदान करता है। यदि हम श्रम की उपेक्षा करते हैं तो हमारे जीवन की गति रुक जाती है। अकर्मण्यता हमें ऐसे घेर लेती है कि उसके घेरे से निकलना कठिन हो जाता है, जबकि परिश्रमी व्यक्ति सभी प्रकार की कठिनाइयों से जूझ कर आगे बढ़ता और चहुँमुखी सफलता प्राप्त करता है। वह भाग्य का सहारा नहीं लेता बल्कि निरन्तर पुरुषार्थ करता है। यत्न करने पर भी परिश्रमी व्यक्ति को यदि सफलता नहीं मिलती तो वह निराश नहीं होता। वह यह जानने के लिए सचेष्ट रहता है कि कार्य में सफलता क्यों नहीं मिली अर्थात् वह अपनी कमियों को दूर करता है ताकि सफलता उसके कदम चूम सके।

इस संसार में हमें पग-पग पर संघर्ष कर अपना मार्ग स्वयं बनाना पड़ता है। हम चाहे जितने भी शक्तिशाली और साधन सम्पन्न क्यों न हों यदि हम श्रम करने से बचते हैं तो मात्र साधन सम्पन्नता हमें लक्ष्य की ओर नहीं ले जा सकती है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उनकी आशातीत सफलता के मूल में श्रम और शक्ति का बड़ा योगदान रहा है।

हमारे समाज में बहुत से लोग नियतिवादी या भाग्यवादी हैं। ऐसे व्यक्ति समाज की प्रगति में बाधक हैं। आज तक किसी भाग्यवादी ने संसार में कोई महान् कार्य नहीं किया। बड़ी-बड़ी खोजें, आविष्कार एवं निर्माण श्रम के द्वारा ही संभव हो सके हैं। हमारे साधन और प्रतिभा हमें केवल उत्प्रेरित करते हैं, हमारा पथ प्रदर्शन करते हैं पर लक्ष्य तक हम श्रम के माध्यम से ही पहुँचते हैं।

श्रम करने से यश और वैभव – दोनों की प्राप्ति होती है। जब हम अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए श्रम करते हैं तो हमारे मन को एक अद्‌भुत आनन्द मिलता है। अंत:करण का सारा पाप धुल जाता है और संतोष का अनुभव होता है। परिश्रमी व्यक्ति के लिए कोई भी कर्मकांड महत्त्वपूर्ण नहीं, अपने कर्त्तव्यपथ पर चलना ही उसकी साधना है। जब कोई किसान दिन भर कड़ी धूप में अपने खेत में मेहनत करता है और सायंकाल अपनी झोपड़ी में आनन्दमग्न हो कर लोक गीत गाता है तो उस समय उसकी स्वर लहरियों में जैसे दिव्य संगीत की सृष्टि होती है।

शारीरिक श्रम से मनुष्य को संतोष तो मिलता ही है, उसका शरीर भी स्वस्थ रहता है। आजकल शारीरिक श्रम के अभाव के कारण ही मनुष्य अनेक व्याधियों से घिरा हुआ है। शारीरिक श्रम प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। कहना न होगा कि शारीरिक श्रम करने वाले लोग दीर्घजीवी होते हैं। यह कहा ही जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। वह गंभीर से गंभीर तथ्य भी सहज में ही ग्रहण कर लेता है। विषम परिस्थितियों में भी वह घबराता नहीं है बल्कि साहस से उनका मुकाबला करता है। वह हर समस्या का समाधान खोज लेता है। मानसिक श्रम के महत्त्व को समझ कर ही हमारे ऋषि चिंतन में लीन रहते थे और जनहित को लेकर विचारशील रहते थे।

श्रम का एक विशिष्ट अर्थ भी है; इस अर्थ में श्रम उत्पादक भी है और अनुत्पादक भी। किसान परिश्रम से खेती करता है, यह उत्पादक श्रम की श्रेणी में आएगा। खेल खेलने में या व्यायाम करने में जो श्रम होता है, वह अनुत्पादक श्रम कहा जाएगा। इस श्रम का भी अपना महत्त्व है। गाँधी जी का कहना था कि जब श्रम ही करना है तो उत्पादक श्रम ही क्यों न किया जाए। यों गाँधी जी सभी प्रकार के श्रम में आनन्द का अनुभव करते थे।

जिस देश की जनता परिश्रमी होती है वही देश उन्नति करता है। जापान और जर्मनी ने विश्व युद्ध की विभीषिकाओं को झेलने के बाद भी अपना पुनःनिर्माण कर लिया, इसका कारण वहाँ की जनता का श्रम ही है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि श्रम ही जीवन का सुख है और सृजन का मूल भी है। (705 शब्द)

Ans. श्रम सभी सफलताओं के पीछे की कुंजी है। श्रम से पृथक् सफलता की कामना नहीं की जा सकती है। श्रम के अभाव में मनुष्य अकर्मण्यता के दुष्चक्र में फंसकर गतिहीन हो जाता है। इसके विपरीत परिश्रमी व्यक्ति कथित असफलताओं से घबराए बिना अपना आत्मावलोकन करके निरंतर पुरुषार्थपूर्ण उद्यम करता है। व्यक्ति कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, उसे संघर्ष-पथ पर चलना ही पड़ता है तथा अंततः परिश्रम से उसे सफलता मिलती ही है। भाग्यवादी लोग किसी महान कार्य को नहीं कर पाते हैं। साधन और प्रतिभा केवल उत्प्रेरक मात्र हैं, जबकि लक्ष्य की प्राप्ति श्रम से ही संभव है।

श्रम से प्राप्त सिद्धि हमें आनंद की अनुभूति कराती है। साथ ही इससे हमें यश और वैभव की प्राप्ति होती है। श्रम से मिलने वाला परम संतोष हमारे संगीत को मधुरता एवं दिव्यता प्रदान करता है। श्रम हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद होता है। कहा भी गया है कि 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।' ऐसा व्यक्ति विषम परिस्थितियों का भी सहजतापूर्वक मुकाबला कर लेता है। श्रम को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है। उत्पादक श्रम (कृषि कर्म) तथा अनुत्पादक श्रम (खेल-कूद) में गांधीजी उत्पादक श्रम को अधिक महत्व देते थे।

जिस देश की जनता परिश्रमी होती है, वह देश उन्नति करता है। इस संदर्भ में जापान, जर्मनी का उदाहरण लिया जा सकता है, जिन्होंने विश्व युद्ध की विभीषिका के बाद सफलतापूर्वक अपना पुनर्निर्माण किया।

Q4. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए: (20)

सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन ने सन् 1919 में इलाहाबाद नगरपालिका के अध्यक्ष का कार्यभार सँभाला। यह उनके लिए कड़िन परीक्षा थी क्योंकि वे म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन तो थे लेकिन अँग्रेज़ों का इतना रोब और दबदबा था

कि सामान्य भारतीय के लिए उनके बीच काम करना कठिन था। कार्यभार सँभालते ही टंडन जी ने देखा कि फ़ौजी छावनी वाले पानी का इस्तेमाल तो करते हैं लेकिन कर नहीं देते हैं। उन्होंने फ़ौजी छावनी के अधिकारी को यह नोटिस भेजा कि यदि एक माह के भीतर कर नहीं जमा किया गया तो उन्हें पानी देना बंद कर दिया जाएगा।

इस नोटिस से फ़ौजी छावनी में, पूरे शहर में एवं नगरपालिका के कार्यालय में तहलका मच गया। स्थानीय अख़बारों ने भी टंडन जी के उपर्युक्त आदेश को प्रमुखता से छापा। छावनी के पानी का कनेक्शन काटने के अंतिम दिन कई फ़ौजी अधिकारी म्युनिसिपल बोर्ड के दफ़्तर में पहुँचे और उनमें से वरिष्ठ अधिकारी ने टंडन जी से कहा कि आप छावनी का पानी बंद नहीं कर सकते। टंडन जी ने शांत भाव से कहा कि यदि आज कर नहीं जमा किया गया तो कल पानी का कनेक्शन काट दिया जाएगा।

अधिकारी क्रोध में चीखा-चिल्लाया लेकिन टंडन जी अविचलित रहे। अन्ततः सभी फ़ौजी अधिकारी वहाँ से चले गए। दफ़्तर में सनसनी फैल गयी। टंडन जी की धीरता और दृढ़ता देख कर सभी लोग विस्मित थे।

दूसरे दिन छावनी के अंग्रेज़ अधिकारियों ने कर जमा कर दिया।

Ans. In 1919, a renowned freedom fighter Rajarshi Purushottam Das Tandon took charge as the Chairman of Allahabad Municipality. It was a tough test for him because he was the Chairman of the Municipal Board, but the British were so strong and powerful that it was difficult for the ordinary Indian to work among them. As soon as he took charge, Tandon ji observed that the soldiers use the cantonment water but they do not pay taxes. He sent a notice to the army cantonment officer that if the tax was not deposited within a month, he would be deprived of water supply.

This notice created panic in the army cantonment, throughout the city and in the municipal office. Local newspapers also prominently published Tandonji's above order. On the last day of cutting the water connection of the camp, several military officers reached the office of the Municipal Board and among them the senior officer told Tandon ji that you cannot stop the water of the camp. Tandon ji said calmly that if the tax is not deposited today, then the water connection will be cut tomorrow.

The officer screamed in anger but Tandon ji remained calm. Eventually all the military officers left. Sensation spread in the office. Everyone was amazed to see Tandon's patience and perseverance.

On the second day the British officers of the cantonment paid tax.

Q5. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए: (20)

In ancient times in most civilized countries, for example, in Egypt, Iraq,

India, China and in the Roman Empire, many great irrigation works were constructed. In very hot countries water is even carried in underground channels to prevent it from being evaporated by the sun's heat. In modern times, great dams have been built across rivers and these are used for more than one purpose, hence they are called multipurpose undertakings. Firstly, such dams help to prevent floods, by controlling the amount of water which rushes down a river in the rainy season. This also prevents an enormous amount of damage and loss to farmers. Secondly, by storing up great quantities of water in the artificial lakes behind the dams, irrigation can be provided for many acres of land in the dry season, so that crops can be grown where none would have grown before. Thirdly, the people in the towns and cities in the neighbourhood can be certain of getting a sufficient supply of water for drinking and other purposes, even in the driest weather. Fourthly, the water stored up behind the dams is made to generate electric power by lettering it run through turbines.

Ans. प्राचीन काल में अधिकांश सभ्य देशों; जैसे मिस्र, इराक, भारत, चीन और रोमन साम्राज्य में, कई महान सिंचाई के साधनों का निर्माण किया गया था। अधिक गर्म देशों में पानी को भूमिगत चैनलों में भी सुरक्षित रखा जाता है ताकि इसे सूरज की ऊष्मा से वाष्पित होने से से बचाया जा सके। आधुनिक समय में नदियों पर विशाल बांध बनाए गए हैं और इनका उपयोग एक से अधिक उद्देश्यों से किया जाता है, इसलिए इन्हें बहुउद्देशीय उपक्रम कहा जाता है। सबसे पहले, इस तरह के बांध बाढ़ के पानी को रोकने में मदद करते हैं, जो वर्षा ऋतु में नदी के पानी की मात्रा को नियंत्रित करता है। यह किसानों को होने वाले भारी नुकसान से भी बचाता है। दूसरे, बांधों के पीछे कृत्रिम झीलों में पानी का भंडारण करके शुष्क मौसम में कई एकड़ भूमि के लिए सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जा सकती है, ताकि वहाँ भी फसलें उगाई जा सकें, जहाँ पहले कुछ भी नहीं उगता था। तीसरे निकटस्थ कस्बों तथा शहरों के लोग पीने एवं अन्य उपयोग के लिए पानी की पर्याप्त मात्रा प्राप्त करते हैं, यहाँ तक कि सूखे के मौसम में भी। चौथे बांध के पीछे भंडारित जल को टरबाइन के माध्यम से बिजली पैदा करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

Q6. (a) निम्नलिखित मुहावरों को अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए: (2×5 = 10)

(i) चाँद पर थूकना

(ii) हथेली पर सरसों उगाना

(iii) चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना

(iv) अपना उल्लू सीधा करना

(v) गड़े मुर्दे उखाड़ना

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए: (2×5 = 10)

(i) उन्होंने हाथ जोड़ा।

(ii) तेरे को देख कर उसके प्राण सूख गया।

(iii) कृपया आज का अवकाश देने की कृपा करें।

(iv) कुछ प्रकाशक लेखकों को निराशा देते हैं।

(v) नीता खाता है।

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए: (2×5 = 10)

(i) पुष्प

(ii) पृथ्वी

(iii) कामदेव

(iv) चन्द्रमा

(v) नदी

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह से वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ एवं अंतर स्पष्ट हो जाए: (2×5 = 10)

(i) लक्ष्य – लक्ष

(ii) स्वेद – श्वेत

(iii) सुधि – सुधी

(iv) भवन – भुवन

(v) परिताप – प्रताप

Ans. (a) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए। *(2×5 = 10)*

(i) चाँद पर थूकना

अर्थः व्यर्थ निंदा

वाक्य प्रयोगः गुणी व्यक्तियों की आलोचना करना चाँद पर थूकने जैसा होता है।

(ii) हथेली पर सरसों उगाना

अर्थः दुष्कर कार्य करना

वाक्य प्रयोगः भारत में गरीबी समाप्त करना हथेली पर सरसों उगाने के समान है।

(iii) चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना

अर्थः भयभीत होना

वाक्य प्रयोगः घरों के आस-पास बाघ को देख कर गाँव वालों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

(iv) अपना उल्लू सीधा करना

अर्थः मतलब निकालना

वाक्य प्रयोगः आजकल लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए चापलूसी करने में पीछे नहीं रहते हैं।

(v) गड़े मुर्दे उखाड़ना

अर्थः बीती बातों को दोहराना

वाक्य प्रयोगः अपनी बात को तर्क के आधार पर सिद्ध न कर पाने वाले लोग प्रायः गड़े मुर्दे उखाड़ने लगते हैं।

Ans. (b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए। **(2×5 = 10)**

(i) उन्होंने हाथ जोड़ा।

शुद्ध रूपः उन्होंने हाथ जोड़े।

(ii) तेरे को देख कर उसके प्राण सूख गया।

शुद्ध रूपः तुम्हें देख कर उसके प्राण सूख गये।

(iii) कृपया आज का अवकाश देने की कृपा करें।

शुद्ध रूपः आज का अवकाश देने की कृपा करें।

(iv) कुछ प्रकाशक लेखकों को निराशा देते हैं।

शुद्ध रूपः कुछ प्रकाशक लेखकों को निराश कर देते हैं।

(v) नीता खाता है।

शुद्ध रूपः नीता खाती है।

Ans. (c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए। **(2×5 = 10)**

(i) पुष्प - फूल, कुसुम

(ii) पृथ्वी - भूमि, धरा

(iii) कामदेव - रतिनाथ, मनोज

(iv) चंद्रमा - सुधाकर, चाँद

(v) नदी - सरिता, तारिणी

Ans. (d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ एवं अंतर स्पष्ट हो जाए *(2×5 = 10)*

(i) लक्ष्य - लक्ष

वाक्य प्रयोगः किसी भी लक्ष्य (ध्येय) की प्राप्ति के लिए लक्ष (गंतव्य) पर पहुंचने से पूर्व विराम नहीं लेना चाहिए।

(ii) स्वेद - श्वेत

वाक्य प्रयोगः स्वेद (पसीना) का रंग श्वेत (सफेद) नहीं होता है, यह रंगहीन अथवा मटमैला हो सकता है।

(iii) सुधि - सुधी

वाक्य प्रयोगः सुधी (बुद्धिमान) जनों की बातों का लोग प्रायः सुधि (संज्ञान) लेते हैं।

(iv) भवन - भुवन

वाक्य प्रयोगः बढ़ती जनसंख्या के रहने के लिए भवन (घर) की मांग बढ़ती जा रही है, ऐसा प्रतीत होता है कि लोगों के रहने के लिए भुवन (विश्व) भी कम पड़ जाएगा।

(v) परिताप - प्रताप

वाक्य प्रयोगः गलतियों पर परिताप (पश्चाताप) करना गुणीजनों के प्रताप (तेज) का सूचक है।

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2018 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र

Time allowed : Three hours *Maximum Marks : 300*

प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश:

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित हैं।
- उत्तर हिन्दी में ही लिखे जाएँगे, यदि किसी प्रश्न-विशेष में अन्यथा निर्दिष्ट न हो।
- जिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्धारित है, वहाँ इसका अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर, निर्धारित शब्द-संख्या की तुलना में काफी लंबा या छोटा है तो अंकों की कटौती की जा सकती है।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो खाली छोड़ा गया हो, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

Q1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 600 शब्दों में निबन्ध लिखिए: (1×100 = 100)

(a) लोकतंत्र में न्यायपालिका की भूमिका

(b) पर्यावरण और आत्मनिर्भरता

(c) भूमंडलीकरण में भाषा की भूमिका

(d) भारतीय अर्थव्यवस्था और उसकी चुनौतियाँ

Ans. (a) लोकतंत्र में न्यायपालिका की भूमिका

एक उदार लोकतांत्रिक राज्य में, न्यायपालिका की चार मुख्य जिम्मेदारियां होती हैं, जिसमें एक फैसले के साथ जवाब देने के लिए कानून का शासन तैयार करना और एक फैसले के साथ जवाब देना, विवादों का निपटारा करना, कानूनी जाँच करना और राज्य की राजनीति में एक खिलाड़ी होना शमिल है। इन चार कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए, एक उदार लोकतांत्रिक राज्य के बुनियादी सिद्धांतों को एक कानूनी लोकतंत्र और राज्य के सिद्धांतों के साथ बरकरार रखा जाना चाहिए। कोर नैतिक दुविधाओं, राजनीतिक विवादों और सार्वजनिक नीति के सवालों को संबोधित करने के लिए अदालतों पर और न्यायिक साधनों पर निर्भर यकीनन बीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी की शुरुआत की सबसे परिणामी घटनाओं में से एक है। नई न्यायिक समीक्षा से लैस, दुनिया भर में राष्ट्रीय उच्च न्यायालयों को कई मुद्दों को सुलझाने के लिए कहा गया है, जो अभिव्यक्ति और धार्मिक

स्वतंत्रता, प्रजनन और गोपनीय स्वतंत्रता, समानता के अधिकार के दायरे से भिन्न हैं। न्यायालयों का बढ़ता राजनीतिक महत्व न केवल पहले से अधिक विश्व स्तर पर व्यापक हो गया है, बल्कि इसने कई गुना अधिक विस्तृत, बहुपक्षीय घटना बनने की गुंजाइश बढ़ा दी है, जो कि न्यायाधीश की नीति-निर्धारण की 'मानक' अवधारणा से परे है।

न्यायपालिका की विशेषताओं को प्राप्त करने के लिए, विकसित लोकतंत्रों ने "न्यायपालिका की संस्कृति" पर भरोसा किया है। निष्पक्षता के कर्त्तव्य और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों को न्यायिक समीक्षा के माध्यम से अदालतों द्वारा महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि क्या सभी परिस्थितियों में, एक विशेष मामले में पालन की गई प्रक्रिया निष्पक्ष थी। न्यायिक समीक्षा के माध्यम से निर्णय लेने की पारदर्शिता और खुली प्रक्रिया देश की सुरक्षा और अपने नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रता के बीच एक स्वीकार्य संतुलन प्राप्त करने में सुरक्षा उपायों में से एक है। इस चुनौती से सफलतापूर्वक निपटने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। न्यायाधीश कानूनी समुदाय की अंतर्दृष्टि और ज्ञान पर भरोसा करना जारी रखेंगे। हालांकि विभिन्न प्रकार के विषयों से इनपुट भी आवश्यक है। सामुदायिक और सरकारी कर्मचारी, शिक्षाविद, सामाजिक, वैज्ञानिक और नीति निर्माता अधिक संपूर्ण दृष्टिकोण प्राप्त करने में न्यायपालिका की सहायता कर सकते हैं। जटिल संतुलन के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है जो नए कानून के तहत तर्कसंगत और विकास को बढ़ावा देगा। विधायिका को यह भी मानना होगा कि यह न्यायालय के कामकाज और अपने कर्मियों के चयन पर प्रभाव नहीं डाल सकती है क्योंकि यह नागरिकों और उनके प्रतिनिधियों के बीच कई विवादों का एक पक्ष है, जिसे न्यायपालिका को हल करना है। नीति बनाने या लागू करने में न्यायपालिकाओं की भूमिका एक ऐसा विषय है जिसमें प्रशासनिक निर्णयों की न्यायिक समीक्षा से परे अच्छी तरह से जुड़ाव है। जब नीति निर्माण को न्यायिक कार्य का हिस्सा माना जाता है, तो यह महत्त्वपूर्ण है कि यह समझ में आता है कि क्या कहा जा रहा है, और न्यायिक विधि किस तरह से संबंधित है। जबकि आम कानून में एक विकास है, बदलती जरूरतों के साथ-साथ तर्कसंगतकरण के लिए उपयुक्त दबाव की प्रतिक्रिया के रूप में, संविधान में कानूनों के ज्ञान और प्रस्तावित परिवर्तन का पालन करने के लिए न्यायाधीशों द्वारा इस तरह के विकास के लिए एक जवाबदेही है। वे अपने स्वयं के अनुशासन की प्रवृत्ति के भीतर इसे पूरा करते हैं।

हम लंबे समय से कॉर्पोरेट और वाणिज्यिक प्रतिद्वंद्विता में एक हथियार के रूप में मुकदमेबाजी के उपयोग के आदी हैं, लेकिन हम मुकदमेबाजी के राजनीतिक और सामाजिक रूप से आक्रामक उपयोग के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इससे कुछ अदालतों के सामने आने वाले कार्यों के चरित्र में भी बदलाव आया है और अदालतें जनता के व्यवहार के तरीके पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं।

न्यायपालिका हमारे लोकतांत्रिक समाज के रख-रखाव और सतत् विकास में जबरदस्त योगदान देने के लिए ज्ञान और अनुभव रखती है। न्यायालयों की भूमिका विवादों के निराकरण के रूप में, कानून के व्याख्याकार और संविधान के रक्षक की आवश्यकता है, उन्हें न्याय प्रणाली में अन्य सभी प्रतिभागियों से अधिकार और कार्य में पूरी तरह से अलग होना चाहिए।

(b) पर्यावरण एवं आत्मनिर्भरता

पर्यावरण और आत्मनिर्भरता के संबंध में आत्मनिर्भरता से तात्पर्य है- पर्यावरण पर दबाव बनाए बिना आत्मनिर्भरता प्राप्त करना, अर्थात् स्वयं को ऐसा आत्मनिर्भर बनाना, जिससे पर्यावरण से बिना किसी छेड़-छाड़ के अपना विकास किया जा सके।

गैर-नवीकरणीय जीवाश्म ईंधन पर हमारी निरंतर निर्भरता पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुंचा रही है। आत्मनिर्भर होने से हम भोजन, आश्रय, पानी इत्यादि जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा कर पर्यावरण की मदद कर सकते हैं। हमारे पूर्वज एक स्तर पर पूरी तरह से आत्मनिर्भर थे और वे प्राकृतिक संसाधनों से दूर थे या प्राकृतिक संसाधनों का अत्यल्प मात्रा में दोहन करते थे। यदि हम नए कौशल सीखने के लिए तैयार हैं तो हम अपने सोचने और जीने के तरीके को बदलकर प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और इससे पर्यावरण की सुरक्षा हो सकेगी।

स्थानीय स्तर पर भोजन और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति को सुनिश्चित कर परिवहन की आवश्यकता को समाप्त या कम कर प्रदूषण को कम किया जा सकता है, जिससे पर्यावरण को लाभ मिलेगा। उक्त प्रदूषण के कारण कृषि में पौधों की सुरक्षा हेतु अनेक प्रकार के रासायनिक उर्वरकों का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाता है, जिससे पर्यावरण प्रभावित होता है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण समाधान है- जैविक उर्वरकों का प्रयोग। जैविक उर्वरक भी पैदावार बढ़ाने में कारगर हैं। जैविक उर्वरक का एक और महत्त्वपूर्ण लाभ यह है कि इसके प्रयोग से मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी कम नहीं होती।

आवास का निर्माण स्थानीय रूप से उपलब्ध लकड़ी या मिट्टी के प्रयोग से किया जा सकता है। इसके लिए स्वयं को तैयार कर पर्यावरण पर कार्बन फुटप्रिंट का प्रभाव किया जा सकता है। इससे पर्यावरण को प्रभावित करने वाले संसाधनों के दोहन से बचा जा सकता है, साथ ही घरों के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले अन्य संसाधनों के परिवहन को भी कम किया जा सकता है। पानी का समुचित उपयोग पर्यावरण संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। रैनवाटर कैचमेंट सिस्टम घरों से छतों से पानी को भर कर टैंक में इक्ट्ठा करना एक प्रभावी तरीका है, जो घरेलू आवश्यकता के लिए पानी की आपूर्ति कर सकता है। अनेक जगहों पर वर्षा का पानी पर्याप्त मात्रा में होता है, जो अपेक्षाकृत स्वच्छ होता है तथा

इसका प्रयोग अनेक कार्यों में किया जा सकता है। वर्षा जल के संरक्षण से पानी के उपयोग में आत्मनिर्भरता प्राप्त किया जा सकता है तथा नदियों और समुद्र के प्रदूषण को कम किया जा सकता है क्योंकि वर्षा जल का संग्रहण न होने के कारण वह विभिन्न माध्यमों से होता हुआ नदियों और समुद्रों में पहुँचता है, जिससे नदियाँ और समुद्र प्रदूषित होते हैं। शहरी और औद्योगिकि क्षेत्रों से निकलने वाले प्रदूषित जल को शुद्ध कर उसका पुनः प्रयोग किया जा सकता है और इस तरह उस प्रदूषित जल को नदियों में मिलने से रोका जा सकता है।

सौर और पवन ऊर्जा को अधिकाधिक विकसित कर कोयला और ईंधन तेल जैसे गैर-नवीकरणीय ईंधन पर निर्भरता को समाप्त किया जा सकता है। इससे किसी भी आवश्यकता के लिए बिजली की आपूर्ति, पर्यावरण को बिना प्रदूषित किए हो सकती है। ऊर्जा को संरक्षित करने वाले कई उपकरणों - एलईडी बल्ब आदि का प्रयोग किया जा सकता है। ड्रायर के बजाय क्लोथलाइन का उपयोग, फ्लोरोसेंट के उपयोग, जहाँ तक हो सके गर्म पानी के बजाय ठण्डे पानी का उपयोग कर ऊर्जा को संरक्षित किया जा सकता है। ऊर्जा का संरक्षण इसलिए आवश्यक है क्योंकि ऊर्जा का जितना अधिक उपयोग किया जाएगा, पर्यावरण को उतना ही अधिक नुकसान होगा।

परिवहन, पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले सबसे बड़े कारणों में से एक है। अतः इसका हल आवश्यक है। इसके लिए जहाँ तक संभव हो अपने कार्यस्थल के पास अपना आवास रखना चाहिए, ताकि परिवहन की आवश्यकता कम-से-कम पड़े। यदि कार्यस्थल से आवास दूर है तो सार्वजनिक परिवहन का प्रयोग किया जा सकता है। परिवहन साधनों में हरित ईंधन (बायोडीजल, इथेनॉल आदि) तथा विद्युत ऊर्जा का उपयोग किया जा सकता है।

वस्तुतः आत्मनिर्भर रहने के कई फायदे हैं, किन्तु सबसे बड़ा फायदा पर्यावरण को है। आज पर्यावरण के लिए आत्मनिर्भरता अति आवश्यक है। यह कोई असंभव नहीं है, बस आवश्यकता है अपनी सोच बदलने की और अपनी आवश्यकता सीमित करने की।

(c) भूमण्डलीकरण में भाषा की भूमिका

आज पूरा विश्व तीव्र गति से भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण की ओर बढ़ रहा है। भूमण्डलीकरण में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है- संचार; तथा संचार का सबसे प्रमुख स्रोत है - भाषा। भाषा के बिना भूमण्डलीकरण संभव नहीं है। भूमण्डलीकरण में पूरा विश्व सिमटकर एक गाँव जैसा बन गया है और इस गाँव में एक-दूसरे की संस्कृति और कही गयी बातों को समझने के लिए एक समर्थ भाषा की आवश्यकता होती है।

वैश्वीकरण के इस युग में विश्व को एक नया रूप दिया जा रहा है। इसके तहत् विश्व का ज्यादा सरल, ज्यादा सुविधा सम्पन्न और ज्यादा मुक्त बनाने के लिए

भाषा और संस्कृति की बहुलता जैसे अवरोधों को दूर किया जा रहा है। भूमण डलीकरण की प्रक्रिया इस अवधारण पर टिकी हुई है कि स्थानीय और भाषिक सांस्कृतिक बहुलता मनुष्य की आदिम सभ्यता के ऐसे अवशेष हैं, जो नयी निर्मित हो रही विश्व सभ्यता के मार्ग बाधाएँ खड़ी कर रहे हैं। भूमण्डलीकरण में भाषा एवं संस्कृति की विविधता को बोझ समझा जा रहा है, इसलिए हर प्रकार की विविधता को समाप्त कर विश्व को एकरूप बनाने की कोशिशें हो रही हैं।

ऐसे में भूमण्डलीकरण का भाषा पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का प्रभाव पड़ता है, किन्तु सकारात्मक प्रभाव अंग्रेजी जैसी कुछ भाषाओं पर ही पड़ा है। भूमण्डलीकरण में भाषा एक-दूसरे को जोड़ने का काम करती है, और अंग्रेजी भाषा इस काम में सर्वश्रेष्ठ बनकर उभरी है। कहा जाता है कि भूमण्डलीकरण और अंग्रेजी भाषा एक-दूसरे को खींचने का काम करते हैं। व्यापार और वाणिज्य का वैश्वीकरण, विविध क्षेत्रों में कार्य में कार्यबल की बढ़ती विविधता ने अंग्रेजी भाषा के उपयोग के महत्त्व को बढ़ा दिया है। आज वैश्वीकरण के कारण अंग्रेजी भाषा संचार का पर्याय बन गयी है।

अंग्रेजी भाषा को उत्पादन और उत्पादकता के भंडार गृह की कुंजी माना जा सकता है। हम अपने विश्व दृष्टिकोण और आध्यात्मिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए इस भाषा का उपयोग कर सकते हैं। वैश्वीकरण ने अंग्रेजी भाषा को लाइमलाइट में ला दिया है। भाषा के उपयोग का परिदृश्य काफी बदल गया है।

इस वैश्विक दुनिया में अंग्रेजी नवीनतम व्यवसाय प्रबंधन की भाषा है। अंग्रेजी भाषा केवल अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य के लिए एक साधन नहीं है, यह अंतर-राज्य वाणिज्य और संचार के लिए आवश्यक हो गया है। यह एयर ट्रांसफर और शिपिंग की आधिकारिक भाषा है, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर और वाणिज्य की प्रमुख भाषा और शिक्षा का एक प्रमुख माध्यम से बढ़े हुए संचार के युग में, दुनिया अधिक से अधिक वैश्विक रूप से उन्मुख होती जा रही है। व्यवसाय, परिवार, दोस्त और सामान्य हितों वाले कई अन्य समूह भौगोलिक सीमाओं को पार करने वाले छोटे टेली या साइबर संचार बनाने में सक्षम हैं।

भूमण्डलीकरण के युग में सिरमौर बनी अंग्रेजी अन्य सभी भाषाओं को दबाती जा रही है।

यह सही है कि भाषा के बिना भूमण्डलीकरण संभव नहीं है, किन्तु इस भूमण्डलीकरण के कारण विश्व की अनेक भाषाएँ अपना अस्तित्व नहीं बचा पा रही हैं। अंग्रेजी के वर्चस्व और अन्य भाषाओं के संरक्षण के अभाव में सैकड़ों भाषाएँ समाप्ति के कगार पर हैं। वर्तमान में एक ऐसा वातावरण व्याप्त है, जिसमें मातृभाषाओं के माध्यम से बच्चों को शिक्षा देने की बात करना वक्त को पीछे लौटाना जैसा माना जा रहा है।

यह एक दिलचस्प तथ्य है कि 1961 की जनगणना में भारत में जहाँ 1,652 भाषाओं का जिक्र है, वहीं 1971 में यह घटकर 182 और 2001 में मात्र 122 हो गई। स्पष्ट है कि इन पाँच दशकों में भारत की 1530 भाषाएं विलुप्त हो चुकी हैं। इंटरनेट पर हर कुछ खंगालने वाली युवा पीढ़ी भी उन्हीं भाषाओं को तरजीह देती है जिनका उनके कैरियर से कोई वास्ता होता है। नतीजन प्रगति और विकास के तमाम दावों के बीच कई भाषाएं व बोलियाँ अपनी उपेक्षा के चलते दम तोड़ती नजर आ रही हैं। अंग्रेजी के वर्चस्व और संरक्षण के अभाव में सैकड़ों भाषाएं समाप्ति के कगार पर हैं।

संयुक्त राष्ट्र की पहली स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स इंडीजीनस पीपुल्स रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख किया गया है कि दुनिया भर में छह से सात हजार तक भाषाएँ बोली जाती हैं, इनमें से बहुत-सी भाषाओं पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि इनमें से अधिकतर भाषाएँ बहुत कम लोग बोलते हैं, जबकि बहुत थोड़ी सी भाषाएँ बहुत सारे लोगों द्वारा बोली जाती हैं। सभी मौजूदा भाषाओं में से लगभग 90 फीसदी अगले 100 सालों में लुप्त हो सकती हैं, क्योंकि दुनिया की लगभग 97 फीसदी आबादी इनमें से सिर्फ चार फीसदी भाषाएँ बोलती हैं। यूनेस्को द्वारा किए गए अध्ययन के मुताबिक ठेठ आदिवासी भाषाओं पर विलुप्ति का खतरा बढ़ता ही जा रहा है और इन्हें बचाने की आपात स्तर पर कोशिशें करनी होंगी।

अंतत: यह कहना ठीक होगा कि भाषा, भूमण्डलीकरण को आगे तो ले जा रही है, किन्तु वह केवल एक है - अंग्रेजी।

(d) भारतीय अर्थव्यवस्था और उसकी चुनौतियाँ

वर्तमान समय में जब अनेक विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर अनिश्चितताओं का आवरण है, तब भारत कुछ बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच संभावनाओं के साथ एक बड़ी चिंता भी जुड़ी है... और वह है राजकोषीय घाटा। भारत में आर्थिक स्तर पर वित्तीय अनुशासन की कमी रही है, जबकि आर्थिक शक्ति बनने के लिये देश में आर्थिक अनुशासन का वातावरण अनिवार्य रूप से होना चाहिये। इस वित्तीय अनुशासनहीनता का ही दुष्परिणाम है- राजकोषीय घाटा। बढ़ता राजकोषीय घाटा किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है, क्योंकि इससे ब्याज दरों के साथ-साथ मुद्रास्फीति तक (महँगाई) भी बढ़ती है।

भारत की बैंकिंग प्रणाली ऐसी चुनौती भरी पृष्ठभूमि में अपेक्षाकृत लंबे समय से कार्य कर रही है, जिसके कारण सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की आस्ति गुणवत्ता, पूंजी पर्याप्तता तथा लाभ पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इनके मद्देनजर सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में वैश्विक जोखिम मानदंडों के अनुरूप उनकी पूंजी जरूरतों को पूरा करने और क्रेडिट ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिये पूंजी लगा रही है। लेकिन एनपीए का स्तर 7 लाख करोड़ रुपए से अधिक हो जाने के कारण चिंता होना स्वाभाविक है, क्योंकि इतनी बड़ी राशि किसी काम की नहीं है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की सर्वाधिक बड़ी चुनौतियों में से एक है- रोजगार सृजन की चुनौती। इस समस्या के समाधान के लिये एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। हमारे देश में लगभग 13-15 लाख युवा प्रतिवर्ष कार्यशील जनसंख्या में तब्दील हो जाते हैं, जो रोजगार के उपयुक्त अवसरों की तलाश में रहते हैं। दूसरी ओर देश की लगभग आधी आबादी कृषि में लगी है तथा वहाँ और अधिक लोगों को रोज़गार दे पाना संभव नहीं है। अत: समय की मांग यही है कि गैर-कृषि क्षेत्रों में-रोजगार सृजन के उपाय किये जाएँ।

इसी के साथ इंटरनेशनल राइट्स ग्रुप ऑक्सफैम आवर्स द्वारा दुनिया में बढ़ रहे धन के समान वितरण के संबंध में रिवॉर्ड वर्क, नॉट वेल्थ नामक रिपोर्ट जारी की गई। इस रिपोर्ट के अनुसार, गत वर्ष भारत में कुल धन का 73 प्रतिशत का केवल एक प्रतिशत अमीर लोगों के पास था, जबकि देश की (लगभग आधी आबादी) 67 करोड़ की आय में मात्र एक प्रतिशत की ही वृद्धि हुई है जो कि निर्धन है। इतना ही नहीं देश की सबसे गरीब आबादी (3.7 करोड़) की आय में कोई वृद्धि नहीं हुई है। यह इस बेहद चिंताजनक स्थिति की ओर संकेत करता है।

वर्तमान में राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान बहुत अधिक नहीं है, फिर भी कृषि उत्पादन में गिरावट विकास दर को निश्चित ही प्रभावित करती है। स्वतंत्रता के समय देश की जीडीपी में कृषि का हिस्सा लगभग 50 प्रतिशत था, जो अब घटकर केवल 14 प्रतिशत रह गया है।

सर्वाधिक उत्पादकता वाले इस क्षेत्र पर देश की लगभग 58 प्रतिशत जनसंख्या निर्भर करती है। घटी हुई विकास दर न केवल कृषि पर निर्भर देश के 14 करोड़ से अधिक परिवारों को प्रभावित करती है, बल्कि आम आदमी भी महँगाई से परेशान हो जाता है। अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में कच्चे तेल के दामों में बढ़ोत्तरी होने से घरेलू बाजारों में तेल की कीमतें राजग सरकार के शासनकाल में सर्वोच्च स्तर पर पहुँच गई हैं, जिसका विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। भारत भारी विदेशी मुद्रा खर्च कर अपनी जरूरत का लगभग 80 प्रतिशत कच्चा तेल आयात करता है और ऐसे में इसके घरेलू दामों को नियंत्रित करना एक बड़ी चुनौती है। सर्वाधिक तेज़ विकास दर के बावजूद विश्व के अन्य कई देशों की तरह ही भारत की अर्थव्यवथा भी कई मोर्चों पर चुनौतियों का सामना कर रही है। कृषिगत, ग्रामीण अर्थव्यवस्था की चिंताजनक स्थिति, रोज़गार सृजन की चुनौतियाँ और कई आर्थिक क्षेत्रों में कमजोर प्रदर्शन भारत की मुख्य समस्याएँ हैं।

विकास की गति बनाए रखने के लिये प्रचलित तरीकों में बदलाव लाते हुए एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करने की आवश्यकता है जो इन्हें एक दूसरे के प्रति-उत्तरदायी बना सकें।

Q2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए: (12×5=60)

संसार का ध्यान गाँधी जी की ओर इसलिए आकृष्ट हुआ कि उन्होंने पशु-बल के समक्ष आत्म-बल का शस्त्र निकाला, तोपों और मशीन-गनों का सामना करने के लिए अहिंसा का आश्रय लिया। किन्तु सोचने की बात यह है कि अहिंसा का आश्रय उन्होंने क्यों लिया? क्या इसलिए कि अंग्रेज़ों के विरुद्ध हिंसा का आश्रय लेकर वे भारत को स्वाधीन नहीं कर सकते थे? अथवा इसलिए कि मानव-समाज को वे यह शिक्षा देना चाहते थे कि मनुष्य जब तक पाशविक साधनों का प्रयोग करने को बाध्य है, तब तक वह पूरा मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता? पहली बात अहिंसा को कमज़ोर एवं निरुपाय व्यक्ति का साधन बताती है, जिसका अर्थ यह होता है कि तोपें जब हमारे पास नहीं हैं, तब सत्याग्रह ही सही। किन्तु दूसरी बात अहिंसा को मनुष्य के विकास का साधन बनाती है; उसके रूप को निर्मल बनाने का उपाय सिद्ध करती है।

यह सच है कि गाँधी जी के नेतृत्व में जब भारतवासी ब्रिटेन से संघर्ष कर रहे थे, तब उनमें से अधिकांश का यही भाव था कि अहिंसा साधन भर है, जिसका अवलंब हमने इसलिए लिया है कि हिंसक साधनों से अंग्रेज़ों का सामना करने की हमें सुविधा और सुयोग नहीं है। किन्तु स्वयं गाँधी जी इस विचार को नहीं मानते थे। अहिंसा को गँवाकर वे भारत को स्वाधीन करने के पक्षपाती नहीं थे। भारतीय स्वाधीनता बहुत बड़ा लक्ष्य थी, उससे भी बड़ा ध्येय मानव-स्वभाव में परिवर्तन लाना था, मनुष्य को यह विश्वास दिलाना था कि जिन ध्येयों की प्राप्ति के लिए वह पाशविक साधनों का सहारा लेता है, वे ध्येय मानव-मूल्यों से भी प्राप्त किए जा सकते हैं।

गाँधी जी का मुख्य उद्देश्य न केवल अपने देशवासियों के कष्टों का निवारण, प्रत्युत मनुष्य के पाशवीकरण का अवरोध भी था। घृणा, क्रोध और आवेग, ये पशुओं को ही होते हैं और वे भी अपने प्रतिपक्षी का सामना उन शस्त्रों से करते हैं। लेकिन मनुष्य पशु से भिन्न है, अतएव उचित है कि वह अपने आवेगों पर नियंत्रण लगाए और अपने दैनिक जीवन की समस्याओं के सुलझाने में उन उपायों से काम ले, जो पशुओं के लिए दुर्लभ, किन्तु मनुष्य के लिए सुलभ हैं। प्रश्न उठता है कि गाँधी जी ने ऐसा निश्चय क्यों किया? और अहिंसा का यह प्रयोग किसी अन्य देश में आरंभ न होकर भारत में ही क्यों आरंभ हुआ? बहुत से लोग इस प्रश्न को यह कहकर टाल देंगे कि यह आकस्मिक बात थी। किन्तु आकस्मिक बात यह थी नहीं। कहते हैं, सत्याग्रह अथवा सविनय अवज्ञा की कल्पना अमेरिका के चिंतक थुरो ने भी की थी और इसकी थोड़ी-बहुत झलक रूस के संत साहित्यकार टॉल्स्टॉय, को भी मिल चुकी थी। गाँधी जी थुरो और टॉल्स्टॉय, दोनों के ही विचारों से परिचित थे। अपने देश में भी गाँधी जी से पूर्व, अरविन्द सविनय अवज्ञा और असहयोग का सुझाव देश के सामने रख चुके थे। फिर महत्त्वपूर्ण सवाल है कि इसका प्रयोग सबसे पहले भारत ने ही क्यों किया?

उत्तर स्पष्ट है कि आत्म-बल शारीरिक बल से श्रेष्ठ है, इस सत्य को जितना भारतवासी जानते थे, उतना अन्य देशों के लोग नहीं। थुरो, टॉल्स्टॉय अथवा एमर्सन और रोम्या रोलाँ में इस प्रकार की जब भी कोई भावना जगी, तब उसके पीछे भारतीय दर्शन की उत्तेजना काम कर रही थी। सविनय अवज्ञा की कल्पना तक जाने का दर्शन इस देश में विद्यमान था और इस कल्पना तक वही व्यक्ति जा सकता था जो या तो भारतीय विचारधारा से प्रभावित हो अथवा अनायास उस प्रकार की चिंतन-पद्धति पर आ गया हो जो भारत की पद्धति रही है। थुरो और टॉल्स्टॉय के संबंध में दोनों ही विकल्प संभव रहे होंगे। रह गए अरविन्द, सो वे भारतीय थे ही।

(a) संसार का ध्यान गाँधी जी की ओर किसलिए आकृष्ट हुआ? **(12)**

(b) स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए गाँधी जी द्वारा अहिंसा को ही क्यों मुख्य साधन माना गया? **(12)**

(c) लेखक ने मनुष्य और पशु में क्या अंतर बताया है? **(12)**

(d) अहिंसा का प्रयोग भारत में ही क्यों आरंभ हुआ? **(12)**

(e) सविनय अवज्ञा की कल्पना तक कौन जा सकता था? **(12)**

Ans. (a) गाँधी जी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में अपने प्रयोगों के लिए जाने जाते थे। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में अहिंसा एवं सत्याग्रह जैसे मानवीय साधनों का प्रयोग करके संसार का ध्यान अपनी ओर खींचा। वे शारीरिक बल की तुलना में आत्मबल को अधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे।

(b) गाँधी जी के लिए अहिंसा स्वाधीनता के लिए एक प्रमुख साधन था। वे अहिंसा को साधन मात्र से बढ़कर समझते थे। अत: वे अहिंसा को गँवाकर स्वाधीनता के पक्षधर नहीं थे। उनका मानना था कि मनुष्य पशुओं से भिन्न है, इसलिए उसे अपनी समस्याओं के समाधान के लिए पशुओं से भिन्न साधन अपनाने चाहिए।

(c) लेखक के अनुसार मनुष्य पशुओं से भिन्न है तथा मनुष्य का आचरण भी पशुओं से अलग होना चाहिए। घृणा, क्रोध एवं आवेश पशुओं के साधन हैं, जिसे वे अपने प्रतिपक्षी के विरुद्ध प्रयोग में लाते हैं। ये मानवीय नहीं कहे जा सकते हैं। अत: मनुष्य को अपने दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए ऐसे साधन अपनाने चाहिए जो पशुओं के लिए दुर्लभ किंतु मनुष्य के लिए सुलभ हैं।

(d) भारत की चिंतन पद्धति एवं आध्यात्मिक दर्शन आत्मबल को महत्त्व देने वाला है। भारत संस्कृति की कर्म-फल की अवधारणा, अहिंसा एवं सद्कर्म की प्रेरणा देने वाली है। यहां तक कि थुरो और टॉलस्टॉय जैसे विचारक भी भारत से प्रेरित होकर अहिंसक आचरण की कल्पना करते हैं। अत: भारत में अहिंसा के प्रयोग के लिए सर्वाधिक उर्वर भूमि थी।

(e) सविनय अवज्ञा की वैचारिक समानता भारतीय दर्शन एवं अध्यात्म से देखी जा सकती है। अत: इस कल्पना को मूर्त रूप वहीं दे सकता था जो भारतीय विचारधारा से प्रत्यक्षत: प्रभावित हो अथवा अनायास ही भारतीय चिंतन का अनुकरण करता हो।

Q3. निम्नलिखित अनुच्छेद का सारांश लगभग एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। इसका शीर्षक लिखने की आवश्यकता नहीं है। सारांश अपने शब्दों में ही लिखिए।(1×60 = 60)

आज के आधुनिक मनुष्य को इतिहास और समय के नियमों-कानूनों का जितना ज्ञान है, उतना शायद पहले किसी युग में प्राप्त नहीं था। असली अर्थ में वह ऐतिहासिक 'मनुष्य' है। एक तरह से इतिहास-बोध ही आधुनिकता का पर्याय मान लिया गया है। मध्यकालीन संस्कृति में धर्म का जो केन्द्रीय स्थान था, उसने धीरे-धीरे पीछे हटते हुए अपनी जगह इतिहास को समर्पित कर दी है। मनुष्य प्रकृति के परिवेश में नहीं, इतिहास के संदर्भ में जीता है– इस संदर्भ में हर घटना पिछली घटना से नयी है, जो अब हो रहा है वह पहले कभी नहीं हुआ। मनुष्य के क्रमिक विकास का यह बोध प्राचीन यूनानियों के लिए अजनबी और पराया था। भारतीय मनीषियों के लिए भी यह उतना ही अजनबी था। वे समय को विकास के रूप में नहीं, 'चक्र' के रूप में देखते थे। पहले 'परंपरा' मनुष्य के भीतर थी, जो उसकी जीवन-शैली को अनुशासित करती थी, अब इतिहास मनुष्य के भविष्य को निर्धारित करता है और परंपरा खोजने के लिए उसे पीछे की ओर देखना पड़ता है।

किंतु यह बात सच है कि इतिहास का जो प्रभुत्व आज हमारे जीवन में है वह पहले कभी नहीं था, वहाँ यह बात भी उतनी ही सत्य है कि मनुष्य आज समय और इतिहास से परेशान है। उन्नीसवीं शती में सार्वभौमिक सत्ता से संपन्न जो इतिहास-बोध मनुष्य की प्रगति और मुक्ति का संदेश लाया था, वह हमारे समय तक आते-आते अपनी ही क्रूर पेरोडी में परिवर्तित होता दिखाई देता है। भविष्य को निर्धारित करने वाले नियम, कानून, फार्मूले अब भी हैं किन्तु उन पर बीसवीं शताब्दी के अत्याचारों और मोहभंग का इतना गहरा प्रभाव है कि वे भविष्य के बंद कमरों में कहीं फिट नहीं हो पाते। कैसा है यह वैज्ञानिक, तर्कशील, गौरवपूर्ण अर्थबोध, जिसने आज मनुष्य को स्वयं अपने ही भविष्य के प्रति इतना अरक्षित, आतंकित और अनाश्वस्त बनाकर छोड़ दिया है?

यह नहीं कि हम मानव भविष्य के बारे में जानते नहीं। आज के आधुनिक मनुष्य ने इतिहास-बोध से उत्प्रेरित होकर भविष्य के बारे में जो परिकल्पना और संभावना खोजी हैं, उनके आधार पर संपूर्ण भविष्य की पूरी एक रसायन शाला बनायी जा सकती है। किन्तु इस भविष्य का वर्तमान की विभीषिका से कोई संबंध नहीं, बल्कि यूँ कहें, वर्तमान की विभीषिका से बचने के लिए ही इस 'ऐतिहासिक भविष्य' का निर्माण किया गया है– वह चाहे वर्गहीन समाज का स्वप्न हो या कम्प्यूटर-निर्धारित 'रोबो' का यंत्रलोक,

इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। हम वास्तविक समय में नहीं, एक काल्पनिक समय में जीते हैं– और विचित्र बात यह है कि इस भविष्य में मनुष्य की मृत्यु को देश-निकाला दे दिया गया है क्योंकि स्वयं अपनी मृत्यु से भयभीत होकर हमने भविष्यलोक में शरण ली है।

यह आधुनिक युग की विचित्र विडंबना मानी जाएगी कि एक तरफ आज का मनुष्य 'इतिहास-बोध' से आक्रांत है, दूसरी तरफ मृत अतीत और काल्पनिक भविष्य के बीच स्वयं इतिहास की जीवंत धारा सूख गयी है। जिस तरह नदी में डूबता आदमी पानी से रिश्ता नहीं जोड़ पाता उसी तरह इतिहास में डूबा मनुष्य समय का मर्म नहीं जान सकता। वह इतिहास से प्रभावित हो सकता है, किन्तु उसे अपने जीवन और मृत्यु का साक्षी नहीं बना सकता; वह इतिहास जो इस धरती पर मनुष्य का साक्षी न बन सके, उसका क्या अर्थ रह जाता है? यही कारण है कि आज इतिहास-बोध आधुनिक मनुष्य का अंधविश्वास बनकर रह गया है जिसके पास वह भविष्य का अर्थ टटोलने नहीं, वर्तमान से छुटकारा पाने जाता है।

किन्तु क्या हम वर्तमान से छुटकारा पा सकते हैं? क्या वर्तमान ही ऐसा केन्द्र-बिन्दु नहीं है जहाँ मनुष्य अपनी नश्वरता के बावजूद इतिहास में अपनी संपूर्ण स्थिति को समझने योग्य है? जहाँ एक तरफ तो मनुष्य नश्वर है दूसरी ओर वह इतिहास में जीवित है। यह नियति उसके व्यक्तिगत अतीत से सम्बन्ध रखती है, किन्तु उसके साथ वह मनुष्य के समग्र भविष्य को भी आलोकित करती है जिसमें दूसरे लोगों की नियति भी जुड़ी है। (661 शब्द)

Ans. आधुनिक मनुष्य इतिहास के प्रति अत्यधिक सजग है। वर्तमान में इतिहास का वही स्थान है जो मध्यकाल में धर्म का था। इतिहास की वर्तमान क्रमिक विकास की अवधारणा से यूनानी एवं चक्रीय अवधारणा को मानने वाले भारतीय मनीषी भी अनभिज्ञ थे। हमारी जीवनशैली इतिहास से काफी सीमा तक प्रभावित रहती है। इस प्रभाव में कुछ नकारात्मकताएँ भी देखने को मिलती हैं। इतिहास से जो प्रेरणा हमें 20वीं सदी में मुक्ति का संदेश दे रही थी, अब वही हमारे लिए बंधन से कम प्रतीत नहीं होती है। विकास की नवीन परिपाटी ने असुरक्षा के भाव को भी उतनी ही मात्रा में बढ़ाया है।

मनुष्य ने इतिहास बोध से प्रेरणा लेकर भविष्य का एक संभावित पूर्वानुमान लगाया है। यह ऐतिहासिक भविष्य कपोल कल्पित कल्पनाओं से भरा एवं सभी चिंताओं से मुक्त है, मानो भविष्य वर्तमान विभीषिका से पृथक हमें आश्रय देने वाला है। हमारे इतिहास बोध एवं काल्पनिक भविष्य के मध्य का वर्तमान कहीं लुप्त दिखाई पड़ता है। इतिहास को वर्तमान से जुड़ पाने में असमर्थता इतिहास बोध की सार्थकता पर प्रश्नचिह्न खड़ा करती है। वर्तमान एक ऐसी स्थिति है जहाँ पर मनुष्य अपने संपूर्ण इतिहास का साक्षात्कार कर सकता है। अंततः वर्तमान की अनदेखी करके भविष्य को टटोलना निरर्थक प्रतीत होता है।

Q4. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए: (20)

वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे नवीन आविष्कारों ने मानव जाति को जिन विस्मयकारी उपलब्धियों से संपन्न बनाया है, उनमें सूचना तकनीक प्रमुख है। विश्व के किसी भी कोने में बैठकर आज हम वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता से कहीं से भी कोई भी सूचना प्राप्त कर सकते हैं। सूचना प्राप्ति की इस सुविधा ने देशों की दूरियाँ समाप्त कर दी हैं। अब लगता है कि संपूर्ण संसार सिमटकर हमारी मुट्ठी में आ गया है। वैसे भी 'वैश्वीकरण' और 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा वैज्ञानिक प्रगति के इस युग में तेज़ी-से फलीभूत होती प्रतीत हो रही है।

आज हम उस युग को याद करें जब डाक भेजने की उपयुक्त व्यवस्था नहीं थी। सूचनाओं का आदान-प्रदान संदेशवाहकों द्वारा होता था। इस काम में लंबा समय लगता था। उस समय तक जीवन कितना कठिन रहा होगा इसका सहज अनुमान लगाना आज आसान नहीं है। समय ने करवट ली और सूचना के क्षेत्र में नित्य नए प्रयोग होने लगे। डाक-तार, टेलीफोन, टेलीग्राम आदि की व्यवस्था की गयी। पत्रों द्वारा संदेश पहुँचने लगे। जीवन में गति आयी तथा रेडियो और टेलीविज़न ने इस दिशा में कदम बढ़ाए। कम्प्यूटर के आगमन के साथ ही सूचना जगत में क्रांति का सूत्रपात हो गया। इंटरनेट के विकास के बाद सारे कम्प्यूटर आपस में जुड़ गए तथा त्वरित संप्रेषण में और भी आसानी हो गयी। सूचना जगत में नए-नए परिवर्तन आ रहे हैं तथा नवीन से नवीन जानकारी तुरंत मिल जाती है। आज मनुष्य अपने किसी उत्पाद का विज्ञापन संपूर्ण विश्व में कहीं भी आसानी से कर सकता है। वह पारंपरिक हथियारों से लड़े बिना युद्ध कर सकता है। लगभग सभी घरों और कार्यालयों में आज कम्प्यूटर और इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है जिसकी सहायता से हवाई जहाज, रेल, बस और सिनेमा आदि के टिकट आसानी से बुक किए जा सकते हैं। आरक्षण की स्थिति की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। सड़क यातायात की हालत का पता लगाया जा सकता है। आज मोबाइल पर इंटरनेट के माध्यम से सब-कुछ घर बैठे प्राप्त किया जा सकता है। सचमुच संवाद और सूचना संप्रेषण का यह सबसे सस्ता साधन है।

Ans. The present era is the era of information technology. Information technology is prominent among the amazing achievements made by innovators in the field of science, which have made mankind prosperous. Today, sitting in any corner of the world, we can get any information from anywhere with the help of scientific instruments. This facility of receiving information has ended the distances of countries. Now it seems that the whole world has shrunk in our grasp. The concept of 'globalization' and '*Vasudhaiva Kutumbakam*' seems to be flourishing rapidly in this era of scientific progress.

Today, let us remember the era when there was no proper system for sending mail. Information was exchanged by messengers. This work took a long time. It is not easy to estimate how difficult life must have been till that

time. Time took a turn and new innovations were being made in the field of information. Post-telegram, telephone, telegram etc. were arranged. Messages started reaching through letters. Life got momentum and radio as well as television took steps in this direction. With the access of computer, revolution started in the information world. After the development of the Internet, all computers were interconnected and instant communication became easier. New changes are coming in the information world and new information is available immediately. Today, human beings can easily advertise any of their products anywhere in the world. He can fight war without fighting conventional weapons. Computer and Internet facilities are available in almost all homes and offices today with the help of it, tickets for aeroplane, rail, bus and cinema etc. can be easily booked. Reservation status information can be obtained. The condition of road traffic can be ascertained. Today everything can be obtained sitting at home through internet on mobile. It is really the cheapest means of communication and information communication.

Q5. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए: (20)

Democracy stands much superior to any other form of government in promoting dignity and freedom of the individual. Every individual wants to receive respect from fellow beings. Often conflicts arise among individuals because some feel that they are not treated with due respect. The passion for respect and freedom are the basis of democracy. Democracies throughout the world have recognised this, at least in principle. This has been achieved in various degrees in various democracies. For societies which have been built for long on the basis of subordination and domination, it is not a simple matter to recognise that all individuals are equal.

Take the case of dignity of women. Most societies across the world were historically male dominated societies. Long struggles by women have created some sensitivity today that respect to and equal treatment of women are necessary ingredients of a democratic society. That does not mean that women are actually always treated with respect. But once the principle is recognised, it becomes easier for women to wage a struggle against what is now unacceptable legally and morally.

Ans. लोकतंत्र व्यक्ति की गरिमा और स्वतंत्रता को बढ़ावा देने में सरकार के किसी अन्य रूप से कहीं बेहतर है। प्रत्येक व्यक्ति अन्य साथियों से सम्मान प्राप्त करना चाहता है। प्राय: लोगों के मध्य इस बात को लेकर टकराव उत्पन्न होता है कि उनके साथ उचित व्यवहार नहीं किया जाता है। सम्मान तथा स्वतंत्रता के लिए जुनून लोकतंत्र का आधार है। विश्व भर के लोकतंत्र इसे स्वीकार करते हैं, कम से कम सिद्धांतों में तो अवश्य ही। यह विभिन्न लोकतंत्र में अलग-अलग मात्रा में प्राप्त किया गया है। उन समाजों के लिए जो लंबे समय तक अधीनता और वर्चस्व के आधार पर निर्मित हुए हैं, यह

स्वीकार करना कि सभी व्यक्ति समान है कोई सामान्य बात नहीं है।

महिलाओं की गरिमा के मामले को लें। विश्व भर के अधिकांश समाज ऐतिहासिक रूप से पुरुष प्रधान समाज थे। महिलाओं द्वारा लंबे संघर्ष ने आज अवश्य उनके प्रति कुछ संवेदनशीलता पैदा कर दी है, जिससे महिलाओं का सम्मान तथा समान व्यवहार को लोकतांत्रिक समाज का आवश्यक तत्व माना जाता है। पर इसका यह अर्थ नहीं है कि महिलाओं के साथ सदैव सम्मान पूर्ण व्यवहार होता है। परंतु एक बार जब इसे सैद्धांतिक मान्यता मिलती है तो महिलाओं के लिए कानूनी और नैतिक रूप से ऐसी कार्य व्यवहार के विरुद्ध संघर्ष करना आसान हो जाता है।

Q6. (a) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए: (2×5 = 10)

(i) उड़ती चिड़िया पहचानना

(ii) नाकों चने चबवाना

(iii) छाती पर मूँग दलना

(iv) सेमल का फूल होना

(v) पौ बारह होना

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए: (2×5 = 10)

(i) आप अपना काम स्वयं कर लो।

(ii) मुझे भगवान पर आत्मविश्वास है।

(iii) इस गीत की दो-चार लड़ियाँ सुना दो।

(iv) मेरे को खाना दे दीजिए।

(v) वे इस ज़िले के धनी व्यक्ति है।

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए: (2×5 = 10)

(i) बादल

(ii) जीभ

(iii) अमृत

(iv) सूर्य

(v) परिवार

(d) निम्नलिखित युग्मों का इस तरह से वाक्य में प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ एवं अंतर स्पष्ट हो जाए: (2×5 = 10)

(i) नीरज – नीरद

(ii) अवलंब – अविलंब

(iii) अन्न – अन्य

(iv) अनल – अनिल

(v) उपयुक्त – उपर्युक्त

Ans. (a) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(i) उड़ती चिड़िया पहचानना

अर्थः मन के भाव जान लेना

वाक्य प्रयोगः गुप्तचर विभाग के अफसर वही बन पाते हैं जो उड़ती चिड़िया पहचान लेते हैं।

(ii) नाकों चने चबवाना

अर्थः बहुत परेशान करना

वाक्य प्रयोगः रानी लक्ष्मीबाई ने 1857 के संग्राम में अंग्रेजों को चने चबा दिए थे।

(iii) छाती पर मूंग दलना

अर्थः परेशान करना

वाक्य प्रयोगः कुछ विद्यार्थी कक्षा में ऐसा आचरण करते हैं, मानो अध्यापक की छाती पर मूंग दलने आए हों।

(iv) सेमल का फूल होना

अर्थः थोड़े दिनों का अस्तित्व होना

वाक्य प्रयोगः अयोग्य व्यक्ति का उच्च पद धारण करना सेमल का फूल होने के समान होता है।

(v) पौ बारह होना

अर्थः लाभ होना

वाक्य प्रयोगः लॉटरी में पहला पुरस्कार जीतने पर सुरेंद्र के पौ बारह हो गए।

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए।

(i) आप अपना काम स्वयं कर लो।

शुद्ध रूपः अपना काम स्वयं कर लीजिए।

(ii) मुझे भगवान पर आत्मविश्वास है।

शुद्ध रूपः मुझे भगवान पर विश्वास है।

(iii) इस गीत की दो-चार लड़ियां सुना दो।

शुद्ध रूपः इस गीत की दो-चार कड़ियाँ सुना दो।

(iv) मेरे को खाना दे दीजिए।

शुद्ध रूपः मुझे खाना दे दीजिए।

(v) वे इस जिले के धनी व्यक्ति है।

शुद्ध रूपः वह इस जिले का धनी व्यक्ति है।

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

(i) बादल – मेघ, अंबुद

(ii) जीभ – जिह्वा, रसिका

(iii) अमृत – सुधा, अमिय

(iv) सूर्य – भास्कर, सूरज

(v) परिवार – कुटुंब, अचल

(d) निम्नलिखित युग्मों का इस तरह वाक्य में प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ और अंतर स्पष्ट हो जाए

(i) नीरज – नीरद

वाक्य प्रयोगः नीरज (कमल) के खिलने के लिए जलाशय में जल की आवश्यक मात्रा नीरद (बादल) की वर्षा से प्राप्त होती है।

(ii) अवलंब – अविलंब

वाक्य प्रयोगः अवलंब (सहारा) को आपात स्थिति में मनुष्य की आवश्यकता के रूप में देखा जाता है ताकि दुष्कर परिस्थितियों में हमें अविलंब (शीघ्र) सहायता मिल सके।

(iii) अन्न – अन्य

वाक्य प्रयोगः अनाज (अन्न) मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता में से एक है, इसके समान कोई अन्य (अतिरिक्त) चीज महत्त्वपूर्ण नहीं है।

(iv) अनल – अनिल

वाक्य प्रयोगः अनल (आग) का प्रचार कम करने के लिए अनिल (पवन) सदैव सहायक नहीं होता है।

(v) उपयुक्त – उपर्युक्त

वाक्य प्रयोगः उपयुक्त (उपयोगी) शब्द का चयन उपर्युक्त (ऊपर दिए गए में से) शब्दों में से कीजिए।

यू.पी.एस.सी. सी.एस. 2019 (मुख्य परीक्षा)
हिन्दी अनिवार्य हल प्रश्न पत्र

Time allowed : Three hours *Maximum Marks : 300*

प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश:

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।
- प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित हैं।
- उत्तर हिन्दी में ही लिखे जाएँगे, यदि किसी प्रश्न-विशेष में अन्यथा निर्दिष्ट न हो।
- जिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्धारित है, वहाँ इसका अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर, निर्धारित शब्द-संख्या की तुलना में काफी लंबा या छोटा है तो अंकों की कटौती की जा सकती है।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो खाली छोड़ा गया हो, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

Q1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 600 शब्दों में निबन्ध लिखिए: **(1 × 100)**

(a) सर्जनात्मकता का पोषण करने वाली शिक्षा की आवश्यकता

(b) भारत में वन्य जीवन संरक्षण की चुनौतियाँ

(c) किशोर मानस पर फ़िल्मों का प्रभाव

(d) दिव्यांगों का सशक्तिकरण

Ans. (a) सर्जनात्मकता का पोषण करने वाली शिक्षा की आवश्यकता

"जन्म देने वालों से अधिक सम्मान अच्छी शिक्षा
देने वालों को दिया जाना चाहिए।"

प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक अरस्तु शिक्षा के मूल्य को रेखांकित करते हुए, उक्त कथन को उद्धृत करते हैं। अरस्तु के अनुसार, किसी को जन्म देने से अधिक महत्वपूर्ण उसे यह सिखाना है कि जीना कैसे है। वर्तमान तकनीक संपन्न विश्व में सब कुछ जान लेना ही पर्याप्त नहीं है, अधिक महत्त्वपूर्ण अर्जित ज्ञान से सर्जनात्मक क्षमता का विकास करना है। यही कारण है कि विश्व के अधिकांश प्रगतिशील राष्ट्र शिक्षण कार्यक्रमों में प्रयोगात्मक कौशल को अधिक महत्त्व देते हैं।

सर्जनात्मक शिक्षा का आशय ऐसी शिक्षा पद्धति का विकास करना है, जिसमें विद्यार्थी परंपरागत ज्ञान से आगे बढ़कर नवीन एवं संवर्द्धित ज्ञान तथा असके

अनुप्रयोग की ओर उन्मुख हों। ऐसी शिक्षा विद्यार्थियों को नवाचार के लिए प्रेरित करती है। इसमें विद्यार्थियों को समाज एवं विज्ञान के संबंध में अपनी समझ विकसित करने के लिए मुक्त छोड़ दिया जाता है और उनके कार्यकलापों पर किसी प्रकार का रूढ़िजन्य अंकुश नहीं लगाया जाता है।

मनुष्य जैसे-जैसे जटिल जीवनचर्या का अनुसरण करता जा रहा है, वैसे-वैसे उसे अनेक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों का समुचित समाधान करने के लिए नवोन्मेषी मस्तिष्क की आवश्यकता महसूस की जा रही है। शिक्षा में सर्जनात्मकता का समावेश मानव मन को आरंभ से ही रचनात्मक एवं समाधानोन्मुख दृष्टि प्रदान करेगा। यह मानव के अस्तित्व को बचाए रखने तथा भावी आपदाओं से निपटने में सहायक होगा। यही नहीं सर्जनात्मक क्षमता मनुष्य की जिज्ञासाओं को शान्त करने तथा उन रहस्यों से परदा हटाने में भी सक्षम है, जिससे मनुष्य अभी तक अनभिज्ञ है।

शिक्षा पद्धति में सर्जनशीलता विकसित करने की अनेक विधियों का विकास किया गया है। इसके अंतर्गत विचारशीलता, अंतर-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण, सामूहिक परिचर्चा, भावनात्मक लब्धि एवं तनावमुक्तता पर बल दिया जाता है। इसका प्रायोगिक रूप हम परीक्षाविहीन कक्षा कार्यक्रम, संगीत सुनना, ज्ञानप्रद यात्राओं, अन्तर्विद्यालय संगोष्ठी के आयोजन तथा प्रयोगशालाओं के बढ़ते महत्व के रूप में देख सकते हैं। स्केण्डेनेवियाई देशों में इस प्रकार की नवाचारी शिक्षा पद्धति को विशेष रूप से अपनाया गया है।

भारत जैसे देश में जहाँ युवाओं की आबादी अधिक है तथा देश की बड़ी आबादी अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए मजबूर है, वहाँ सर्जनात्मकता को शिक्षा में शामिल करना अत्यावश्यक है। यह दु:खद है कि भारत में शिक्षा व्यवस्था में सर्जनशीलता तथा नवोन्मेष का अभाव दिखायी पड़ता है। निम्न गुणवत्तायुक्त शिक्षा विशेष रूप से सरकारी विद्यालयों में, विद्यार्थियों को स्कूल स्तर पर पूर्ण रूप से विकसित होने का अवसर नहीं देती है। हालांकि सरकार द्वारा इस स्थिति में सुधार लाने हेतु कुछ कदम भी उठाए जा रहे हैं।

भारत सरकार की 'अटल नवाचार मिशन', 'स्मार्ट इण्डिया हैकथॉन', 'जिज्ञासा योजना' तथा इसरो की 'संवाद विद स्टूडेंट्स' इत्यादि योजनाएँ विद्यार्थियों में नवाचार तथा सर्जनशीलता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रारंभ की गयी हैं। इसके अतिरिक्त डॉ. के. कस्तूरीरंगन का नवीन प्रारूप भी सर्जनशीलता तथा प्रायोगिक शिक्षा को बढ़ावा देने पर केन्द्रित है। 'डिजिटल बोर्ड' जैसी योजनाएँ शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु 'मील का पत्थर' साबित हो सकती हैं।

भारत की अधिकांश आबादी ग्रामीण है जबकि भारत का कृषि क्षेत्र तकनीकी रूप से पिछड़ा हुआ है। कृषि क्षेत्र को लाभकारी बनाने (वर्ष 2022 तक कृषक आय को दुगुना करना) के लिए भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल सर्जनात्मक क्षमता

का प्रयोग आवश्यक है। इसी प्रकार 'स्टार्ट अप इण्डिया' तथा 'मेक इन इण्डिया' जैसी योजनाओं की सफलता भी सर्जनशीलता पर ही निर्भर है। आज भारतीय मूल के लोग विश्वभर में अपने कौशल के बल पर शीर्ष पदों पर आसीन हैं। ऐसे में यदि देश में सर्जनात्मक शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाए तो भारत अपनी युवा आबादी की कौशल क्षमता से लाभान्वित हो सकता है।

"कोई भी राष्ट्र बिना शिक्षित नागरिकों के विकसित नहीं हो सकता है।"

दक्षिण अफ्रीका के प्रसिद्ध समाजसेवक तथा पूर्व-राष्ट्रपति नेल्सन मण्डेला के अनुसार, किसी राष्ट्र का विकास उस देश के नागरिकों के शिक्षित होने पर निर्भर करता है। ध्यातव्य है कि विश्व के वे देश जिनकी साक्षरता दर अधिक है उनके विकास का स्तर भी उच्च है। वर्तमान में भारत एक महत्वाकांक्षी विकासशील राष्ट्र है। नवोन्मेषी एवं सर्जनशील शिक्षा पद्धति को लागू करके भारत अपनी महत्वाकांक्षाओं की प्रतिपूर्ति कर सकता है। भारत को अपनी जननांकिकीय लाभांश की स्थिति का लाभ उठाने के लिए भी सर्जनशील शिक्षा पद्धति को लागू करने की आवश्यकता है। अंततः इस बात से सहमत हुआ जा सकता है कि सर्जनात्मकता का पोषण करना शिक्षा का एक अद्वितीय गुण है।

(b) भारत में वन्यजीवन संरक्षण की चुनौतियाँ

मई 2019 में संयुक्त राष्ट्र जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, मानवजनित कारणों से प्राकृतिक पर्यावासों में हुए बदलाव के कारण 10 लाख से भी अधिक वनस्पतियों और जीवों की प्रजातियाँ संकट का सामना कर रही हैं। इसी प्रकार लगभग 900 जीवों की प्रजातियाँ वनों में विलुप्ति का सामना कर रही हैं। ये आँकड़े वन्यजीव संरक्षण के हमारे प्रयासों पर प्रश्नचिह्न खड़ा करते हैं। यह कहना गलत न होगा कि मनुष्य ने अपने संकुचित लाभ के लिए शेष जीवों के अस्तित्व को संकट में डाल दिया है। नवीन शोध यह दर्शाते हैं कि वन्यजीवों का संरक्षण स्वयं मनुष्य के अस्तित्व के लिए भी आवश्यक है।

अनेक जीव विविध प्रकार से मानव जीवन के लिए लाभप्रद होते हैं। व्हेल मछली अपने विशालकाय शरीर में वसा तथा प्रोटीन के रूप में कई टन कार्बन को संचित रखती है, यह वायुमण्डल में विविध गैसों के संतुलन में सहायक होता है। इसी प्रकार बाघ एवं तेंदूए जैसे वन्य जीव अतिचारण करने वाले जीवों की संख्या को नियंत्रित करके वानस्पतिक संपदा का संरक्षण करते हैं। अनेक सूचक प्रजातियाँ हमें प्रकृति को बेहतर रूप में समझने में सक्षम बनाती हैं, जैसे - गिला वुडपिकर, इजिप्टियन प्लॉवर, पायलट फिश, ऑरेंज क्लॉनफिश, अफ्रीकन ऑक्सपिकर्स, क्लीनर फिश इत्यादि। वन्य जीवों के अनेक लाभों के बावजूद हम वन्य जीवों के संरक्षण में अक्षम रहे हैं।

वन्यजीवों के संरक्षण के मार्ग में अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जिसके कारण वन्यजीवन संकट का सामना कर रहा है। विश्व की वन्यजीव संपदा का एक बड़ा भाग अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका के आर्थिक रूप से अक्षम राष्ट्रों के पास है

अत: वे राष्ट्र इनकी संरक्षण लागत को वहन नहीं कर पाते हैं, जिस कारण वन्य जीवों की हानि होती है। हाल ही में सूडान के एक चिड़ियाघर से आई तस्वीरों ने लोगों की झकझोर दिया जिसमें आहार की कमी के कारण शेर गम्भीर रूप से अस्वस्थ दिख रहे थे।

विश्व की बढ़ती आबादी, विशेषत: भारत जैसे देशों में तथा भूमि की सीमाओं ने वन्यजीवों के पर्यावासों को संकुचित किया है। इससे न सिर्फ वन्यजीवों के मध्य अपितु मानव-वन्यजीव संघर्ष बढ़े हैं। यह स्थिति वन्यजीवों के समुचित विकास में एक बड़ी समस्या है। वन्यजीव रिहायशी क्षेत्रों में प्रवेश करके मानव जीवन को भी खतरे में डालते हैं।

प्राकृतिक आपदाओं की पुनरावृत्ति विगत् वर्षों में बढ़ती प्रतीत हो रही है। हाल के दिनों में अमेजन घाटी क्षेत्र तथा ऑस्ट्रेलिया में लगी वनाग्नि के कारण बड़े पैमाने पर वन्य जीवों की हानि हुई है। एक अनुमान के अनुसार, ऑस्ट्रेलिया की वनाग्नि में 1 बिलियन से अधिक वन्यजीवों की क्षति हुई। इसी प्रकार की अन्य प्राकृतिक आपदाओं जैसे सूनामी, भूकम्प, ज्वालामुखी क्रिया, बाढ़-सूखा इत्यादि वन्यजीवों की हानि का कारण बनते हैं।

ग्लोबल वॉर्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन जैसे कारकों ने मानव ही नहीं, वन्यजीवों का जीवन भी कठिन बना दिया है। वैश्विक तापमान के बढ़ने से ध्रुवीय एवं शीत प्रदेशों में रहने वाले ध्रुवीय भालू, पेंग्वीन इत्यादि जीवों को संकट का सामना करना पड़ रहा है। इसी प्रकार हिमालय क्षेत्र में हिम रेखा के ऊपर उठने के कारण भी वन्यजीवों का पर्यावास भी उष्मन के कारण दुष्कर होता जा रहा है। इसका सर्वप्रमुख उद्धरण कोरल रीफ को होने वाली गम्भीर क्षति है।

वन्यजीवों के संरक्षण में एक अन्य समस्या इनका अवैध शिकार किया जाना भी है। विभिन्न औषधीय गुणों (गैंडे की सींग, सैंड बोआ सर्प), सजावट के लिए (जीवों की खाल तथा हाथी दांत) इत्यादि कारणों से वन्यजीवों का अवैध शिकार किया किया जाता है। इसके अतिरिक्त बड़े स्तर पर वन्य जीवों की सीमापारीय तस्करी भी इनके संरक्षण में एक बड़ी बाधा है।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कारण भी वन्यजीवों के संरक्षण को बाधित करने वाले हैं; जैसे- बीमारियाँ (गिर क्षेत्र में शेर), हाई वोल्टेज तारों का संजाल (ग्रेट इण्डियन बस्टर्न), जल संपदा की रक्षा (ऑस्ट्रेलिया में 10 हजार ऊँटों को मारने का फैसला, मवेशियों की सुरक्षा (उत्तराखण्ड में तेंदुए को मारा जाना), धार्मिक उद्देश्य से (दीपावली के पर्व पर भारतीय उल्लू को मारा जाना) इत्यादि। इस प्रकार हम पाते हैं कि विविध कारणों से वन्यजीवों का समुचित संरक्षण दुष्प्रभावित होता है, हालांकि विश्व समुदाय ने वन्य जीवों के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता दिखाते हुए इस संदर्भ में प्रयास भी किये हैं। ये प्रयास राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर देखने को मिले हैं।

आई.यू.सी.एन. द्वारा वर्ष 1964 से ही जीवों की संख्या के आधार पर उनकी सुभेद्द स्थिति की पहचान की जा रही है। इस संस्था द्वारा वन्यजीवों के संरक्षण हेतु उपाय भी सुझाए जाते हैं। सी.आई.टी.ई.एस. नामक संस्था सुभेद्य जीव-जंतुओं के अवैध व्यापार पर रोक लगाने वाली एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है। भारत में वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत वन्यजीवों को संरक्षित करने के लिए प्रयास किये जाते हैं। भारत में प्रोजेक्ट टाइगर, प्रोजेक्ट एलीफेन्ट तथा सिक्योर हिमालय जैसी अनेक योजनाएँ चलायी जा रही हैं।

उपर्युक्त प्रयासों के बावजूद वन्यजीवों की सुरक्षा को लेकर चिंताएँ बनी हुई हैं। विश्वभर में फैले वन्यजीव तस्करों के नेटवर्क को सभी राष्ट्र एकजुट होकर ही नष्ट कर सकते हैं। पाकिस्तान में हॉब्रा बस्टर्ड जैसे संवेदनशील पक्षी प्रजाति के शिकार की अनुमति दिया जाना वन्यजीवों के प्रति हमारी अनिच्छा को ही दर्शाता है। ऐसे कदमों के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को एकजुट होना चाहिए। मिथकीय चिकित्सा पद्धतियों तथा रूढ़िवादी अनुष्ठानों के कारण होने वाली वन्यजीव हानि को रोकने के लिए जन-जागृति फैलाने की आवश्यकता है। अंत में सबसे महत्त्वपूर्ण कदम के रूप में हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम तथाकथित विकास के नाम पर वन्यजीवों के आवास का अतिक्रमण न करें। मानव जाति को अपनी श्रेष्ठता का दंभ छोड़ कर असहाय जीवों का सह अस्तित्व सुनिश्चित करना चाहिए। यह हमारा कर्त्तव्य और नैतिक दायित्व भी है।

(c) किशोर मानस पर फिल्मों का प्रभाव

कहा जाता है कि सीखने की कोई आयु नहीं होती है तथापि सीखने के दृष्टिकोण से विभिन्न आयु वर्गों को प्रभाविकता के आधार पर अवश्य विभाजित किया जा सकता है। इस संदर्भ में किशोर मन:स्थिति अग्रणी है। किशोरावस्था जिज्ञासाओं तथा स्वीकार्यता से संतृप्त अवस्था मानी जाती है। फिर फिल्मों की अपनी रुचिकर प्रस्तुति, स्मृति में स्थायित्व के कारण युवाओं पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है, वहीं दूसरी ओर फिल्में समाज के लिए उत्प्रेरक भी हैं। किशोर स्वयं को फिल्मी पात्रों से शीघ्रता से जोड़ लेते हैं। इस प्रकार किशोर मानस पटल पर फिल्मों की छाप गहरे रंग में पड़ जाती है।

फिल्मों को मनोरंजन, सीखने, जनजागरुकता एवं प्रचार-प्रसार का एक सशक्त साधन माना जाता है। संक्षेप में हम फिल्मों को संचार के एक प्रभावी माध्यम के रूप में निरूपित कर सकते हैं। फिल्में किशोर मन को अनेक प्रकार से प्रभावित करती हैं। यह प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है। फिल्मों का सकारात्मक प्रभाव किशोरों को नयी दिशा तथा समाज के प्रति बेहतर दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होता है। जबकि नकारात्मक प्रभाव किशोरों को पथभ्रमित करने के साथ-साथ व्यसन की ओर भी मोड़ सकता है। हमें किशोरों द्वारा फिल्मी पात्रों के अनुकरण का प्रयास प्राय: देखने को मिलता है जो फिल्मों के उल्लेखनीय प्रभाव को दर्शाता है।

भारतीय फिल्म उद्योग, विशेषत: हिन्दी भाषा की फिल्मों में अनेक ऐसी फिल्में आयीं जिसने समाज और युवाओं को सकारात्मक सोच के प्रति आकर्षित किया। उदाहरण के लिए 'दंगल' जैसी फिल्मों ने समाज में महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का प्रसार किया। 'मांझी - द माउण्टेन मैन' ने समाज में दृढ़ इच्छाशक्ति तथा लगनशीलता के महत्व को रेखांकित किया। 'आनंद' जैसी फिल्में युवकों को जीवन के सत्य को स्वीकार करने तथा जीवन के प्रति आशावान रहने का संदेश देती हैं। फिल्मों के उक्त सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ सह-उत्पाद के रूप में कुछ नकारात्मकताएँ भी उत्पन्न होती हैं।

अनेक बार ऐसा देखा गया है कि कुछ अप्रिय प्रोत्साहनों अथवा घटनाओं के पीछे फिल्मों ने प्रोत्साहक की भूमिका निभाई। उदाहरण के लिए कुछ लोग फिल्मों में मद्यमान तथा सिगरेट के सेवन को स्टेटस सिम्बल (प्रतिष्ठा का प्रतीक) मान कर उसका अनुसरण करने लगते हैं। फिल्मों में अनेक बार प्रतिशोध लेने जैसे प्रकरण में गैर-विधिक तरीकों को अपनाया जाता है। यह भी समाज को गलत संदेश देने वाला है। फिल्मों में कई बार स्त्रियों का चित्रण वस्तुवादी दृष्टिकोण के साथ किया जाता है; यह समाज में महिलाओं की गरिमा कम करने वाला प्रतीत होता है। कुछ आपराधिक गतिविधियों में भी ऐसा देखा गया कि अपराधी किसी-न-किसी रूप में फिल्मों से प्रेरित थे।

उपरोक्त विश्लेषण से यह प्रकट होता है कि फिल्में किशोरों पर अनेकानेक प्रभाव डालती हैं। अत: यह आवश्यक है कि सभी हितधारक इस संबंध में अपना उत्तरदायित्व ग्रहण करें तथा उसके अनुरूप अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन भी करें। इस संबंध में सबसे महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व फिल्म निर्माताओं का प्रतीत होता है। निर्माताओं को फिल्म निर्माण के समय अपने कार्पोरेट हितों के साथ-साथ इसके सामाजिक प्रभावों (विशेषत: युवाओं के संदर्भ में) पर भी विचार करना चाहिए। यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि फिल्मों का मूल संदेश समाज में सकारात्मक बदलाव लाने वाला होना चाहिए।

फिल्म निमार्ताओं के बाद किशोरों पर फिल्मों के प्रभावों से संबंधित दूसरा महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व किशोरों के संरक्षकों का उत्पन्न होता है। संरक्षकों का दायित्व है कि वे किशारों को अच्छे-बुरे, सही-गलत का अन्तर समझाएँ तथा संरक्षक की यह भी जिम्मेदारी है कि किशोरों को भ्रामक एवं अनुचित प्रेरणा देने वाली फिल्मों से दूर रखें अथवा उनका उचित मार्गदर्शन करें।

संरक्षकों के अतिरिक्त समाज का भी यह दायित्व है कि ऐसी फिल्मों को प्रोत्साहन न मिले जो किशोरों को अनुचित एवं गैर-विधिक कार्यों के लिए उत्साहित कर सकती हैं। समाज को अपनी भावी पीढ़ी के स्वस्थ मानसिक विकास के लिए लैंगिक समानता, विधि एवं कानून के महत्व, सहिष्णुता तथा नैतिक मूल्यों के समावेशन हेतु फिल्मों को प्रेरक के रूप में प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि समाज के सभी अंग अपने-अपने रूप में यह उत्तरदायित्व ग्रहण करें।

किशोर मन नवीन विचारों, क्रिया-कलापों को ग्रहण करने तथा अनुप्रयोगों में लाने के लिए सर्वथा उर्वर होता है। अत: रचनात्मक अथवा विध्वंसात्मक किसी भी प्रकार के विचारों के प्रति यह वर्ग सुभेद्य होता है। यदि समाज इस ऊर्जा संपन्न वर्ग को सही मार्गदर्शन प्रदान करता है तो यह देश के निर्माण में अत्यधिक ग्रहणशील होने के कारण ये युवाओं के मार्गदर्शन के महत्त्वपूर्ण उपकरण बन सकते हैं।

(d) "दिव्यांगों का सशक्तिकरण"

देश और समाज के समुचित विकास को सुनिश्चित करने के लिए विकास का समावेशी होना आवश्यक है। समावेशन का आशय समाज के सभी वर्गों यथा वृद्धों, महिलाओं, नि:शक्त जनों सभी का विकास सुनिश्चित करना है। इस क्रम में दिव्यांगों को शमिल करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि इस वर्ग को पर्याप्त साधन एवं उचित वातावरण उपलब्ध कराया जाए तो इसकी ऊर्जा का प्रयोग राष्ट्र के निर्माण में तथा अनेक रचनात्मक कार्यों में किया जा सकता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दिव्यांगों के सशक्तिकरण के लिए अनेक कदम उठाए जा रहे हैं। इसका परिणाम विविध क्षेत्रों में दिव्यांगजनों द्वारा अर्जित उपलब्धियों के रूप में देखा जा सकता है।

वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार, जिसे 2016 में अद्यतन किया गया, भारत में दिव्यांगजनों की जनसंख्या 2.68 करोड़ तक आँकी गयी है; यह देश की कुल आबादी का 2.21% है। विषमतामूलक सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि से होने के कारण ये अनेक समस्याओं का सामना करते हैं। दिव्यांगजनों के लिए अवसरों की अपर्याप्तता इनमें निर्भरता मनोविकार को बढ़ावा देती है। ऐसी स्थिति में यह वर्ग उन विकृत परिस्थितियों का सामना करने के लिए मजबूर होता है, जिसमें उसका कोई भी दोष नहीं है। साथ-ही-साथ हम देश की एक बड़ी आबादी के अर्थव्यवस्था में समुचित योगदान से भी वंचित रह जाते हैं। अत: दिव्यांगों के सबलीकरण का प्रश्न उपस्थित होता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2007 में 'यू.एन. कन्वेंशन ऑन डिस्एबिलिटी राइट्स' पारित करके सभी राष्ट्रों से नि:शक्तजनों के हितों को सुनिश्चित करने का आह्वान किया। भारत इस कन्वेंशन का हस्ताक्षरकर्ता राष्ट्र है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 41 में राज्य को दिव्यांगों को विशेष सहायता प्रदान करने के लिए निर्देशित किया गया है। भारत ने राइट टू पर्सन विद डिस्एबिलिटी एक्ट, 1995 को वर्ष 2017 में संशोधित करके दिव्यांगों के सशक्तिकरण के प्रयासों के लिए इस कानून को और भी मजबूत किया है। इस अधिनियम के माध्यम से भारत में दिव्यांगता की श्रेणी को 7 से बढ़ाकर 21 कर दिया गया है। साथ ही सार्वजनिक नियोजन तथा शिक्षण संस्थाओं में दिव्यांगों के लिए आरक्षण की सीमा 3% से बढ़ाकर क्रमश: 4% और 5% कर दिया गया है।

केन्द्र सरकार ने सुगम्य भारत योजना के अंतर्गत सार्वजनिक कार्यालयों एवं सेवा केन्द्रों यथा अस्पताल, डाकघर, रेलवे एवं एयरपोर्ट आदि को दिव्यांगों के उपयोग हेतु सुरक्षित बनाने का प्रयास किया है। भारत में 'नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर एम्पावरमेंट ऑफ पर्सन्स विद मल्टीपल डिस्एबिलिटी, चेन्नई जैसी संस्थाएँ दिव्यांगों के लिए सहायक उपकरण बनाने में संलग्न हैं। इसी प्रकार इण्डियन साइन लैंग्वेज रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग सेन्टर दिव्यांगों के लिए संचार सुविधाओं को बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। दीनदयाल डिस्एबल्ड रिहैबिलिटेशन स्कीम भी दिव्यांगों के सहायतार्थ प्रारंभ की गयी है। देश भर में विभिन्न एन.जी.ओ. भी दिव्यांगों के सशक्तिकरण के लिए अलग-अलग तरह से योगदान दे रहे हैं।

दिव्यांगों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण सकारात्मक होना चाहिए। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में सर्वप्रथम दिव्यांग शब्द का प्रयोग करके संवेदनशील एवं दूरदर्शितापूर्ण पहल की। इसका उद्देश्य दिव्यांगों के प्रति मानवीय संवेदना का प्रदर्शन करना था। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि यदि अवसर दिया जाए तो दिव्यांग व्यक्ति भी समाज एवं राष्ट्र को अपने कार्यों से लाभान्वित कर सकता है। यू.पी.एस.सी. वर्ष 2015 बैच की टॉपर इरा सिंघल की सफलता ने इसे रेखांकित किया कि दिव्यांगता किसी भी स्थिति में व्यक्ति की अयोग्यता को प्रदर्शित नहीं करती है। इसी प्रकार अरुणिमा सिन्हा ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर वह कार्य कर दिखाया जो सामान्य व्यक्ति के लिए भी दुष्कर समझा जाता है।

सुप्रसिद्ध अंतरिक्ष विज्ञानी स्टिफन हॉकिंस को कौन भूल सकता है जिन्होंने अपनी जन्मजात दिव्यांगता के बावजूद अपने प्रेक्षणों से सम्पूर्ण विश्व समुदाय को लाभान्वित किया। इतिहास ऐसे ही कई व्यक्तित्वों से भरा पड़ा है, जिन्होंने अपनी दिव्यांगता की स्थिति के बावजूद अपने कौशल का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। अत: यदि समाज तथा सरकार दिव्यांगों के सबलीकरण में सक्रिय योगदान दे तो इनकी क्षमताओं का लाभ लिया जा सकता है। भारत में अभी भी दिव्यांगों के प्रति लोगों का व्यवहार संवेदनहीन बना हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में उन्हें लोगों के उपहास तक का सामना करना पड़ता है। शहरी क्षेत्रों में भी दिव्यांग किंचित अपर्याप्तताओं के कारण अपना सम्पूर्ण कौशल नहीं दिखा पाते हैं।

भारतीय समाज में व्याप्त इस संकुचित मानसिकता को जनजागरण तथा नैतिक मूल्यों के समावेशन के साथ ही दूर किया जा सकता है। जब लोग दिव्यांगों के प्रति सहकारितापूर्ण व्यवहार करेंगे तब वे भी आत्मविश्वास के साथ अपनी योग्यताओं का प्रदर्शन करेंगे। सबसे बढ़कर दिव्यांगों के प्रति उचित व्यवहार हमारा और हमारे समाज का नैतिक दायित्व भी है।

Q2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए: (12×5 = 60)

कुछ हज़ार वर्षों पूर्व तक मनुष्य पृथ्वी पर शिकारी मात्र था। नवपाषाण युग तक उसने कृषि के लिए बसना आरंभ नहीं किया था। दूरदराज के इलाकों में घूमे बिना वह ज़मीन की जुताई करके भोजन की आपूर्ति बढ़ाने में सक्षम हुआ और लगातार कृषि को उन्नत करने में लगा रहा। आज तक वह पहले की तुलना में अधिक और बेहतर भू-उपज लेने में सक्षम रहा है। लेकिन जहाँ तक समुद्रों का संबंध है, वह अब तक लगभग शिकारी ही है। वह मछलियों और दूसरे जल-जीवों को पकड़ता है, किंतु उनकी सतत वृद्धि और आपूर्ति को बनाए रखने के लिए सीमित प्रयत्न ही कर रहा है। अब तक जलीय शिकार से उसे अत्यधिक पौष्टिक प्रोटीन की काफी आपूर्ति हुई है। यह भू-कृषि से प्राप्त प्रोटीन की आपूर्ति का पूरक है। लेकिन दुनिया की बढ़ती आबादी के कारण मनुष्य को शीघ्र ही समुद्र से इतने ज़्यादा प्रोटीन की आवश्यकता हो सकती है कि उसकी यह भारी और सतत आपूर्ति भी ख़तरे में पड़ जाएगी। इसलिए मनुष्य को समुद्री खेती के माध्यम से पर्याप्त आपूर्ति बनाए रखने के लिए क़दम उठाने होंगे।

लघु स्तर पर मछली-पालन तालाबों और झीलों में पहले ही सफलतापूर्वक किया जा चुका है। विशेष रूप से जल-विद्युत् परियोजनाओं के लिए बाँधों के निर्माण द्वारा बनाई गई कृत्रिम झीलों में यह कार्य किया गया है। मीठे पानी के तालाबों में मछली की उपज से प्रोटीन की आपूर्ति में पहले से वृद्धि हुई है। उनमें से कुछ का विकास ग्रामीण समुदायों में कृषि-अधिकारियों की मदद और पर्यवेक्षण से हो रहा है।

एक बार मछली-तालाबों को युवा मछलियों से समृद्ध कर देने पर मछलियों का स्वस्थ वातावरण में विकास संभव होता है और उनके भोजन की पर्याप्त आपूर्ति भी हो जाती है। पानी में बड़ी संख्या में तैरते हुए प्लवक– सूक्ष्मजीव एवं वनस्पति– जलीय प्राणियों के लिए मुख्य खाद्य हैं। छोटी मछलियाँ इन्हें खाती हैं और अपने से बड़ी मछलियों का भोजन बनती हैं। चूँकि प्लवक पानी में मौजूद खनिजों से वृद्धि पाते हैं, इसलिए प्लवक की मात्रा को पानी में अतिरिक्त उर्वरकों द्वारा बढ़ाया जा सकता है।

हालाँकि समुद्री खेती व्यावहारिक और लाभदायक दोनों हो सकती है, लेकिन इससे पहले कई समस्याएँ हल करनी होंगी। उदाहरण के लिए समुद्र के उस भाग में उर्वरक डालना उपयोगी नहीं है, जहाँ समुद्र की धाराएँ तेज गति से उर्वरकों को मीलों दूर अनुत्पादक पानी में ले जाती हैं। अगर मछली-पालक उर्वरकों को एक निश्चित क्षेत्र तक सीमित कर सके, तब भी उसे 'अपने क्षेत्र' तक उर्वरक-पोषित मछलियों को रखने का तरीका खोजना होगा। और अपने व्यय का अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए उसे मछलियों को भोजन देने का ऐसा तरीका ढूँढ़ना होगा, जिससे वह भोजन उन्हीं मछलियों को मिले जिन्हें वह खिलाना चाहता है। उसे अखाद्य जल-जीवों को हटाने (निराई) की युक्ति लगानी होगी, जिससे वे उसकी मछलियों का भोजन साझा न करें।

स्पष्ट रूप से इन समस्याओं को हल करना बहुत आसान नहीं होगा– ख़ासकर समुद्र की विशालता का देखते हुए, जो पृथ्वी की सतह के लगभग तीन-चौथाई को घेरे हुए है। समुद्रों को पानी तालाबों और झीलों की तुलना में धाराओं में निरंतर गतिशील रहता है। शायद समस्याओं को धीरे-धीरे हल किया जाएगा। निकट भविष्य में मनुष्य महाद्वीपों के पास उथले अप-तटीय पानी में छोटे पैमाने पर मछली-पालन शुरू कर सकता है। वहाँ वह ऐसी मछलियों का संग्रहण कर सकता है जिनका वह उत्पादन करना चाहता है, अपनी मछलियों के भोजन को खा जाने वाले अवांछनीय जल-जीवों को हटा सकता है, आवश्यकता के अनुसार उस क्षेत्र में उर्वरक डाल सकता है और अंततः समय-समय पर परिपक्व मछलियों की फसल को इकट्ठा कर सकता है।

(a) शिकार की तुलना में कृषि किस प्रकार बेहतर है तथा भविष्य में समुद्री-खेती क्यों आवश्यक होगी? **(12)**

(b) मछली-पालन में उर्वरकों की क्या भूमिका है? **(12)**

(c) समुद्र के किस भाग में मछली-पालन आरंभ किया जा सकता है? **(12)**

(d) 'निराई' शब्द से आप क्या समझते हैं? **(12)**

(e) भविष्य में समुद्री खेती की समस्याओं का समाधान कैसे किया जा सकता है **(12)**

Ans. (a) मनुष्य आदि काल में भोजन के लिए शिकार पर आश्रित होने के कारण दूर-दराज के इलाकों में घूमा करता था, किन्तु कृषि के विकास के बाद इस समस्या का विकल्प उत्पन्न हो सका। अब वह एक ही स्थान पर फसलें उगा पाने में सक्षम हुआ; इससे उसे बेहतर जीवनचर्या, स्थायी निवास, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अंतर्क्रिया का अवसर प्राप्त हुआ। भविष्य में बढ़ती खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भूमि शेष नहीं रह जाएगी जिससे समुद्री खेती की आवश्यकता होगी। समुद्री-खेती इसलिए भी आवश्यक है ताकि समुद्री खाद्य संसाधनों का संपोषणीय दोहन किया जा सके।

(b) मछलियाँ प्लवकों को भोजन के रूप में ग्रहण करती हैं जबकि प्लवक जल में घुले पोषक तत्वों से वृद्धि करते हैं। अतः समुद्री खेती के लिए समुद्र में प्लवकों (मछलियों के लिए खाद्य पदार्थों) की मात्रा को बढ़ाने के लिए उर्वरकों की आवश्यकता होती है। हालाँकि समुद्र की विशालता को देखते हुए समुद्र में उर्वरकों का दक्षतापूर्ण प्रयोग करना दुष्कर प्रतीत होता है।

(c) समुद्री खेती लाभदायक होने के साथ-साथ जटिल भी है। मछली पालन के लिए अपेक्षाकृत शांत जलीय क्षेत्र का चुनाव किया जाना चाहिए ताकि उर्वरकों को एक निश्चित क्षेत्र तक सीमित किया जा सके। इससे उत्पादित खाद्य पदार्थों का वांछनीय प्रयोग किया जा सकता है। इससे पदार्थों का वांछनीय प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए मत्स्यगहन समुद्री क्षेत्रों का चयन किया जाना चाहिए।

(d) दिये गए गद्यांश में निराई का तात्पर्य ऐसी प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से अवांछनीय जलीय जीवों को पृथक किया जा सके। इसका उद्देश्य प्रयुक्त उर्वरक का लाभ उन जीवों को देना होता है, जिसका उत्पादन किया जाना है।

(e) समुद्री खेती की जटिलता को देखते हुए भविष्य में इससे जुड़ी अनेक समस्याओं का समाधान किया जाना शेष है। इनका समाधान करने के लिए मत्स्य क्षेत्रों को चिह्नित करना, उर्वरकों को सीमित क्षेत्र तक विस्तृत होने देना तथा उर्वरक पोषित मछलियों को संकेन्द्रित करने जैसे तरीके खोजे जा सकते हैं।

Q3. निम्नलिखित अनुच्छेद का संक्षेपण एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। इसका शीर्षक लिखने की आवश्यकता नहीं है। संक्षेपण अपने शब्दों में ही लिखिए:

(1×60 = 60)

भारत की विशाल आबादी ग्रामीण है। उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए ग्रामीण बुनियादी ढाँचे में सर्वांगीण विकास की आवश्यकता है, जिससे समान और समावेशी विकास के दीर्घपोषित उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। ग्रामीण बुनियादी ढाँचे का एक महत्त्वपूर्ण घटक पेयजल व्यवस्था है। पानी निस्संदेह एक महत्त्वपूर्ण लोकहित है। नगरिकों की माँगों को पूरा करने के लिए, पानी के बुनियादी ढाँचे के निर्माण के लिए सार्वजनिक निवेश में वृद्धि की आवश्यकता है। एक जल-सुरक्षित राष्ट्र न केवल अपने नागरिकों को स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराएगा, बल्कि एक स्वस्थ और आर्थिक रूप से उत्पादक समाज को भी सुनिश्चित करेगा। हालाँकि, भारत की विशाल ग्रामीण आबादी की पीने के पानी की ज़रूरतों को पूरा करना एक कठिन कार्य है, जिसका मुख्य कारण स्थापित पेयजल आपूर्ति की क्षमता में कमी, सामाजिक-आर्थिक विकास का निम्न स्तर, शिक्षा और पानी के उपयोग और उपभोग के बारे में जागरूकता में कमी का होना है।

संविधान का अनुच्छेद 47 राज्यों को सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने का आदेश देता है। स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था बीमारियों और घातक घटनाओं में कमी लाती है और जीवन-स्तर को बेहतर बनाने में मदद करती है। देश की करोड़ों की आबादी के समग्र स्वास्थ्य में सुधार के लिए स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता का प्रावधान महत्त्वपूर्ण है।

सतत् विकास पानी की उपलब्धता और स्वच्छता का सतत प्रबंधन सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर ज़ोर देता है। सुरक्षित पेयजल तक पहुँच के मामले में इससे एक तरह से यही तात्पर्य है कि 'कोई भी पीछे न छूट जाए' जो कि इस वर्ष 'विश्व जल दिवस' का थीम भी था। विश्व जल दिवस प्रति वर्ष 22 मार्च को मनाया जाता है।

सरकार ग्रामीण जनों हेतु सुरक्षित पेयजल सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। सरकार द्वारा समय-समय पर इस क्षेत्र में सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए महत्त्वपूर्ण कदम भी उठाए जाते रहे हैं। ग्रामीण जल आपूर्ति योजनाओं के क्रियान्वयन

के लिए अनुदान दिए जाने से लेकर क्रियान्वयन एवं रखरखाव पहलुओं और भू-जल पुनर्भरण हेतु भी कदम उठाए गए हैं। कुछ अन्य कदमों में वर्षा जल संचयन भी शामिल है जो कि बेहद महत्त्वपूर्ण पहलू है और ग्रामीण क्षेत्रों में सतत रूप से सुरक्षित पेयजल आपूर्ति में मददगार हो सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृत्रिम पुनर्भरण और वर्षा जल संचयन ढाँचे के निर्माण हेतु सरकारें मास्टर प्लान पर कार्य कर रही हैं। भारत में ऐसी सफलता की कहानियों की भरमार है जो कि जल संचयन के हमारे प्राचीन परंपरागत ज्ञान और विवेक की तरफ ध्यान आकर्षित करती हैं। 2001 में तमिलनाडु सरकार ने हर परिवार के लिए वर्षा जल संरक्षण की आधारभूत संरचना रखना अनिवार्य कर दिया। बैंगलोर और पुणे जैसे नगरों में भी इसके जैसा प्रयोग किया गया है, जहाँ आवास-समितियों द्वारा वर्षा जल संरक्षण अपेक्षित है। दूसरे राज्यों में भी इसी प्रकार की अनेक पहलें हुई हैं।

भू-जल का अति दोहन भारत में एक मुख्य समस्या है। इसे रोकने के लिए राज्य सरकारों द्वारा नियामक तंत्र की आवश्यकता है। गंभीर रूप से प्रभावित क्षेत्रों में अत्यधिक कुँओं की खुदाई पर प्रतिबंध लगना चाहिए। पेयजल आपूर्ति की योजनाओं को प्रभावी बनाने के लिए पंचायती राज संस्थाओं की अधिक भागीदारी की ज़रूरत है। फिलहाल पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका अति न्यून है। ग्रामीण समुदायों, ग़ैर-सरकारी संगठनों तथा सरकार की सुविधा दाता और सह-वित्तपोषक के रूप में भागीदारी सफल रही है। हमें याद रखना चाहिए कि ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की उपलब्धता और पहुँच का दायरा बढ़ाने के लिए, हमें ग्रामीण समुदायों के सक्रिय सहयोग से पानी के न्यायसंगत संरक्षण और उपयोग हेतु हर प्रकार के प्रयास करने की आवश्यकता है।

समुदाय की भागीदारी, संचालन और रखरखाव की आर्थिक व्यवहार्यता को बढ़ाती है। यह अंतर्निहित सामुदायिकता के कारण बेहतर रखरखाव और तैयार की गई प्रणाली के जीवन काल को भी बढ़ाती है। पीने के पानी के स्रोतों के पास न केवल स्वच्छता बनाए रखने में समुदाय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, बल्कि उन तरीकों और साधनों को भी सुधारना है, जिनके द्वारा संग्रह, भंडारण और उपयोग करते समय प्रदूषण से बचने के लिए पानी एकत्र किया जाता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में इन योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए पंचायती राज संस्थाएँ, स्वयं-सहायता समूह और सहकारी समितियों के माध्यम से समुदाय की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है, ताकि 2030 तक 'हर घर जल' के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके और दीर्घकालिक टिकाऊ समाधान को साकार किया जा सके। (752 शब्द)

Ans. भारत की व्यापक ग्रामीण जनसंख्या के लिए शुद्ध पेयजल जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करना सर्वांगीण विकास का अनिवार्य घटक है। इसके लिए सार्वजनिक निवेश में वृद्धि करना आवश्यक है। हालांकि भारत की बड़ी जनसंख्या तथा गाँवों के पिछड़े अवसंरचनात्मक एवं सामाजिक-आर्थिक ढांचे को देखते हुए यह कार्य सरल प्रतीत नहीं

होता। बीमारियों से बचाव तथा अच्छे स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ जल के महत्व को देखते हुए इसे संविधान के अनुच्छेद 47 में राज्य के दायित्व के रूप में शमिल किया गया है। यह लोगों के विकास एवं समग्र स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

सतत् विकास का एक घटक स्वच्छ एवं निरंतर पेयजल की उपलब्धता है। इस वर्ष विश्व जल दिवस (22 मार्च) की थीम : 'कोई भी पीछे न छूट जाए' भी इसी से संबंधित थी। भारत में भूजल प्रबंधन एवं जल संरक्षण से जुड़ी प्राचीन पद्धतियाँ महत्त्वपूर्ण होती जा रही हैं। सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए भू-जलपुनर्भरण, वर्षा जल संचयन तथा जल आपूर्ति हेतु धन के आवंटन जैसे महत्त्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इस क्रम में तमिलनाडु सरकार (2001) ने, बैंगलोर तथा पुणे जैसे नगरों ने वर्षा जल (पुनर्भरण अवसंरचना के आवासों में निर्माण किये जाने जैसी पहल की है।

भारत में भू-जल का अतिदोहन एक बड़ी समस्या है। अत: इसे नियंत्रित करने के लिए नियामकीय प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। इस संबंध में पंचायतीय संस्थाओं एवं गैर-सरकारी संगठनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। इसी के साथ नागरिक स्तर पर भी जल संरक्षण, न्यायपूर्ण वितरण तथा जल स्रोतों के रखरखाव का प्रयास करना चाहिए जिससे 2030 तक 'हर घर जल' का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

Q4. निम्नलिखित गद्यांश का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए: (1×20 = 20)

जब कोई व्यक्ति अपने को देखता है तो वह अपने बारे में ग़लत अनुमान लगा लेता है। वह अपने उद्देश्यों को ही देखता है। ज़्यादातर लोग अच्छे उद्देश्य लेकर चलते हैं और मान लेते हैं कि वे जो भी काम कर रहे हैं, उसका अच्छा ही परिणाम होगा। किसी भी व्यक्ति के लिए अपने कार्यों का तटस्थ मूल्यांकन कठिन है, जिससे हो सकता है और प्राय: होता भी है कि उसके अच्छे उद्देश्यों में विरोधाभास पैदा हो जाते हैं। ज़्यादातर लोग काम करने के इरादे से आते हैं और अपना काम उस ढंग से करते हैं जो उन्हें सुविधाजनक लगता है; और शाम को संतुष्टि की भावना लिए घर चले जाते हैं। वे अपने काम का मूल्यांकन नहीं करते। वे अपने इरादों का ही मूल्यांकन करते हैं। ऐसा माना जाता है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपने कार्य को समय के भीतर खत्म करने का इरादा रखता है और अगर इसमें विलंब होता है तो यह उसके नियंत्रण के बाहर की बात होती है। काम में देरी करने का उसका कोई इरादा नहीं होता है। लेकिन अगर उसके काम का तरीका या आलस्य देरी का कारण बनता है, तो क्या यह इरादतन नहीं होता?

समस्या यह है कि हम प्राय: जीवन के साथ जूझने के बजाय इसका विश्लेषण करने लगते हैं। लोग अपनी असफलताओं से कुछ सीखने के बजाय या उनका अनुभव लेने के बजाय, उनके कारणों एवं प्रभाव की चीरफाड़ करने लगते हैं। कठिनाइयों एवं संकटों के माध्यम से ईश्वर हमें बढ़ने का अवसर प्रदान करता है। इसलिए जब आपकी उम्मीदें,

सपने एवं लक्ष्य चूर-चूर हो गए हों तो अवशेषों के भीतर तलाश कीजिए। आपको उनके भीतर छिपा कोई सुनहरा मौका अवश्य मिलेगा।

लोगों की कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए उनको प्रेरित करना और हताशा से उबारना हर नेता के लिए हमेशा एक चुनौती भरा काम होता है। संगठनों में बदलाव लाने के मामलें में एक नेता स्वीकृति और प्रतिरोध के बीच का रास्ता तलाश करता है।

Ans. When a person sees himself, he makes a estimation wrong about himself. He sees only his objectives. Most people move with good objectives and believe that whatever work they are doing, it will result in good consequence. Neutral evaluation of one's actions is difficult for any person, which can cause and often does lead to contradictions in his good objectives. Most people come with the intention of working and does their work in a way that they find convenient; And in the evening go home with a feeling of satisfaction. They do not evaluate their work. They evaluate only their intentions. It is believed so, because any person intends to finish his work within time and if there is delay then it is beyond his control. He has no intention of delaying the work. But if his mode of work or laziness causes delay, is it not intentional?

The problem is that instead of struggling with life, we often start analyzing it. People, instead of learning something from their failures or experiencing them, begin to dissect their causes and effects. Through difficulties and crises, God gives us the opportunity to grow. Therefore, when your hopes, dreams and goals are crushed, then search within the remains. You will definitely find a golden opportunity hidden within them.

To increase the efficieny of people, motivating them and recovering from frustration is always a challenge for every leader. A leader seeks the path between acceptance and resistance in the context of bringing changes in organizations.

Q5. निम्नलिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए: (1×20 = 20)

Translate the following passage into Hindi:

Freedom has assuredly given us a new status and new opportunities. But it also implies that we should discard selfishness, laziness and all narrowness of outlook. Our freedom suggests toil and the creation of new values for old ones. We should so discipline ourselves as to be able to discharge our responsibilities satisfactorily. If there is any one thing that needs to be stressed, it is that we should put in action our full capacity, each one of us in productive effort — each one of us in his own sphere, however humble. Work, unceasing work, should now be our watchword. Work is wealth, and service is happiness. The greatest crime today is idleness. If we root out idleness, all our difficulties, including even conflicts, will gradually disappear. Whether as constable or high official of the state, whether as

businessmen or industrialist, artisan or farmer, each one is discharging the obligation to the state, and making a contribution to the welfare of the country. Honest work is the anchor to which we should cling if we want to be saved from danger of difficulty. It is the fundamental law of progress.

Ans. स्वतंत्रता ने हमें निश्चय ही नयी स्थिति तथा नये अवसर दिये हैं, परन्तु इसका यह आशय है कि हमें स्वार्थ, आलस्य तथा संकीर्ण अंतर्दृष्टि को त्याग देना चाहिए। हमारा स्वतंत्रता संग्राम हमारे लिए कठिन परिश्रम तथा नये मूल्यों का निर्माण करता है। हमें अपने दायित्वों के संतोषप्रद निर्वहन को लेकर अधिक अनुशासित होना चाहिए। अगर कोई ऐसी चीज है जिस पर जोर दिया जाना चाहिए, तो वह यह है कि हममें से हर एक को अपनी पूरी क्षमता से उत्पादक कार्यों में लगना चाहिए। हालांकि हममें से हर एक को अपने क्षेत्र में विनम्र होना चाहिए। कार्य ही हमारा प्रहरी होना चाहिए। कार्य ही धन और सेवा ही आनंद है। आज आलस्य ही सबसे बड़ा अपराध है। यदि हम आलस्य को जड़ से समाप्त कर देते हैं तो संघर्ष सहित हमारी सारी कठिनाइयाँ धीरे-धीरे गायब हो जाएँगी। चाहे सिपाही हो या राज्य का उच्चाधिकारी, चाहे व्यवसायी हो या उद्योगपति, कारीगर हो या किसान, प्रत्येक राज्य के लिए अपने दायित्व का निर्वहन कर रहा है, और देश के कल्याण में अपना योगदान दे रहा है, ईमानदारीपूर्ण कार्य वह सहारा है जिसका प्रयोग हमें खतरे एवं कठिन परिस्थितियों में बचाव के लिए करना चाहिए। यही प्रगति का मूल नियम है।

Q6. (a) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए: (2×5 = 10)

(i) आकाश-पाताल एक करना **(ii)** घी के दीये जलाना

(iii) तारे तोड़ लाना **(iv)** घर भरना

(v) टाँग पसार कर सोना

(b) निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए: **(2×5 = 10)**

(i) शायद आज वर्षा अवश्य होगी।

(ii) मुझे एक पानी का गिलास चाहिए।

(iii) मैंने खाना खाना है।

(iv) मोहन और शीला बाजार जा रही हैं।

(v) जुलूस में सैंकड़ों हाथियाँ शामिल थे।

(c) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए: **(2×5 = 10)**

(i) दूध **(ii)** आँख

(iii) यमुना **(iv)** रुधिर

(v) पक्षी

(d) निम्नलिखित युग्मों को इस तरह से वाक्य में प्रयुक्त कीजिए कि उनका अर्थ एवं अंतर स्पष्ट हो जाए: (2×5 = 10)

(i) अभिनय – अभिनव **(ii)** कपट – कपाट

(iii) गुर – गुरु **(iv)** जूठा – झूठा

(v) बुरा – बूरा

Ans. (a) (i) आकाश-पाताल एक करना

अर्थः कठिन परिश्रम करना

वाक्य प्रयोगः भारतीय सेना के जवानों ने आपदा राहत कार्य के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया।

(ii) घी के दीये जलाना

अर्थः खुशियाँ मनाना

वाक्य प्रयोगः 14 वर्ष के वनवास के बाद राम के आयोध्या आने पर आयोध्या, वासियों ने घी के दीये जलाए।

(iii) तारे तोड़ लाना

अर्थः कठिन कार्य करना

वाक्य प्रयोगः प्रेमिका को प्रभावित करने के लिए प्रेमी ने कहा कि वह उसके लिए आसमान से तारे तोड़ लाएगा।

(iv) घर भरना

अर्थः घर में समृद्धि आना

वाक्य प्रयोगः कठिन परिश्रम करके मनुष्य अपना घर भर सकता है।

(v) टाँग पसार कर सोना

अर्थः निश्चिंत होकर सोना

वाक्य प्रयोगः कुछ लोग पड़ोसी का घर जलता देख कर भी टाँग पसार कर सो जाते हैं।

(b) (i) शायद आज वर्षा अवश्य होगी।

शुद्ध रूपः शायद आज वर्षा होगी

(ii) मुझे एक पानी का गिलास चाहिए।

शुद्ध रूपः मुझे एक गिलास पानी चाहिए।

(iii) मैंने खाना खाना है।

शुद्ध रूपः मुझे खाना खाना है।

(iv) मोहन और शीला बाजार जा रही हैं।

शुद्ध रूपः मोहन और शीला बाजार जा रहे हैं।

(v) जुलूस में सैंकड़ों हाथियाँ शामिल थे।

शुद्ध रूपः जुलूस में सैंकड़ों हाथी शामिल थे।

(c) (i) दूध : दुग्ध, क्षीर

(ii) आँख : नेत्र, चक्षु

(iii) यमुना : सूर्यसुता, अर्कजा

(iv) रुधिर : रक्त, लहू

(v) पक्षी : खग, पखेरू

(d) (i) अभिनय - अभिनव

वाक्य प्रयोगः अभिनय (अदाकारी) के क्षेत्र में निरंतर अभिनव (नवीन) कार्यों के लिए तैयार रहना चाहिए।

(ii) कपट - कपाट

वाक्य प्रयोगः योगेश ने अपने छोटे भाई को घर से निकालने के लिए उसे कपट (छल) करके घर से बाहर भेजा और कपाट (दरवाजा) बंद कर दिया।

(iii) गुर - गुरु

वाक्य प्रयोगः अर्जुन ने अपने गुरु (शिक्षक) द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या के गुर (गुण) सीखे थे।

(iv) जूठा - झूठा

वाक्य प्रयोगः क्या कोई अपने मित्र को जूठा (खाने के बाद बचा भोजन) भोजन खिला सकता है; कोई झूठा (झूठ बोलने वाला) व्यक्ति ही ऐसा कर सकता है।

(v) बुरा - बूरा

वाक्य प्रयोगः बाजार में एक बुरा (गलत) व्यक्ति चीनी बताकर बूरा (चीनी का बारीक चूर्ण) बेच रहा था।

आगामी यू.पी.एस.सी. सी.एस. परीक्षाओं हेतु महत्त्वपूर्ण व्याकरण

शब्द-युग्म एवं उनके वाक्य - प्रयोग

1. अंजन - अजन
   वाक्य प्रयोग = इस अजन (निर्जन) क्षेत्र में अंजित (काजल युक्त) नयनों का गुणगान कौन करेगा?
2. अंतर - अतर
   वाक्य प्रयोग = यहां पर ऐसे भी लोग हैं जिन्हें इस अतर (इत्र) युक्त वातावरण में भी कोई अंतर (फर्क) की अनुभूति नहीं हो रही है।
3. अनल - अनिल
   वाक्य प्रयोग = जैसे-जैसे अनिल (हवा) का प्रभाव बढ़ता गया, वैसे-वैसे अनल (आग) का क्षेत्र बढ़ता गया।
4. अचल - अचला
   वाक्य प्रयोग = इस अचला (पृथ्वी) पर न जाने कितने ऊंचे-ऊंचे अचल (पर्वत) हैं, जिनसे नदियों का उद्‌गम हुआ है।
5. अथक - अकथ
   वाक्य प्रयोग = अथक (न थकने वाला) परिश्रम से जो सफलता मिलती है उसका वर्णन अकथ (अकथनीय) है। उससे एक विशेष आनंद की प्राप्ति होती है।
6. अभिहित - अविहित
   वाक्य प्रयोग = ऐसे वातावरण में इस प्रकार का अभिहित (कहा हुआ) कथन को कोई भी अविहित (अनुचित) ही कहेगा।
7. अपत्य - अपथ्य
   वाक्य प्रयोग = उसके अपत्य (संतान) को तीन दिन से बुखार है, फिर भी वह अपथ्य (निषिद्ध भोजन) आहार के प्रति सजग नहीं है।
8. अर्थ - अर्द्ध
   वाक्य प्रयोग = मोहित को अभी तक अर्द्ध (आधा) अर्थ (धन) की ही वापसी प्राप्त हुई है। आगे शेष राशि की उम्मीद नहीं है।
9. अविराम - अभिराम
   वाक्य प्रयोग = रोहित के अभिराम (सुंदर) चित्रों की प्रशंसा अविराम (लगातार) बढ़ती ही जा रही है।

10. अर्चन – अर्जन
वाक्य प्रयोग = मंदिर के दाएं कोने में अर्चन (पूजा) सामग्री का अर्जन (संग्रह) करने की आज्ञा है।

11. अवलम्ब – अविलम्ब
वाक्य प्रयोग = ऐसी संकट की घड़ी में मुझे आपके अवलम्ब (सहारा) की अविलम्ब (शीघ्र) आवश्यकता है।

12. अविज्ञ – अभिज्ञ
वाक्य प्रयोग = इस सभा में केवल अभिज्ञ (विद्वान) लोग ही उपस्थित नहीं हैं, बल्कि अविज्ञ (मूर्ख) लोगों की भी भरमार है।

13. अभिनय – अभिनव
वाक्य प्रयोग = हर कोई अभिनव (नया) रूप के अभिनय (अनुकरण) के लिए लालायित रहता है।

14. उपहार – उपहार
वाक्य प्रयोग = मैंने कल उसे कुछ चीजें उपहार (भेंट) में दी थी, परंतु कुछ घंटे उपरांत ही उनका अपहार (अपहरण) कर लिया गया।

15. अब्ज – अब्द
वाक्य प्रयोग = विगत अब्द (वर्ष) मेरे एक मित्र ने मुझे एक श्वेत अब्ज (कमल) उपहार में दिया था।

16. अलि – आली
वाक्य प्रयोग = सुबह मेरी आली (सखी) ने गुलाब के पुष्प पर एक अलि (भौंरा) को मँडराते हुए देखा था।

17. अम्बुज – अम्बुद
वाक्य प्रयोग = अम्बुज (कमल) पत्र पर अम्बुद (बादल) से गिरी जल की बूँदें मोती की तरह चमक रही थीं।

18. अशीलता – असिलता
वाक्य प्रयोग = अशीलता (दुराचरण) की असिलता (तलवार) से हम समाज में कीर्ति नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

19. अम्ब – अम्भ
वाक्य प्रयोग = मेरे मकान के पश्च भाग में एक अम्ब (आम्र वृक्ष) का पेड़ है जो अम्भ (जल) के अभाव में वृद्धि नहीं कर पा रहा है।

20. अर्घ – अर्घ्य
वाक्य प्रयोग = आजकल बाजार में अर्घ्य (पूजा) सामग्री का अर्घ (मूल्य) बढ़ा हुआ है।

21. अरि – अरी
वाक्य प्रयोग = अरी (संबोधन) सखी! मैं तुम्हारी अरि (शत्रु) नहीं हूँ जो तुम्हें बार-बार अपमानित करने का प्रयास करुँगी।

22. अपेक्षा – उपेक्षा
वाक्य प्रयोग = रामू की अपेक्षा (तुलना) सोहन को कम आँकना एक प्रकार से उसकी उपेक्षा (तिरस्कार) ही है।

23. अग – आग
वाक्य प्रयोग = अभ्रक को हम अग (न जलने वाला) कह सकते हैं क्योंकि आग (अग्नि) इसे जला नहीं सकती है।

24. अगर – आगर
वाक्य प्रयोग = अगर (यदि) लोगों का आगर (समूह) किसी भी कार्य में लग जाए तो उसे सरलता से पूरा किया जा सकता है, परंतु अकेला व्यक्ति उसे आसानी से नहीं कर सकता है।

25. अगला – अर्गला
वाक्य प्रयोग = उसके घर के अगले (आगे का) दरवाजे की अर्गला (सिटकनी) ठीक से काम नहीं कर रही है।

26. अक्ष – अक्षि
वाक्य प्रयोग = सर्वप्रथम अपने अक्षि (आँख) को अक्ष (धुरी) पर केन्द्रित करें फिर निशाना लगाएं।

27. अग – अघ
वाक्य प्रयोग = अघ (पाप) से भरा व्यक्ति अग (स्थिर) नहीं रह सकता है क्योंकि वह भ्रम की स्थिति में रहता है।

28. असक्त – आसक्त
वाक्य प्रयोग = धन-दौलत के दलदल में असक्त (मोहित) व्यक्ति आध्यात्मिक मार्ग की यात्रा करने में असक्त (असमर्थ) होता है।

29. अभय – उभय
वाक्य प्रयोग = मोहन तथा सोहन उभय (दोनों) व्यक्ति अभय (भय रहित) की स्थिति में नहीं आ पा रहे हैं, क्योंकि दो दिन पूर्व उन्होंने घर में आते हुए साँप देखा था।

30. अपकार – उपकार
वाक्य प्रयोग = अपकार (बुराई करना) तथा उपकार (भलाई करना) दोनों एक साथ नहीं चल सकते।

31. अन्न – अन्य
वाक्य प्रयोग = हमें अन्य (दूसरा) अन्न (अनाज) की आवश्यकता है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी हो।

32. अश्व – अश्म
वाक्य प्रयोग = वीर सैनिक का अश्व (घोड़ा) एक अश्म (पत्थर) के टुकड़े से टकराकर चोटिल हो गया।

33. अपचार – उपचार
वाक्य प्रयोग = एक रोगी का उपचार (इलाज) करने से उसे राहत मिलती है तथा एक अपराधी द्वारा किए गए अपचार (अपराध) के लिए उसे दंड मिलता है तब समाज में लोगों को राहत मिलती है।

34. अवसान – आसान
वाक्य प्रयोग = बड़े अपराधियों का अवसान (अंत) करना आसान (सरल) काम नहीं है।

35. आकर – आकार
वाक्य प्रयोग = इस आकार (खजाना) के बॉक्स का आकार (बनावट) विभिन्न ढंग का है।

36. आसन – आसन्न
वाक्य प्रयोग = बच्चे का आसन (बिछौना) उसके माँ के आसन्न (समीप) ही था।

37. अनादि – अन्नादि
वाक्य प्रयोग = अन्नादि (अन्य वगैरह) का प्रयोग मानव अनादि (जिसका आरंभ नहीं) काल से नहीं कर रहा है, प्रारंभ में वह शिकार पर निर्भर था।

38. आधि – आधी
वाक्य प्रयोग = आधुनिक युग में दुनिया की आधी (आधा) आबादी आधि (मानसिक कष्ट) से पीड़ित है।

39. आर्त्त – आर्द्र – आर्द्रा
वाक्य प्रयोग = आर्द्रा (नक्षत्र का नाम) नक्षत्र में प्रकृति आर्द्र (गीला) हो जाती है, ऐसा लगता है कि उसे किसी आर्त्त (दुःख) ने आ घेरा है।

40. आभार – अभार
वाक्य प्रयोग = आपका मुझ पर इतना आभार (अहसान) है कि मैं उससे अभी अभार (भार रहीत) नहीं हो पा रहा हूँ।

41. आभाष – आभास
वाक्य प्रयोग = किसी भी लेख के आभाष (भूमिका) से ही उसके विषय का आभास (झलक) मिल जाता है।

42. आर्द्र – आद्रक
वाक्य प्रयोग = आर्द्र (गीला) आद्रक (अदरक) को ज्यादा दिन नहीं रखा जा सकता है।

43. आयास – आवास
वाक्य प्रयोग = मेरे आवास (निवास) पर आप सुबह सात बजे तक पहुँचने का आयास (प्रयत्न) करें।

44. इतर – इत्र
वाक्य प्रयोग = इतना अच्छा सुवासित गंध वाला इत्र (पुष्प सार) आपको इतर (दूसरा) नहीं मिलेगा।

45. उर – उरू
वाक्य प्रयोग = मानव सेवा में समर्पित होने के लिए उरू (बड़ा) उर (हृदय) की आवश्यकता होती है। यह साधारण व्यक्ति के बस की बात नहीं है।

46. उत्पल – उपल
वाक्य प्रयोग = उपल (पत्थर) की चोट से उत्पल (कमल) के पुष्प को नुकसान पहुँचा है।

47. उद्योत – उद्योग
वाक्य प्रयोग = कुछ भी उद्योग (उपाय) कर लीजिए यहाँ उद्योत (प्रकाश) की व्यवस्था नहीं की जा सकती है।

48. उतर – उत्तर
वाक्य प्रयोग = मानसिकता के स्तर पर इतना नीचे उतर (नीचे आना) कर उत्तर (जवाब) देना, उचित नहीं लगता है।

49. उद्धरण – उदाहरण
वाक्य प्रयोग = अच्छा निबंध लिखते समय किसी प्रसिद्ध विचारक का उद्धरण (कथन) प्रस्तुत करके उदाहरण (मिसाल) प्रस्तुत करना अच्छा माना जाता है

50. उधार – उद्धार
वाक्य प्रयोग = उधार (ऋण) की राशि से आजतक किसी का उद्धार नहीं हुआ है।

51. उन –ऊन
वाक्य प्रयोग = उन (वे) के ऊन (भेड़ का बाल) की गुणवत्ता ठीक नहीं है।

52. ओर – और
वाक्य प्रयोग = मोहन और (तथा) सोहन के घर की ओर (तरफ) एक बगीचा है।

53. कंथा – कथा
वाक्य प्रयोग = मोहन एक ऐसा लड़का है जिसकी कथा (कहानी) एक कंथा (गुदड़ी) के लाल की तरह दर्दों से भरी हुई है।

54. कच – कूच
वाक्य प्रयोग = मोहित को भेड़ का कच (बाल) लाने के लिए गड़ेरिये के गाँव के लिए कल कूच (प्रस्थान) करना होगा।

55. कटक – कंटक
वाक्य प्रयोग = भारतीय कटक (सेना) हर प्रकार के कंटक (काँटा) से भरे मार्ग में आगे बढ़ने के लिए तैयार रहती है।

56. कटिबद्ध – कटिबंध
वाक्य प्रयोग = जिस स्त्री के कमर में कटिबंध (एक प्रकार का आभूषण) लगा हुआ है वह मंदिर जाने के लिए कटिबद्ध (तैयार) है।

57. करि – कीर
वाक्य प्रयोग = करि (हाथी) ने कल जिस पेड़ को नष्ट कर दिया, उस पर कीर (तोता) ने एक घोसला बनाया था।

58. कलित – कीलित
वाक्य प्रयोग = राजीव के घर में मैंने एक कीलित (कील जुड़ा हुआ) दरवाजा देखा जो कलित (सुन्दर) आकृतियों से युक्त था।

59. कंज – कुंज
वाक्य प्रयोग = बगीचे के किनार–किनारे कुंज (लता) की कतारें थी तथा बीच में स्थित तालाब में कंज (कमल) खिले हुए थे।

60. क्रम – कर्म
वाक्य प्रयोग = उनके कर्म (कार्य) का क्रम (सिलसिला) अभी भी खत्म नहीं हुआ है।

61. कल – काल
वाक्य प्रयोग = आधुनिक काल (समय) में बिना कल (मशीन) के काम चलना मुश्किल है।

62. कंकाल – कंगाल
वाक्य प्रयोग = मैंने एक कंगाल (निर्धन) मजदूर को देखा जिसका शरीर कंकाल (अस्थिपिंजर) की तरह लग रहा था।

63. करकट – कर्कट
वाक्य प्रयोग = सड़क किनारे पड़े हुए करकट (कचरा) के पास मैंने एक कर्कट (केकड़ा) को रेंगते हुए देखा।

64. कटौती – कठौती
वाक्य प्रयोग = कठौती (काष्ठ पात्र) में रखे हुए तेल की मात्रा अधिक है, उसमें कटौती (कम करना) की जरूरत है।

65. कलुष – कलश
वाक्य प्रयोग = जब किसी अपराधी के कलुष (पाप) का कलश (मटका) भर जाता है तो उसका अंत निश्चित हो जाता है।

66. कांत – कलांत
वाक्य प्रयोग = मोनिका का कांत (पति) कल कलांत (थका हुआ) स्थिति में घर पहुँचा।

67. कान – कानि
वाक्य प्रयोग = कान (श्रवणेंन्द्रिय) की कानि (मर्यादा) यह है कि यह मन को शांति प्रदान करने वाले शब्दों का श्रवण करें, अन्यथा शरीर को कष्ट ही मिलेगा।

68. कांति – क्रांति
वाक्य प्रयोग = सन् 1857 की क्रांति ने देश के सेनानियों के चेहरे पर एक कांति (चमक) उत्पन्न कर दी थी। वे राष्ट्र के लिए सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तत्पर थे।

69. कुंडल – कुंतल
वाक्य प्रयोग = अरुण अपने कानों में कुंडल (गहना) पहन रखा था परंतु कुंतल (सिर के बाल) के कारण ने दिखाई नहीं पड़ रहे थे।

70. कुल – कूल
वाक्य प्रयोग = राजीव के कुल (वंश) के लोग कल नदी के कूल (किनारा) पर एकत्रित होकर भागवद् कथा का श्रवण कर रहे थे।

71. कूट – कुट
वाक्य प्रयोग = भारत वर्ष में कई जगह कूट (पर्वत) के ऊपर कुट (किला) निर्माण का दृश्य दिखाई पड़ता है जिन्हें राजाओं ने बनवाया था।

72. कुजन – कूजन
वाक्य प्रयोग = पक्षियों का कूजन (कलरव) कुजन (दुर्जन) व्यक्ति के हृदय में भी आनंद की लहर उत्पन्न कर देता है।

73. कूर – क्रूर
वाक्य प्रयोग = कूर (कायर) तथा क्रूर (निर्दयी) लोग जीवन के सहजता का आनंद नहीं उठा पाते हैं।

74. केतू – केतु
वाक्य प्रयोग = प्रदीप के केत (घर) के ऊपर मैंने श्वेत वर्ण की केतु (ध्वजा) को लहराते देखा था।

75. कोस – कोश
वाक्य प्रयोग = मेरे निवास से दस कोस (दूरी की माप) की दूरी पर एक प्राचीन खंडहर है जिसके तहखाने में कोश (खजाना) मिला है।

76. कोशल – कौशल
वाक्य प्रयोग = कोशल (अयोध्या) नरेश श्रीराम ने बड़े कौशल (निपुणता) से राज्य का संचालन किया।

77. कृति – कृती
वाक्य प्रयोग = महादेवी वर्मा एक प्रख्यात कृती (रचनाकार) थीं। उनकी कृति (रचना) 'यामा' एक प्रसिद्ध कविता संग्रह है।

78. कृपण – कृपाण
वाक्य प्रयोग = एक कृपण (कंजूस) व्यक्ति इस बहुमूल्य कृपाण (तलवार) की कीमत अदा नहीं कर सकता है।

79. कृमि – कृषि
वाक्य प्रयोग = पिछले वर्ष किसानों की कृषि (खेती) कृमियों (कीटों) के कारण बरबाद हो गई थी।

80. क्षति – क्षिति
वाक्य प्रयोग = मानव जाति ने क्षिति (पृथ्वी) के पर्यावरण को काफी क्षति (नुकसान) पहुँचायी है।

81. खर – खुर
वाक्य प्रयोग = खर (गधा) का खुर (पशु का खुर) बहुत ही कठोर होता है।

82. खाद – खाद्य
वाक्य प्रयोग = अत्यधिक रासायनिक खाद (उर्वरक) के प्रयोग के कारण खाद्य (खाने योग्य) वस्तुओं की गुणवत्ता प्रभावित हुई है।

83. गट्टा – गट्ठा
वाक्य प्रयोग = रामू ने अपने गट्टे (कलाई) की ताकत से लकड़ी के एक बहुत बड़े गट्ठे (गट्ठर) को उठा लिया।

84. गण – गण्य
वाक्य प्रयोग = मेले में आए इतने बड़े लोगों के गण (समूह) को गण्य (गिने जाने योग्य) के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता है।

85. गाड़ी – गाढ़ी
वाक्य प्रयोग = राम प्रसाद अपनी गाढ़ी (गहरी) कमाई से इतनी महँगी गाड़ी (यान) खरीदने के पक्षधर नहीं हैं।

86. गुर – गुरु
वाक्य प्रयोग = मेरी मुलाकात कल गुरु जी (शिक्षक) से हुई थी, उन्होंने एक कठिन समस्या से निजात पाने के लिए एक बढ़िया गुर (उपाय) बताया।

87. गुटखा – गुटिका
वाक्य प्रयोग = मेज पर रखी हुई गुटका (एक छोटी पुस्तक) के बगल में ही आयुर्वेदिक गुटिका (गोली) का एक पैकेट था, परंतु उसका पता नहीं चल पा रहा है।

88. गृह – ग्रह
वाक्य प्रयोग = रामू के परिवार पर पता नहीं किस ग्रह (ग्रह – नक्षत्र) की नजर लग गई है कि गृह (घर) क्लेश खत्म ही नहीं हो रहा है।

89. घन – घना

वाक्य प्रयोग = आसमान में कल से ही इतने घने (गाढ़ा) काले घन (बादल) जमे हुए हैं कि सूर्य का प्रकाश जमीन पर नहीं आ रहा है।

90. घट – घाट

वाक्य प्रयोग = मैंने कल कुछ महिलाओं को घाट (नदी तट) की ओर घट (घड़ा) के साथ जाते हुए देखा था।

91. चारण – चरण

वाक्य प्रयोग = किसी चारण (एक जाति) का नहीं बल्कि अपने मार्गदर्शक का चरण (पैर) पकड़ेंगे तब आपका भला होगा।

92. चक्रवाक – चक्रवात

वाक्य प्रयोग = कल के चक्रवात (बवंडर) ने चक्रवाक (एक पक्षी) के जोड़े को विलग कर दिया।

93. चतुष्पद – चतुष्पथ

वाक्य प्रयोग = कल मैंने एक चतुष्पथ (चौराहा) पर कुछ चतुष्पदों (चौपाया) को विश्राम करते देखा था।

94. चिता – चिंता

वाक्य प्रयोग = चिता (दाह संस्कार के लिए लकड़ी) तो मुरदे को जलाती है परंतु चिंता (फिक्र) जीवित व्यक्ति को जलाती रहती है।

95. चिर – चीर

वाक्य प्रयोग = कोई भी चीर (वस्त्र) चिर (अधिक काल) काल तक उपयोग में नहीं लाया जा सकता है।

96. छत – क्षत

वाक्य प्रयोग = मोनू अपने घर की छत (मकान की छत) पर बैठकर पैर के क्षत (घाव) को नीम के पानी से धो रहा था।

97. जर – जरा

वाक्य प्रयोग = इस जरा (पृथ्वी) पर कोई भी मनुष्य हो उसे जड़ (बुढ़ापा) का सामना करना पड़ेगा।

98. जलद – जलज

वाक्य प्रयोग = जलद (बादल) की ओट से सूर्य के बाहर आने पर जलज (कमल) पुष्प खिलने लगे।

99. जरठ – जठर

वाक्य प्रयोग = सड़क किनारे बैठे मैंने एक जरठ (अति वृद्ध) व्यक्ति को देखा जो जठर (पेट) रोग से परेशान था।

100. जवान–जबान

वाक्य प्रयोग = एक चिकित्सक के पास एक जवान (युवक) व्यक्ति आया था जिसके जबान (जीभ) पर छाले निकले हुए था।

101. डीठ–ढीठ

वाक्य प्रयोग = मंजुलिका केवल ढीठ (जिद्दी) ही नहीं है बल्कि उसकी डीठ (दृष्टि) भी कमजोर है।

102 ढलाई – ढिलाई

वाक्य प्रयोग = लौह कंपनी के डायरेक्टर ने अपनी परीक्षण में देखा कि ढलाई (ढालना) का काम ढिलाई (शिथिलता) के साथ चल रहा है।

103. तुरंग–तुरंत

वाक्य प्रयोग = राणा प्रताप का तुरंग (घोड़ा) युद्ध के मैदान में सागर की तरंग (लहर) की तरह बढ़ता ही जाता था।

104. तरणी–तरणि

वाक्य प्रयोग = जब मैं तरणी (नाव) से नदी पार कर रहा था तो तरणि (सूर्य) ठीक सिर के ऊपर था।

105. तरुणी–तरणि

वाक्य प्रयोग = कल जब मैं स्कूल के बगल से होकर गुजर रहा था, तो वहाँ मैंने एक तरुणी (युवती) को तरनी (खोमचा स्टैंड) पर पापड़ रखकर बेचते हुए देखा।

106. तन – तोम

वाक्य प्रयोग = इतनी बड़ी जगह पर (पाँच बल्बों) के तोम (समूह) से तम (अंधकार) को दूर नहीं किया जा सकता है।

107. तन – तनु

वाक्य प्रयोग = नींबू–चीनी का तनु (कम गाढा) विलयन तन (शरीर) के लिए लाभप्रद होता है।

108 तड़ाक – तड़ाग

वाक्य प्रयोग = सामने वाले तड़ाग (तलाक) पर मोनू अपना इंतजार कर रहा है, तड़ाक (शीघ्र) से वहाँ पहुँचने का प्रयास करें।

109. तर – तरु

वाक्य प्रयोग = वर्षा के कारण इस तरु (वृक्ष) के पत्ते तर (गीला) हो चुके हैं, सूखने के बाद ही इनका प्रयोग किया जा सकता है।

110. तरि – तरी

वाक्य प्रयोग = जिस तरि (नौका) से हम लोग नदी पार कर रहे थे, उसके निचले भाग में काफी तरी (गीलापन) थी।

111. दंश – दश

वाक्य प्रयोग = एक दिन मैं पुराने पीपल वृक्ष के बगल से गुजर रहा था, तभी मधुमक्खियों के एक झुंड ने हमला करके लगभग दश (दस) दंश (डंक) मार दिया।

112. दशा – दिशा

वाक्य प्रयोग = इस खराब मौसम की दशा (अवस्था) में पूरब दिशा (की ओर) के तरफ जाना कठिन है।

113. दग्ध – दुग्ध

वाक्य प्रयोग = दुग्ध (दूध) से दग्ध (जला हुआ) व्यक्ति छांछ को भी फूँक कर पीता है।

114. दिन – दीन

वाक्य प्रयोग = दीन (गरीब) के जब बुरे दिन (दिवस) आते हैं, तो उसे लोग पहचानने से परहेज करने लगते हैं।

115. दिवा – दीवा

वाक्य प्रयोग = दिवा (दिन) के समय दीवा (दीपक) जलाना कोई बुद्धिमानी नहीं है।

116. दोष – द्वेष

वाक्य प्रयोग = अपने करीबी लोगों से द्वेष (बैर) रखना, एक प्रकार का दोष (अवगुण) ही है।

117. दोषी – दोषा

वाक्य प्रयोग = दोषी (अपराधी) लोग सामान्यतः दोषा (रात्रि) काल में ही अपने कार्य को अंजाम देते हैं।

118. धरा – धारा

वाक्य प्रयोग = धरा (पृथ्वी) पर कई नदियाँ हैं जिनकी धारा (प्रवाह) पूरे वर्ष भर प्रवाहित नहीं होती है।

119. धनी – धणी

वाक्य प्रयोग = भारतवर्ष में कई धनी (धनवान) लोग हैं जो कई कंपनियों के धणी (स्वामी) हैं।

120. नद – नाद

वाक्य प्रयोग = हिमालय से निकलने वाले कई नद (बड़ी नदी) नाद (ध्वनि) करते हुए मैदानी भाग की ओर प्रवाहित होते हैं।

121. नग – नाग

वाक्य प्रयोग = विंध्य नग (पर्वत) की पुरानी गुफाओं में विषैले नाग (सर्प) पाए जाते हैं।

122. नावक – नाविक

वाक्य प्रयोग = नाविक (केवट) का छोटा बच्चा नाव पर ही एक छोटे नावक (छोटा वाण) से खेल रहा था।

123. नारी – नाड़ी
वाक्य प्रयोग = राजीव के मुहल्ले में एक वैद्य जी रहते हैं। उन्होंने एक नारी (स्त्री) की नाड़ी (नब्ज) को देखकर उसका इलाज कर दिया।

124. निधन – निर्धन
वाक्य प्रयोग = किसी निर्धन (गरीब) के निधन (मौत) पर शोक मनाने के लिए ज्यादा लोग नहीं आते हैं।

125. नियत – नियति
वाक्य प्रयोग = परिश्रमी लोग अपनी नियति (भाग्य) खुद ही नियत (निश्चित) करते हैं।

126. प्रभाव – पराभव
वाक्य प्रयोग = पराभव (हार) का प्रभाव (असर) अच्छे-अच्छे लोगों को पस्त कर देता है।

127. प्रकृत – प्रकृति
वाक्य प्रयोग = हर प्रकृत (पदार्थ) की प्रकृति (स्वभाव) अलग-अलग होती है।

128. प्रसाद – प्रासाद
वाक्य प्रयोग = प्रासाद (महल) का सुख पाने के लिए लोग दैवीय प्रसाद (कृपा) का इंतजार करते हैं।

129. पवन – पावन
वाक्य प्रयोग = शरद ऋतु में नदी के किनारे का पवन (हवा) पावन (पवित्र) हो जाता है।

130. परिणाम – परिमाण
वाक्य प्रयोग = अच्छा परिणाम (नतीजा) प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को अपने परिश्रम का परिमाण (मात्रा) बढ़ाना चाहिए।

131. पानी – पाणि
वाक्य प्रयोग = भोजन करने से पूर्व हमें अपने पाणि (हाथ) को अच्छी तरह पानी (जल) से धो लेना चाहिए।

132. पुष्कर – पुष्कल
वाक्य प्रयोग = बाग मे स्थित पुष्कर (जलाशय) में पुष्कल (बहुत) प्रजाति की मछ. लियाँ दिखाई पड़ती हैं।

133. पति – पत्ती
वाक्य प्रयोग = रजनी का पति (घर वाला) उसे तुलसी पत्ती (पात) की चाय बनाने के लिए कहा था।

134. बलाक – बलाहक
वाक्य प्रयोग = वर्षाकाल में काले बलाहक (बादल) के नीचे से होकर गुजरते श्वेत बलाकों (बगुले) की पंक्ति मनोहारी लगती है।

135. बुरा – बूरा
वाक्य प्रयोग = मोहन कल बाजार गया था, वहाँ से उसने बुरा (खराब) बूरा (कच्ची चीनी) ले आया, जो कि उपयोग लायक नहीं था।

136. भाग – भाग्य
वाक्य प्रयोग = बँटवारे के समय रोहित को जमीन का बंजर भाग (हिस्सा) मिला, लगता है कि उसके भाग्य (तकदीर) में यही लिखा था।

137. भाल – भालू
वाक्य प्रयोग = मैं कल चिड़ियाघर गया था, वहाँ मैंने एक भालू (रीछ) देखा जिसके भाल (मस्तक) पर एक सफेद चिह्न बना हुआ था।

138. मनुज – मनोज
वाक्य प्रयोग = ऐसा कोई भी मनुज (मनुष्य) नहीं है जो मनोज (कामदेव) के प्रभाव से प्रभावित नहीं हुआ हो।

139. मरीचि – मरीची
वाक्य प्रयोग = कल दोपहर के समय मरीची (सूर्य) की मरीचि (किरण) बहुत तीक्ष्ण लग रही थी।

140. मंदर – मंदिर
वाक्य प्रयोग = बिहार प्रांत में एक मंदर (एक पर्वत) नामक पर्वत है जिस पर एक मंदिर (देवालय) स्थित है।

141. मातृ – मात्र
वाक्य प्रयोग = मात्र (केवल) एक मातृ (माता) ही अपने शिशु को प्यार-दुलार दे सकती है कोई और नहीं।

142. मेघ – मेध
वाक्य प्रयोग = कल शिवमंदिर पर जैसे ही मेध (यज्ञ) प्रारंभ हुआ, काले-काले मेघ (बादल) आसमान में छाने लगे।

143. मोर – मौर
वाक्य प्रयोग = मोर (मयूर पक्षी) के सिर पर एक कलंगी होती है, जो मौर (मुकुट) की भाँति प्रतीत होती है।

144. योग – योग्य
वाक्य प्रयोग = यह विद्यार्थी अध्ययन में इतना कमजोर है कि गणित के साधारण योग (जोड़) की संक्रियाएं करने के योग्य (लायक) नहीं है।

145. रवि – रव
वाक्य प्रयोग = शाम के समय रवि (सूर्य) के अस्त होने पर धीरे-धीरे पक्षियों का कलरव (शोर) बढ़ने लगा।

146. राज – राजा
वाक्य प्रयोग = किसी भी राजा (शासक) का राज (शासन) तभी तक सुव्यवस्थित रह सकता है जब तक वह अपनी प्रजा का देखभाल ठीक ढंग से करता रहे।

147. लक्ष – लक्ष्य
वाक्य प्रयोग = लक्ष (लाख) कोशिश करने के बाद भी खिलाड़ी का लक्ष्य (निशाना) निर्धारित बिंदु पर नहीं लग पाया।

148. लोभ – लोम
वाक्य प्रयोग = सुखीराम तो इतना लोभी है कि लोभ (लालच) उसके प्रत्येक लोम (रोम) में भरा हुआ है।

149. वसन – व्यसन
वाक्य प्रयोग = जिस प्रकार वसन (वस्त्र) धूल वगैरह से गंदे हो जाते हैं, उसी प्रकार मनुष्य का मन भी व्यसन (बुरी आदत) से कलुषित हो जाता है।

150. वन – वन्य
वाक्य प्रयोग = असम के वन (जंगल) में वन्य (जंगली) जीवों की भरमार है।

151. वर्ण – व्रण
वाक्य प्रयोग = मोहन के पाँव में लगी चोट के कारण बना व्रण (घाव), धीरे-धीरे नीले वर्ण (रंग) का हो गया था।

152. व्यंग – व्यंग्य
वाक्य प्रयोग = किसी व्यंग (विकलांग) व्यक्ति के विकलांगता को लेकर व्यंग्य (कटाक्ष) करना उचित नहीं कहा जा सकता है।

153. वारिद – वारिधि
वाक्य प्रयोग = वारिधि (समुद्र) के जल से ही वारिद (बादल) बनते हैं, फिर वर्षा होती है।

154. विदुर – विधुर
वाक्य प्रयोग = मनीष शर्मा जी जो ब्लाक-बी में रहते हैं, वे बहुत विदुर (पंडित) व्यक्ति हैं। वे विगत पाँच वर्ष से विधुर (जिसकी पत्नी मर चुकी हो) हैं।

155. शर – सर
वाक्य प्रयोग = बाग में स्थित सर (तालाब) के किनारे एक पक्षी दिखाई पड़ा जो किसी के शर (बाण) से घायल था।

156. शकल – सकल
वाक्य प्रयोग = मंदिर के प्रांगण में होने वाले यज्ञ में चन्दन की लकड़ी का सकल (संपूर्ण) शकल (टुकड़ा) अग्नि में भस्मीभूत हो गया।

157. शशधर – शशिधर
वाक्य प्रयोग = भगवान शशिधर (शिव जी) के सिर पर शशधर (चन्द्रमा) की शोभा मनोहारी लगती है।

158. शित – शीत
वाक्य प्रयोग = विगत वर्ष शीत (ठण्ड) का प्रकोप इतना प्रचण्ड था कि कई झीलों का पानी जमकर शित (सफेद) हो गया था।

159. शूर – सूर
वाक्य प्रयोग = महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास के ऐसे शूर (वीर) थे जिनही कीर्ति आज भी सूर (सूर्य) की तरह प्रकाशमान है।

160. शल्क – शुक्ल
वाक्य प्रयोग = यूकेलिप्टस नामक वृक्ष की शल्क (छाल) शुक्ल (सफेद) वर्ण की होती है।

161. श्वजन – स्वजन
वाक्य प्रयोग = श्वजन (कुत्ता) स्वजन (अपने आदमी) को पहचानता है।

162. सखी – साखी
वाक्य प्रयोग = मोनिका की सखी (सहेली) अपने पुस्तक से साखी (दोहा) पढ़कर सुना रही थी।

163. सर्ग – स्वर्ग
वाक्य प्रयोग = इस पुस्तक में ऐसा कोई भी सर्ग (अध्याय) नहीं है, जिसमें स्वर्ग (देवलोक) की कथा दी गई हो।

164. सुधि – सुधी
वाक्य प्रयोग = जब संकट की घड़ी आती है, तब अच्छे-अच्छे सुधी (बुद्धिमान) लोगों की सुधि (होश) ठिकाने लग जाती है, अर्थात् संतुलन कायम नहीं रख पाते हैं।

165. स्वपच – श्वपच
वाक्य प्रयोग = जिस मनुष्य ने परम तत्त्व की अनुभूति कर ली है उसे स्वपच (ब्राह्मण) तथा श्वपच (चाण्डाल) में कोई भिन्नता नज़र नहीं आती है।

166. हरण – हरिण
वाक्य प्रयोग = सीता हरण (ले जाना) का मुख्य कारण सोने का हरिण (मृग) ही था, न राम हरिण का शिकार करने जाते न सीता का हरण होता।

167. ह्रद – ह्रद्
वाक्य प्रयोग = सोहन के बाग में एक ह्रद (तालाब) है जिसमें कमल पत्र का आकार ह्रद् (हृदय) की तरह है।

168. हिम – हेम
वाक्य प्रयोग = पहाड़ों पर गिरी हुई बर्फ पर जब सूर्य की किरणें गिरती हैं, तो हेम (स्वर्ण) वर्ण की आभा बिखरने लगती है।

169. क्ष्मा – क्षमा
वाक्य प्रयोग = क्षमा (पृथ्वी) हमें जितनी क्षमा (माफ करना) प्रदान करती है, कोई दूसरा हमें उतना क्षमा करने वाला नहीं है।

अशुद्ध वाक्य को शुद्ध करना

1. अशुद्ध रूप – मैं उपेक्षा करता हूँ कि तुम यह काम कर लोगे।
   शुद्ध रूप – मैं अपेक्षा करता हूँ कि तुम यह काम कर लोगे।
2. अशुद्ध रूप – मैंने अपना ग्रहकार्य कर लिया है।
   शुद्ध रूप – मैंने अपना गृहकार्य कर लिया है।
3. अशुद्ध रूप – तुम हमेशा बेफिजूल की बातें करते हो।
   शुद्ध रूप – तुम हमेशा फिजूल की बातें करते हो।
4. अशुद्ध रूप – बेटी पराए घर का धन होता है।
   शुद्ध रूप – बेटी पराए घर का धन होती है।
5. अशुद्ध रूप – आज तुमने नया पोशाक पहना है।
   शुद्ध रूप – आज तुमने नई पोशाक पहनी है।
6. अशुद्ध रूप – मुझे तुम्हारा बातें सुनना पड़ा।
   शुद्ध रूप – मुझे तुम्हारी बातें सुननी पड़ी।
7. अशुद्ध रूप – कल मैंने नया पुस्तक ख़रीदा।
   शुद्ध रूप – कल मैंने नई पुस्तक खरीदी।
8. अशुद्ध रूप – भारत में अनेकों राज्य हैं।
   शुद्ध रूप – भारत में अनेक राज्य हैं।
9. अशुद्ध रूप – प्रत्येक वृक्ष फल नहीं देते हैं।
   शुद्ध रूप – प्रत्येक वृक्ष फल नहीं देता है।
10. अशुद्ध रूप – इस समय चार बजा है।
    शुद्ध रूप – इस समय चार बजे हैं।
11. अशुद्ध रूप – मैं तो आपका दर्शन करने आया हूँ।
    शुद्ध रूप – मैं तो आपके दर्शन करने आया हूँ।
12. अशुद्ध रूप – शहीदों का देश सदा आभारी रहेगा।
    शुद्ध रूप – देश शहीदों का सदा आभारी रहेगा।
13. अशुद्ध रूप – गाय का ताकतवर दूध होता है।
    शुद्ध रूप – गाय का दूध ताकतवर होता है।
14. अशुद्ध रूप – अपनी बात आपको मैं बताता हूँ।
    शुद्ध रूप – मैं आपको अपनी बात बताता हूँ।
15. अशुद्ध रूप – ध्यानपूर्वक विद्यार्थियों को पढ़ाई करनी चाहिए।
    शुद्ध रूप – विद्यार्थियों को ध्यानपूर्वक पढ़ाई करनी चाहिए।

16. अशुद्ध रूप – वह बहुत जल्दी वापस लौट आया।
शुद्ध रूप – वह बहुत जल्दी लौट आया।
17. अशुद्ध रूप – जयपुर में कई दर्शनीय स्थल देखने योग्य हैं।
शुद्ध रूप – जयपुर में कई दर्शनीय स्थल हैं।
18. अशुद्ध रूप – कृपया आप मेरे घर आने की कृपा करें।
शुद्ध रूप – आप मेरे घर आने की कृपा करें।
19. अशुद्ध रूप – प्रधानमंत्री जनता के हितकर कल्याण के लिए कार्य कर रहे हैं।
शुद्ध रूप – प्रधानमंत्री जनता के कल्याण के लिए कार्य कर रहे हैं।
20. अशुद्ध रूप – गुरुदेव यह तो सरासर अन्याय है।
शुद्ध रूप – गुरुदेव! यह तो सरासर अन्याय है।
21. अशुद्ध रूप – धीरे धीरे ध्यान से चलो।
शुद्ध रूप – धीरे-धीरे ध्यान से चलो।
22. अशुद्ध रूप – वह काव्यसंग्रह जिसे मैंने लिखा है वह छप रहा है।
शुद्ध रूप – वह काव्यसंग्रह, जिसे मैंने लिखा है; वह छप रहा है।
23. अशुद्ध रूप – यह पुस्तक आपको कहाँ मिली।
शुद्ध रूप – यह पुस्तक आपको कहाँ मिली?
24. अशुद्ध वाक्य – मैं मंगलवार के दिन व्रत रखता हूँ।
शुद्ध वाक्य – मैं मंगलवार को व्रत रखता हूँ।
25. अशुद्ध वाक्य – अब विंध्याचल पर्वत हरा-भरा हो गया।
शुद्ध वाक्य – अब विंध्याचल हरा-भरा हो गया।
26. अशुद्ध वाक्य – 'उत्साह'नामक शीर्षक निबंध अच्छा है।
शुद्ध वाक्य – 'उत्साह'शीर्षक निबंध अच्छा है।
27. अशुद्ध वाक्य – राजा अपनी ताकत के बल पर जीत गया।
शुद्ध वाक्य – राजा अपने बल पर जीत गया।
28. अशुद्ध वाक्य – प्रात:काल के समय घूमना चाहिए।
शुद्ध वाक्य – प्रात:काल घूमना चाहिए।
29. अशुद्ध वाक्य – समाज में अराजकता की समस्या बढ़ रही है।
शुद्ध वाक्य – समाज में अराजकता बढ़ रही है।
30. अशुद्ध वाक्य – गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रही।
शुद्ध वाक्य – पैरो में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ी रही।
31. अशुद्ध वाक्य – दंगे में गोलियों की बाढ़ आ गई।
शुद्ध वाक्य – दंगे में गोलियों की बौछार आ गई।
32. अशुद्ध वाक्य – रेडियो की उत्पत्ति किसने की।
शुद्ध वाक्य – रेडियो का आविष्कार किसने किया।

33. अशुद्ध वाक्य – आपके प्रश्न का समाधान मेरे पास नहीं है।
शुद्ध वाक्य – आपके प्रश्न का उत्तर मेरे पास नहीं है।
34. अशुद्ध वाक्य – हमारे देश के मनुष्य मेहनती हैं।
शुद्ध वाक्य – हमारे देश के लोग मेहनती हैं।
35. अशुद्ध वाक्य – मोहन और मोहन का पुत्र दिल्ली गए हैं।
शुद्ध वाक्य – मोहन और उसका पुत्र दिल्ली गए हैं।
36. अशुद्ध वाक्य – मेरे को कुछ याद नहीं आ रहा।
शुद्ध वाक्य – मुझे कुछ याद नहीं आ रहा।
37. अशुद्ध वाक्य – मेरे को बाजार जाना है।
शुद्ध वाक्य – मुझे बाजार जाना है।
38. अशुद्ध वाक्य – तेरे को क्या चाहिए?
शुद्ध वाक्य – तुझे क्या चाहिए?
39. अशुद्ध वाक्य – दूध में कौन गिर गया?
शुद्ध वाक्य – दूध में क्या गिर गया?
40. अशुद्ध वाक्य – तुम तो तुम्हारा काम करो।
शुद्ध वाक्य – तुम तो अपना काम करो।
41. अशुद्ध वाक्य – घातक विष, सुंदर शोभा, बुरी कुवृष्टि।
शुद्ध वाक्य – विष, शोभा, कुवृष्टि।
42. अशुद्ध वाक्य – धोबिन ने अच्छी चादरें धोई।
शुद्ध वाक्य – धोबिन ने चादरें अच्छी धोई।
43. अशुद्ध वाक्य – यह सबसे सुन्दरतम साड़ी है।
शुद्ध वाक्य – यह सुन्दरतम साड़ी है।
44. अशुद्ध वाक्य – आज उसके गुप्त रहस्य का राज खुला।
शुद्ध वाक्य – आज उसके रहस्य का राज खुला।
45. अशुद्ध वाक्य – उनकी आजकल दयनीय दुर्दशा है।
शुद्ध वाक्य – उनकी आजकल दयनीय हालत है।
46. अशुद्ध वाक्य – वह डाल महीन है।
शुद्ध वाक्य – वह डाल पतली है।
47. अशुद्ध रूप – राम और सीता वन को गई।
शुद्ध रूप – राम और सीता वन को गए।
48. अशुद्ध रूप – उनकी बातें सुनते-सुनते कान पक गया।
शुद्ध रूप – उनकी बातें सुनते-सुनते कान पक गए।
49. अशुद्ध रूप – मेरी बहन दिल्ली से वापस आया है।
शुद्ध रूप – मेरी बहन दिल्ली से वापस आई है।

50. अशुद्ध रूप – यहाँ अशोभनीय वातावरण उपस्थित है।
शुद्ध रूप – यहाँ अशोभनीय वातावरण है।
51. अशुद्ध रूप – अब और स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं है।
शुद्ध रूप – अब और स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है।
52. अशुद्ध रूप – वह सिलाई और अंग्रेजी पढ़ती है।
शुद्ध रूप – वह सिलाई सीखती है और अंग्रेजी पढ़ती है।
53. अशुद्ध रूप – वह तो खाना और चाय पीकर सो गया।
शुद्ध रूप – वह तो खाना खाकर और चाय पीकर सो गया।
54. अशुद्ध रूप – खबर सुनकर मैं विस्मय हो गया।
शुद्ध रूप – खबर सुनकर मैं विस्मित हो गया।
55. अशुद्ध रूप – मैं माताजी को खाना डालकर/देकर आई।
शुद्ध रूप – मैं माताजी को खाना परोसकर आई।
56. अशुद्ध रूप – दान दिया।
शुद्ध रूप – दान किया।
57. अशुद्ध रूप – प्रतीक्षा देखना।
शुद्ध रूप – प्रतीक्षा करना।
58. अशुद्ध रूप – प्रयोग होना।
शुद्ध रूप – प्रयोग करना।
59. अशुद्ध रूप – प्रश्न पूछना।
शुद्ध रूप – प्रश्न करना।
60. अशुद्ध रूप – वह खाना खावेगा।
शुद्ध रूप – खाना खायेगा।
61. अशुद्ध रूप – उसने जैसी करी है, मैं नहीं कर सकता।
शुद्ध रूप – उसने जैसा किया है, मैं नहीं कर सकता।
62. अशुद्ध वाक्य – विद्यालय के दाएँ बड़ा-सा मैदान है।
शुद्ध वाक्य – विद्यालय की दाई ओर बड़ा-सा मैदान है।
63. अशुद्ध वाक्य – भिखारी को थोड़ा चावल दे दो।
शुद्ध वाक्य – भिखारी को थोड़े चावल दे दो।
64. अशुद्ध वाक्य – राम दिनों-दिन मेहनत करता है।
शुद्ध वाक्य – राम दिनों-रात मेहनत करता है।
65. अशुद्ध वाक्य – जैसा बोओगे उसी तरह काटोगे।
शुद्ध वाक्य – जैसा बोओगे वैसा काटोगे।
66. अशुद्ध वाक्य – पुस्तक विद्वतापूर्ण लिखी गई है।
शुद्ध वाक्य – पुस्तक विद्वतापूर्वक लिखी गई है।

67. अशुद्ध रूप – मैं सारी पुस्तक पढ़ डाली।
शुद्ध रूप – मैंने सारी पुस्तक पढ़ डाली।
68. अशुद्ध रूप – वह लड़का पीटता है।
शुद्ध रूप – वह लड़के को पीटता है।
69. अशुद्ध रूप – मैं शीतल जल को पी रहा हूँ।
शुद्ध रूप – मैं शीतल जल पी रहा हूँ।
70. अशुद्ध रूप – वह बस पर यात्रा कर रहा है।
शुद्ध रूप – वह बस से यात्रा कर रहा है।
71. अशुद्ध रूप – पंडितजी ने भक्तों के लिए कथा सुनाई।
शुद्ध रूप – पंडितजी ने भक्तों को कथा सुनाई।
72. अशुद्ध रूप – शिष्य यज्ञ को लकड़ी लाया।
शुद्ध रूप – शिष्य यज्ञ के लिए लकड़ी लाया।
73. अशुद्ध रूप – वह शहर के खिलौने लाकर बेचता है।
शुद्ध रूप – वह शहर से खिलौने लाकर बेचता है।
74. अशुद्ध रूप – लड़की झूले पर से गिर गई।
शुद्ध रूप – लड़की झूले से गिर गई।
75. अशुद्ध रूप – बिना पैसे का किसी भी आदमी को सम्मान नहीं मिलता।
शुद्ध रूप – बिना पैसे के किसी भी आदमी को सम्मान नहीं मिलता।
76. अशुद्ध रूप – राधा का और कृष्ण का मंदिर प्रसिद्ध है।
शुद्ध रूप – राधाकृष्ण का मंदिर प्रसिद्ध है।
(नोट – 'राधाकृष्ण' सामासिक पद है अतः इसके चिह्न लुप्त हो गए हैं।)
77. अशुद्ध रूप – आज बजट के ऊपर बहस होगी।
शुद्ध रूप – आज बजट पर बहस होगी।
78. अशुद्ध रूप – किसान ने खेत पर बीज बोया है।
शुद्ध रूप – किसान ने खेत में बीज बोया है।
79. अशुद्ध रूप – घर पर सब कुशल हैं।
शुद्ध रूप – घर में सब कुशल हैं।
80. अशुद्ध रूप – पाकिस्तान ने गोले और तोपों से आक्रमण किया।
शुद्ध रूप –पाकिस्तान ने गोलों और तोपों से आक्रमण किया।
81. अशुद्ध रूप – उसने अनेकों ग्रंथ लिखे।
शुद्ध रूप – उसने अनेक ग्रंथ लिखे।
82. अशुद्ध रूप – महाभारत अठारह दिनों तक चलता रहा।
शुद्ध रूप – महाभारत अठारह दिन तक चलता रहा।

83. अशुद्ध रूप – तेरी बात सुनते-सुनते कान पक गए।
शुद्ध रूप – तेरी बातें सुनते-सुनते कान पक गए।
84. अशुद्ध रूप – पेड़ों पर तोता बैठा है।
शुद्ध रूप – पेड़ पर तोता बैठा है।
85. अशुद्ध रूप – उसने संतोष का साँस ली।
शुद्ध रूप – उसने संतोष की साँस ली।
86. अशुद्ध रूप – सविता ने जोर से हँस दिया।
शुद्ध रूप – सविता जोर से हँस दी।
87. अशुद्ध रूप – मुझे बहुत आनंद आती है।
शुद्ध रूप – मुझे बहुत आनंद आता है।
88. अशुद्ध रूप – वह धीमी स्वर में बोला।
शुद्ध रूप – वह धीमे स्वर में बोला।
89. अशुद्ध रूप – राम और सीता वन को गई।
शुद्ध रूप – राम और सीता वन को गए।
90. अशुद्ध रूप – मैं यह काम नहीं किया हूँ।
शुद्ध रूप – मैंने यह काम नहीं किया है।
91. अशुद्ध रूप – मैं पुस्तक को पढ़ता हूँ।
शुद्ध रूप – मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
92. अशुद्ध रूप – हमने इस विषय को विचार किया।
शुद्ध रूप – हमने इस विषय पर विचार किया
93. अशुद्ध रूप – आठ बजने को दस मिनट है।
शुद्ध रूप – आठ बजने में दस मिनट है।
94. अशुद्ध रूप – वह देर में सोकर उठता है।
शुद्ध रूप – वह देर से सोकर उठता है।
95. अशुद्ध रूप – मैं रविवार के दिन तुम्हारे घर आऊँगा।
शुद्ध रूप – मैं रविवार को तुम्हारे घर आऊँगा।
96. अशुद्ध रूप – कुत्ता रेंकता है।
शुद्ध रूप – कुत्ता भौंकता है।
97. अशुद्ध रूप – मुझे सफल होने की निराशा है।
शुद्ध रूप – मुझे सफल होने की आशा नहीं है।
98. अशुद्ध रूप – गले में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ गई।
शुद्ध रूप – पैरों में गुलामी की बेड़ियाँ पड़ गई।
99. अशुद्ध रूप – गीता आई और कहा।
शुद्ध रूप – गीता आई और उसने कहा।

100. अशुद्ध रूप – मैंने तेरे को कितना समझाया।
शुद्ध रूप – मैंने तुझे कितना समझाया।
101. अशुद्ध रूप – वह क्या जाने कि मैं कैसे जीवित हूँ।
शुद्ध रूप – वह क्या जाने कि मैं कैसे जी रहा हूँ।
102. अशुद्ध रूप – किसी और लड़के को बुलाओ।
शुद्ध रूप – किसी दूसरे लड़के को बुलाओ।
103. अशुद्ध रूप – सिंह बड़ा बीभत्स होता है।
शुद्ध रूप – सिंह बड़ा भयानक होता है।
104. अशुद्ध रूप – उसे भारी दु:ख हुआ।
शुद्ध रूप – उसे बहुत दु:ख हुआ।
105. अशुद्ध रूप – सब लोग अपना काम करो।
शुद्ध रूप – सब लोग अपना-अपना काम करो।
106. अशुद्ध रूप – क्या यह संभव हो सकता है?
शुद्ध रूप – क्या यह संभव है ?
107. अशुद्ध रूप – मैं दर्शन देने आया था।
शुद्ध रूप – मैं दर्शन करने आया था।
108. अशुद्ध रूप – वह पढ़ना माँगता है।
शुद्ध रूप – वह पढ़ना चाहता है।
109. अशुद्ध रूप – बस तुम इतने रूठ उठे बस
शुद्ध रूप – तुम इतने में रूठ गए।
110. अशुद्ध रूप – तुम क्या काम करता है ?
शुद्ध रूप – तुम क्या काम करते हो ?
111. अशुद्ध रूप – युग की माँग का यह बीड़ा कौन चबाता है।
शुद्ध रूप – युग की माँग का यह बीड़ा कौन उठाता है।
112. अशुद्ध रूप – वह श्याम पर बरस गया।
शुद्ध रूप – वह श्याम पर बरस पड़ा।
113. अशुद्ध रूप – उसकी अक्ल चक्कर खा गई।
शुद्ध रूप – उसकी अक्ल चकरा गई।
114. अशुद्ध रूप – उस पर घड़ों पानी गिर गया।
शुद्ध रूप – उस पर घड़ों पानी पड़ गया।
115. अशुद्ध रूप – वह लगभग दौड़ रहा था।
शुद्ध रूप – वह दौड़ रहा था।
116. अशुद्ध रूप – सारी रात भर मैं जागता रहा।
शुद्ध रूप – मैं सारी रात जागता रहा।

117. अशुद्ध रूप – तुम बड़ा आगे बढ़ गया।
शुद्ध रूप – तुम बहुत आगे बढ़ गए।
118. अशुद्ध रूप – इस पर्वतीय क्षेत्र में सर्वस्व शांति है।
शुद्ध रूप – इस पर्वतीय क्षेत्र में सर्वत्र शांति है।
119. अशुद्ध रूप – राम घर नहीं है।
शुद्ध रूप – राम घर पर नहीं है।
120. अशुद्ध रूप – अपने घर साफ रखो।
शुद्ध रूप – अपने घर को साफ रखो।
121. अशुद्ध रूप – उसको काम को करने दो।
शुद्ध रूप – उसे काम करने दो।
122. अशुद्ध रूप – आठ बजने को पन्द्रह मिनट हैं।
शुद्ध रूप – आठ बजने में पन्द्रह मिनट हैं।
123. अशुद्ध रूप – मुझे अपने काम को करना है।
शुद्ध रूप – मुझे अपना काम करना है।
124. अशुद्ध रूप – यहाँ बहुत से लोग रहते हैं।
शुद्ध रूप – यहाँ बहुत लोग रहते हैं।
125. अशुद्ध रूप – वह पुस्तक है पढ़ता।
शुद्ध रूप – वह पुस्तक पढ़ता है।
126. अशुद्ध रूप – आजाद हुआ था यह देश सन् 1947 में।
शुद्ध रूप – यह देश सन् 1947 में आजाद हुआ था।
127. अशुद्ध रूप – 'पृथ्वीराज रासो' रचना चन्द्रवरदाई की है।
शुद्ध रूप – चन्द्रवरदाई की रचना 'पृथ्वीराज रासो' है।
128. अशुद्ध रूप – सीता राम की स्त्री थी।
शुद्ध रूप – सीता राम की पत्नी थी।
129. अशुद्ध रूप – मंत्रीजी को एक फूलों की माला पहनाई।
शुद्ध रूप – मंत्रीजी को फूलों की एक माला पहनाई।
130. अशुद्ध रूप – महादेवी वर्मा श्रेष्ठ कवि थीं।
शुद्ध रूप – महादेवी वर्मा श्रेष्ठ कवयित्री थीं।
131. अशुद्ध रूप – शत्रु मैदान से दौड़ खड़ा हुआ था।
शुद्ध रूप – शत्रु मैदान से भाग खड़ा हुआ।
132. अशुद्ध रूप – मेरे भाई को मैंने रुपये दिए।
शुद्ध रूप – अपने भाई को मैंने रुपये दिये।
133. अशुद्ध रूप – यह किताब बड़ी छोटी है।
शुद्ध रूप – यह किताब बहुत छोटी है।

134. अशुद्ध रूप – उपरोक्त बात पर मनन कीजिए।
शुद्ध रूप – उपर्युक्त बात पर मनन करिये।
135. अशुद्ध रूप – सभी छात्रों में रमेश चतुरतर है।
शुद्ध रूप – सभी छात्रों में रमेश चतुरतम है।
136. अशुद्ध रूप – मेरा सिर चक्कर काटता है।
शुद्ध रूप – मेरा सिर चकरा रहा है।

पर्यायवाची शब्द

1. अनमोल– अमूल्य, बहुमूल्य, बेशकीमती।
2. अनुज– छोटा भाई, अनुभ्राता, अवरज, कनिष्ठ।
3. अभद्र– असभ्य, अविनीत, अकुलीन, अशिष्ट।
4. अर्चना– आराधना, पूजा, पूजन, अर्चन।
5. अलि– भौंरा, मधुकर, भ्रमर, भृंग, मिलिंद, मधुप, अलिंद।
6. अहि– साँप, नाग, फणी, फणधर, सर्प।
7. अंक– संख्या, नंबर, आँकड़ा, निशान, चिन्ह, छाप, गोद, अंकवार, आँक, दाग, धब्बा।
8. अंगद– बाजूबंद, भुजबंध, बालिपुत्र, बालिकुमार, तारेय, बालितनय।
9. अँगूठी– मुद्रा, मुँदरी, छल्ला, मुद्रिका, अंगुष्ठिका, अंगुलीमुद्रा, अंगुश्तरी।
10. अनंत– असीम, बेहद, निस्सीम, अपरिमित, अविनाशी, नित्य, अक्षम, अक्षुण्ण, अमर, अतिशय, अधिक, अगणित, असंख्य, बहुत, बेशुमार, आकाश, आसमान, नभ, गगन।
11. अनुकंपा– कृपा, दया, सहानुभूति।
12. आंसू– नेत्रजल, नयनजल, चक्षुजल, अश्रु।
13. आत्मा– जीव, देव, चौतन्य, चेतनतत्तव, अंत:करण।
14. आकाश– आसमान, नभ, गगन, व्योम, फलक।
15. आगंतुक– मेहमान, अतिथि, अभ्यागत।
16. आग– पावक, अनल, अग्नि, दव, हुताशन, रोहिताश्व, उष्मा, ताप, तपन, जलन।
17. आजादी– स्वाधीनता, स्वतंत्रता, मुक्ति।
18. आयुष्मान– दीर्घायु, दीर्घजीवी, चिरंजीवी, चिरायु।
19. आवास– निवास–स्थान, घर, निलय, निकेत, निवास।
20. आकाश गंगा– आकाशनदी, स्वर्गनदी, मंदाकिनी, नभगंगा, सुरदीर्घिका।
21. इंदु– चाँद, चंद्रमा, चंदा, शशि, राकेश, मयंक, महताब।
22. इंसान– मनुष्य, आदमी, मानव, मानुष।
23. इष्ट– वांछनीय, इंच्छित, अभीष्ट, मनोवांछित, इच्छायोग्य, श्रेय, मनोनुकूल, आराध्य पूज्य पूजित।

24. ईश्वर- परमपिता, परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, भगवान, परमेश्वर, जगदीश्वर, विधाता।
25. ईमानदारी- सच्चा, सत्यपरायण, नेकनीयत, यथार्थता, सत्यता, निश्छलता, दयानतदारी, सत्यनिष्ठ।
26. ईर्ष्या- विद्वेष, जलन, कुढ़न, ढाह।
27. उपवन- बाग, बगीचा, उद्यान, वाटिका, पुष्पोद्यान, फुलवारी, पुष्पवाटिका, गुलिस्तान, चमन, गुलशन।
28. ऐश्वर्य- धन-सम्पत्ति, विभूति, वैभव, समृद्धि, सम्पन्नता, ऋद्धि-सिद्धि।
29. औरत- स्त्री, जोरू, घरनी, महिला, मानवी, तिरिया, नारी, वनिता, घरवाली।
30. कमल- नलिन, अरविन्द, उत्पल, अम्भोज, तामरस, पुष्कर, महोत्पल, वनज, कंज, सर. सिज, राजीव, पद्म, पंकज, नीरज, सरोज, जलज, जलजात, शतदल, पुण्डरीक, इन्दीवर।
31. किरण- गभस्ति, रश्मि, अंशु, अर्चि, गो, कर, मयूख, मरीचि, ज्योति, प्रभा।
32. कामदेव- मदन, मनोज, अनंग, आत्मभू, कंदर्प, दर्पक, पंचशर, मनसिज, काम, रतिपति, पुष्पधन्वा, मन्मथ।
33. कपड़ा- मयुख, वस्त्र, चीर, वसन, पट, अंशु, कर, अम्बर, परिधान।
34. कुबेर- कित्ररेश, यक्षराज, धनद, धनाधिप, राजराज।
35. किस्मत- होनी, विधि, नियति, भाग्य।
36. कच- बाल, केश, कुन्तल, चिकुर, अलक, रोम, शिरोरूह।
37. कबूतर- कपोत, रक्तलोचन, पारावत, कलरव, हारिल।
38. कण्ठ- ग्रीवा, गर्दन, गला, शिरोधरा।
39. कृपा- प्रसाद, करुणा, अनुकम्पा, दया, अनुग्रह।
40. किताब- पोथी, ग्रन्थ, पुस्तक।
41. किनारा- तीर, कूल, कगार, तट।
42. किसान- कृषक, भूमिपुत्र, हलधर, खेतिहर, अन्नदाता।
43. कृष्ण- राधापति, घनश्याम, वासुदेव, माधव, मोहन, केशव, गोविन्द, मुरारी, नन्दनन्दन, राधारमण, दामोदर, ब्रजवल्लभ, गोपीनाथ, मुरलीधर, द्वारिकाधीश, यदुनन्दन, कंसारि, रणछोड़, बंशीधर, गिरधारी।
44. कान- कर्ण, श्रुति, श्रुतिपटल, श्रवण, श्रोत, श्रुतिपुट।
45. कोयल- कोकिला, पिक, काकपाली, बसंतदूत, सारिका, कुहुकिनी, वनप्रिया।
46. क्रोध- रोष, कोप, अमर्ष, गुस्सा, आक्रोश, कोह, प्रतिघात।
47. कार्तिकेय- कुमार, षडानन, शरभव, स्कन्द।
48. कुत्ता- श्वा, श्रवान, कुक्कुर। शुनक, सरमेव।
49. कल्पद्रुम- देवद्रुम, कल्पवृक्ष, पारिजात, मन्दार, हरिचन्दन।
50. काक- कौआ, वायस, काग, करठ, पिशुन।
    कंगाल- निर्धन, गरीब, रंक, धनहीन।

51. कंचन- स्वर्ण, सोना, कनक, कुंदन, हिरण्य।
52. कंजूस- कृपण, सूम, मक्खीचूस।
53. कंटक- काँटा, खार, सूल।
54. कंदरा- गुफा, खोह, विवर, गुहा।
55. कछुआ- कच्छप, कमठ, कूर्म।
56. किनारा- तट, तीर, कगार, कूल, साहिल।
57. किरण- किरन, अंशु, रश्मि, मयूख।
58. किरीट- ताज, मुकुट, शिरोभूषण।
59. किश्ती- कश्ती, नाव, नौका, नैया।
60. कीर- तोता, सुग्गा, सुआ, शुक।
61. कुंभ- घड़ा, गागर, घट, कलश।
62. कुसुम- पुष्प, फूल, प्रसून, पुहुप।
63. कोकिल- कोकिला, कोयल, पिक, श्यामा।
64. कोविद- विद्वान, पंडित, विशारद।
65. गणेश- विनायक, गजानन, गौरीनंदन, मूषकवाहन, गजवदन, विघ्ननाशक, भवानीनन्दन, विघ्नराज, मोदकप्रिय, मोददाता, गणपति, गणनायक, शंकरसुवन, लम्बोदर, महाकाय, एकदन्त।
66. गंगा- देवनदी, मंदाकिनी, भगीरथी, विश्नुपगा, देवपगा, ध्रुवनंदा, सुरसरिता, देवनदी, जाह्नवी, सुरसरि, अमरतरंगिनी, विष्णुपदी, नदीश्वरी, त्रिपथगा।
67. गज- हाथी, हस्ती, मतंग, कूम्भा, मदकल।
68. गाय- गौ, धेनु, सुरभि, भद्रा, दोग्धी, रोहिणी।
69. गृह- घर, सदन, गेह, भवन, धाम, निकेतन, निवास, आगार, आयतन, आलय।
70. गंगा- भगीरथी, मंदाकिनी,सुरसरिता, देवनदी, जाहनवी।
71. गरुड़- खगेश, पत्रगारि, उरगारि, हरियान, वातनेय, खगपति, सुपर्ण, विषमुख।
72. गगन- आसमान, आकाश, नभ, व्योम, अंतरिक्ष।
73. गाथा- कथा, कहानी, किस्सा, दास्तान।
74. गाफिल- बेखबर, बेपरवाह, असावधान।
75. गिरि- पहाड़, मेरु, शैल, महीधर, धराधर, भूधर।
76. गिरिराज- हिमालय, पर्वतराज, पर्वतेश्वर, शैलेंद्र, गिरीश, गिरींद्र।
77. गोधूलि- साँझ, संध्या, शाम, सायंकाल।
78. चंद्रमा- चाँद, हिमांशु, इंदु, सुधांशु, विधु, तारापति, चन्द्र, शशि, कलाधर, निशाकर, मृगांक, राकापति, हिमकर, राकेश, रजनीश, निशानाथ, सोम, मयंक, सारंग।
79. चोर- तस्कर, दस्यु, रजनीचर, मोषक, कुम्भिल, खनक, साहसिक।
80. चंडी- दुर्गा, अंबा, काली, कालिका, जगदंबिका, भगवती।

81. चंदन- गंधराज, गंधसार, मलयज।
82. चावल- तंदुल, धान, भात।
83. चिराग- दीया, दीपक, दीप, शमा।
84. जल- मेघपुष्प, अमृत, सलिल, वारि, नीर, तोय, अम्बु, उदक, पानी, जीवन।
85. जहर- गरल, कालकूट, माहुर, विष।
86. जगत- संसार, विश्व, जग, जगती, भव, दुनिया, लोक, भुवन।
87. जीभ- रसना, रसज्ञा, जिह्वा, रसिका, वाणी, वाचा, जबान।
88. जंगल- विपिन, कानन, वन, अरण्य, गहन, कांतार, बीहड़, विटप।
89. ज्योति- आभा, छवि, द्युति, दीप्ति, प्रभा, भा, रुचि, रोचि।
90. जनक- तात, बाप, पिता, बप्पा, बापू, वालिद।
91. जड़- निर्जीव, प्राणरहित, चेतनाशून्य, बेसुध, अचर, आधार, बुनियाद।
92. तालाब- सरोवर, जलाशय, सर, पुष्कर, ह्रद, पद्याकर , पोखरा, जलवान, सरसी।
93. तरुवर- वृक्ष, पेड़, द्रुम, तरु, विटप, रूंख, पादप।
94. तलवार- असि, कृपाण, करवाल, खड्ग, शमशीर चन्द्रहास।
95. तिमिर- तम, अंधकार, अंधेरा, तमिस्त्रा।
96. तटिनी- नदी, सरिता, दरिया, सलिला, तरंगिणी।
97. तड़ाग- जलाशय, सरोवर, तालाब, पोखर।
98. तड़ित- विद्युत, बिजली, दामिनी, सौदामिनी, गाज।
99. तथागत- बुद्ध, सिद्धार्थ, बोधिसत्व, गौतम।
100. तन- काया, देह, शरीर, बदन, तनु।
101. तपस्वी- तापस, मुनि, संन्यासी, व्रती, योगी, साधू, बैरागी।
102. दूध- दुग्ध, दोहज, पीयूष, क्षीर, पय, गौरस, स्तन्य।
103. दासी- परिचारिका, अनुचरी, बाँदी, नौकरानी।
104. द्रव्य- धन, वित्त, सम्पदा, विभूति, दौलत, सम्पत्ति।
105. दरिद्र- निर्धन, गरीब, रंक, कंगाल, दीन।
106. दिन- दिवस, याम, दिवा, वार, प्रमान, वासर, अह्न।
107. दीन- गरीब, दरिद्र, रंक, अकिंचन, निर्धन, कंगाल।
108. दीपक- दीप, दीया, प्रदीप।
109. देव-अमर, देवता, सुर, निर्जर, वृन्दारक, आदित्य।
110. दशरथ- अवधेश, कौशलपति, दशस्यंदन, रावण।
111. दादुर- मेंढक, मंडूक, भेक।
112. दिनकर- सूरज, सूर्य, भानु, भास्कर, दिवाकर, रवि, दिवेश, दिनेश।
113. धरती- धरा, धरती, वसुधा, जमीन, पृथ्वी, भू, भूमि, धरणी, वसुंधरा, अचला, मही, रत्नवती, रत्नगर्भा।

114. धाम- घर, मकान, गृह, तीर्थ, देवस्थान, पुण्यस्थान।
115. धीर- धैर्यवान, धीरजवान, आत्मनिष्ठ, सहनशील, गम्भीर, शांत, धीमा, गहरा।
116. नदी- तनूजा, सरित, शौवालिनी, स्रोतस्विनी, आपगा, निम्रगा, कूलंकषा, तटिनी।
117. नौका- नाव, तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी, बेड़ा, डोंगी, तरी, पतंग।
118. नाग- विषधर, भुजंग, अहि, उरग, काकोदर, फणीश, सारंग, व्याल, सर्प, साँप।
119. नर- जन, मानव, मनुष्य, पुरुष, मर्त्य, मनुज।
120. नेत्र- चक्षु, लोचन, नयन, अक्षि, चख, आँख।
121. नक्षत्र- उडु, तारिका, नखत, जुन्हाई।
122. नाहर- शेर, सिंह, मृगराज, मृगेंद्र, केसरी, केहरी।
123. निधि- खजाना, कोष, संपत्ति, भंडार।
124. पक्षी- खेचर, दविज, पतंग, पंछी, खग, विहग, परिन्दा, शकुन्त, अण्डज, चिडिया।
125. पृथ्वी- धरा, धरती, भू, इला, उर्वी, धरित्री, धरणी, अवनि, मेदिनी, क्षिति, मही।
126. पुष्प- फूल, सुमन, कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुहुप।
127. पानी- जल, नीर, सलिल, अंबु, अंभ, उदक, तोय, जीवन, वारि, पय, अमृत, मेघपुष्प, सारंग।
128. पार्वती- अपर्णा, अंबिका, आर्या, उमा, गौरी, गिरिजा, भवानी, रुद्राणी, शिवा।
129. पथ- मग, मार्ग, राह, पंथ, रास्ता।
130. पिता- जनक, जनपिता, बाप, बापू, बाबू, जन्मदाता, पितृ, पापा, अब्बा।
131. प्रकाश- ज्योति, चमक, प्रभा, छवि, द्युति।
132. पेड़- तरु, द्रुम, वृक्ष, पादप, रुक्ष।
133. पैर- पाँव, पद, चरण, पाद, पग।
134. पंक- कीचड़, कीच, कर्दम, चहला।
135. पंकज- कमल, राजीव, पद्म, सरोज, नलिन, जलज।
136. पंख- डैना, पक्ष, पर, पखौटा, पाँख।
137. पंगु- अपाहिज, लंगड़ा, विकलांग, अपंग।
138. पत्ता- पत्र, किसलय, दल, पत्रक, पल्ल्व, पत्ती, कोंपल।
139. पथिक- राही, राहगीर, यात्री, बटोही, मुसाफिर, पंथी।
140. पातक- पाप, गुनाह, अघ, कल्मष।
141. पावस- वर्षाकाल, वर्षाऋतु, बारिस।
142. पौ- सवेरा, सुबह, भोर, प्रातः।
143. पौरस्त्य- पूरबी, पूर्वी, प्राच्य, मशरिकी।
144. प्रजा- जनता, रिआया, रैयत, परजा।
145. प्रासाद- महल, राजमहल, राजनिवास, राजभवन।
146. पराक्रम- शक्ति, बल, पुरुषार्थ, उद्योग, ताकत, बहादुरी, वीरता।

147. परिचर्या- गोष्ठी, बातचीत, संगोष्ठी, परिसंवाद।
148. प्रभात- प्रातःकाल, उषाकाल, भोर, सवेरा, सुबह, विहान, निशांत।
149. प्रभु- ईश्वर, भगवान, अल्लाह, खुदा, मालिक, स्वामी।
150. प्रमाद- भ्रम, भूल, भूल-चूक, असावधानी, लापरवाही, बेहोशी, पागलपन।
151. प्रमुख- प्रथम, पहला, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, विशिष्ठ, उत्कृष्ट।
152. प्रमोद- हर्ष, आनंद, उल्लास, खुशी, प्रसन्नता।
153. प्रयोजन- अर्थ, अभिप्राय, उद्देश्य, मतलब।
154. बगीचा- बाग, वाटिका, उपवन, उद्यान, फुलवारी, बगिया।
155. बंधु- भ्राता, भाई, सहोदर, अग्रज, अनुज।
156. बजरंगबली- हनुमान, वायुपुत्र, केसरीनंदन, पवनपुत्र, बज्रांगी, महावीर।
157. बाँसुरी- वेणु, बंशी, मुरली, बंसुरी।
158. बाजि- घोड़ा, अश्व, घोटक, तुरंग, तुरग, हय।
    बैल- वृष, वृषभ, ऋषभ, वलीवर्द।
159. बलदेव- बलराम, बलभद्र, हलायुध, राम, मूसली, रोहिणेय, संकर्षण।
160. भविष्य- भावी, अनागत, भविष्यतकाल, मुस्तकबिल, भविष्यद।
161. भारती- शारदा, सरस्वती, वाग्देवी, वीणावादिनी, विद्या, वागेश्वरी, वागीशा।
162. भीष्म- गंगापुत्र, शांतनुसुत, भीष्मपितामह, देवव्रत।
163. भद्रता- शिष्टता, सभ्यता, विनय, नम्रता।
164. भर्ता- अधिपति, पति, भतार, जीवनसाथी, स्वामी, मालिक, प्रतिपालक, रक्षक, पालक।
165. भानु- सूर्य, रवि, दिनकर, आदित्य, दिवाकर, दिनमणि।
166. भामा- स्त्री, औरत, महिला, नारी, अबला।
167. माँ- अंबा, अम्बिका, अम्मा, जननी, धात्री, प्रसू।
168. मंजूषा- संदूक, बक्स, पिटारी, पिटक, पेटी, झाँपी।
169. मत्सर- द्वेष, ईर्ष्या, कुढ़न, जलन, डाह।
170. मरुत- पवन, वायु, हवा, वात, समीर, मारुत।
171. महाभारत- भारत, जयकाव्य, पंचमवेद, जय, महायुद्ध।
172. महावत- हाथीवान, पीलवान, फीलवान, आकुंशिक।
173. मुकुट- ताज, उष्णीष, किरीट, राजमुकुट।
174. मजदूर- श्रमिक, सेवक, कुली, दास।
175. मधुकर- भ्रमर, भौंरा, मधुप।
176. मन- 1. चित्त, हृदय, अंतःकरण, दिल, अंतर 2. इच्छा, इरादा, विचार, तबीयत।
177. मनीषी- ज्ञानी, पंडित, विद्वान, बुद्धिमान, अक्लमंद, चिन्तक।
178. मनोज्ञ- सुन्दर, मनोहर, मनभावन, चित्ताकर्षक, मनोरम, हृदयग्राही।
179. मानव- मनुष्य, आदमी, व्यक्ति।

180. मोहक- आकर्षक, मनोहरता, लुभावनापन, दिलचस्प।
181. यम- सूर्यपुत्र, जीवितेश, श्राद्धदेव, कृतांत, अन्तक, धर्मराज, दण्डधर, कीनाश, यमराज।
182. यमुना- कालिन्दी, सूर्यसुता, रवितनया, तरणि-तनूजा, तरणिजा, अर्कजा, भानुजा।
183. यकृत- जिगर, कलेजा, जिगरा, पित्ताशय।
184. यक्ष्मा- टी.बी., तपेदिक, राजरोग, क्षय।
185. यज्ञोपवीत- जनेऊ, उपवीत, ब्रह्मसूत्र।
186. यशोधरा- गौतम-पत्नी, गौतमी, गोपा।
187. युद्ध- संग्राम, संघर्ष, समर, लड़ाई, रण, द्वंद्व।
188. योम- दिवस, दिनमान, दिन, अह, सूर्यकाल।
189. यज्ञ- याग, हव, हवन, होम, ज्योतिष्टोम, अनुष्ठान।
190. रात्रि- निशा, क्षया, रैन, रात, यामिनी, रजनी, त्रियामा, क्षणदा, शर्वरी, तमस्विनी।
191. राजा- नृपति, भूपति, नरपति, नृप, महीप, राव, सम्राट, भूप, भूपाल, नरेश।
192. रवि- सूरज, दिनकर, प्रभाकर, दिवाकर, सविता, भानु, दिनेश, अंशुमाली, सूर्य।
193. रामचन्द्र- अवधेश, सीतापति, राघव, रघुपति, रघुवर, रघुनाथ, रघुराज, रघुवीर, रावणारि, जानकीवल्लभ, कमलेन्द्र, कौशल्यानन्दन।
194. रावण- दशानन, लंकेश, लंकापति, दशशीश, दशकंध, दैत्येन्द्र।
195. राधिका- राधा, ब्रजरानी, हरिप्रिया, वृषभानुजा।
196. रक्त- खून, लहू, रुधिर, शोणित, लोहित।
197. राक्षस- दैत्य, असुर, निशाचर।
198. रजनी- रात, रात्रि, निशा, यामिनी।
199. रणभूमि- संग्रामभूमि, युद्धस्थल, युद्ध क्षेत्र, वीरभूमि, मैदान-ए-जंग।
200. रम्य- सुन्दर, मनोहर, मनभावन, मनमोहक, आकर्षक, हृदयस्पर्शी।
201. रोग- व्याधि, बीमारी, रुग्णता, अस्वस्थता।
202. लक्ष्मी- चंचला, कमला, पद्मा, रमा, हरिप्रिया, श्री, इंदिरा, पद्मा, सिन्धुसुता।
203. लौह- अयस, लोहा, सार।
204. लता- बल्लरी, बल्ली, लतिका, बेली।
205. लाभ- प्राप्ति, मुनाफा, फायदा, नफा।
206. लाली- अरुणता, ललाई, लालिमा, राग, लालपन।
207. वृक्ष- तरू, अगम, पेड़, पादप, विटप, गाछ, दरख्त, शाखी, विटप, द्रुम।
208. वायु- हवा, पवन, समीर, अनिल, वात, मारुत।
209. वसन- अम्बर, वस्त्र, परिधान, पट, चीर।
210. विष- जहर, हलाहल, गरल, कालकूट।
211. विष्णु- नारायण, दामोदर, पीताम्बर, माधव, केशव, गोविन्द, चतुर्भज, उपेन्द्र।
212. विद्युत- चपला, चंचला, दामिनी, सौदामिनी, तड़ित, बीजुरी, घनवल्ली, क्षणप्रभा।

213. वारिश- वर्षण, वृष्टि, वर्षा, पावस, बरसात।
214. वज्र- कुलिस, पवि, अशनि, दभोलि।
215. वर्षा- पावस, बरसात, वर्षाकाल, चौमासा, वर्षाऋतु।
216. वसन्त- मधुमास, माधव, कुसुमाकर, ऋतुराज।
217. वन- कानन, विपिन, अरण्य, कांतार।
218. वक्ष- छाती, सीना, वक्षस्थल, उरस्थल।
219. वनिता- स्त्री, औरत, नारी, महिला, अबला।
220. वरदान- आशीष, आशीर्वाद, मनोरथसिद्धि, उपहार, भेंट।
221. विज्ञ- जानकार, बुद्धिमान, समझदार, विद्वान, पंडित।
222. विद्युत- बिजली, तड़ित, करका, चंचला।
223. विहंग- पक्षी, चिड़िया, पखेरू, खग।
224. दृष्टि- वर्षा, बारिश, मेघ, बरसात।
225. व्रत- उपवास, निराहार, अनाहार, रोजा।
226. शब्दकोश- शब्द संग्रह, शब्द संकलन, शब्दावली, शब्दार्थिका।
227. शव- मुर्दा, लाश, मिट्टी, लोथ, पर्थिव-शरीर।
228. शाप- अभिशाप, बद्दुआ, अभिशाप, श्राप।
229. शेखर- शीर्ष, सिर, खोपड़ी, कपाल, मूंड, मस्तक।
230. समुद्र- सागर, पयोधि, उदधि, पारावार, नदीश, नीरनिधि, अर्णव, पयोनिधि, अब्धि, वारीश, जलधाम, नीरधि, जलधि, सिंधु, रत्नाकर, वारिधि।
231. सरस्वती- गिरा, भाषा, भारती, शारदा, ब्राह्मी, वाक्, जातरूप, हाटक, वीणापाणि।
232. सुमन- कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुष्प, फूल।
233. सीता- वैदेही, जानकी, भूमिजा, जनकतनया, जनकनन्दिनी, रामप्रिया।
234. सर्प- साँप, अहि, भुजंग, ब्याल, फणी, पत्रग, नाग, विषधर, उरग, पवनासन।
235. सोना- स्वर्ण, कंचन, कनक, सुवर्ण, हाटक, हिरण्य, जातरूप, हेम, कुंदन।
236. सूर्य- रवि, सूरज, दिनकर, प्रभाकर, आदित्य, मरीची, दिनेश, भास्कर, दिनकर।
237. सिंह- केसरी, शेर, महावीर, व्याघ्र, पंचमुख, मृगेन्द्र, केहरी, केशी, ललित, हरि, मृगपति, वनराज, शार्दूल, नाहर, सारंग, मृगराज।
238. सुन्दर- कलित, ललाम, मंजुल, रुचिर, चारु, रम्य, मनोहर, सुहावना, चित्ताकर्षक, रमणीक, कमनीय, उत्कृष्ट, उत्तम, सुरम्य।
239. सन्ध्या- सायंकाल, शाम, साँझ, प्रदोषकाल, गोधूलि।
240. स्त्री- सुन्दरी, कान्ता, कलत्र, वनिता, नारी, महिला, अबला, ललना, औरत।
241. स्वर्ग- सुरलोक, देवलोक, दिव्यधाम, ब्रह्मधाम, द्यौ, परमधाम, त्रिदिव, दयुलोक।
242. स्वर्ण- सुवर्ण, कंचन, हेन, हारक, जातरूप, सोना, तामरस, हिरण्य।
243. संसार- लोक, जग, जहान, भूमण्डल, दुनियाँ, भव, जगत, विश्व।

244. सरस्वती- गिरा, शारदा, भारती, वीणापाणि, विमला, वागीश, वागेश्वरी।
245. साधु- सज्जन, भद्र, सभ्य, शिष्ट, कुलीन।
246. सलिल- अम्बु, जल नीर, तोय, सलिल, पानी, वारि।
247. संतान-संतति, वंशज, वंश, औलाद, बाल-बच्चे।
248. संतुलन- साम्य, साम्यवस्था, समभार, समरसता।
249. संतोष- संतुष्टि, तसल्ली, धीरज, धैर्य, ढाढ़स, संशयपूर्ण, सांत्वना।
250. संन्यासी- त्यागी, गोस्वामी, योगी, तपस्वी, एकांतवासी, साधनाशील, संत, साधू, मुनि।
251. संबोधन- बुलाना, पुकारना, आह्वान करना।
252. संभ्रांत- सम्मानित, प्रतिष्ठित, भद्र पुरुष।
253. सखा- साथी, मित्र, दोस्त, संगी।
254. सतीत्व- पातिव्रत्य, जितेन्द्रियता, शुचिता, सतीधर्मिता, साध्विता, पतिव्रता।
255. सनातन- नित्य, हमेशा, निरन्तर, शाश्वत।
256. सभापति- अध्यक्ष, प्रधान, संचालक, प्रबंधक, चेयरमैन।
257. सुगंध- महक, सौरभ, सुरभि, खुशबू।
258. सुगम- सहज, सरल, आसान, सुबोध, सुलभ।
259. सुबह- सवेरा, भोर, अरुणोदय, प्रभात, प्रातःकाल, भिनसार, विहान।
260. हंस- कलकंठ, मराल, सिपपक्ष, मानसौक।
261. हृदय- छाती, वक्ष, वक्षस्थल, हिय, उर।
262. हाथ- हस्त, कर, पाणि।
263. हाथी- नाग, हस्ती, राज, कुंजर, कूम्भा, मतंग, वारण, गज, द्विप, करी, मदकल।
264. हरिण- मृग, सारंग, ऋश्य, हिरण।
265. हर्ष- सुख, आनंद, प्रसन्नता, उल्लास, मोद-प्रमोद।
266. हर्षित- प्रफुल्ल, प्रसन्न, उल्लासमय, प्रसन्नचित्त।

हिंदी मुहावरे का अर्थ और वाक्य प्रयोग

1. मुहावरा - अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना
   अर्थ - अपनी बड़ाई आप करना
   वाक्य प्रयोग - अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बननेवाले को समाज में इज्जत नहीं मिलती है।
2. मुहावरा - आँख का काजल चुराना
   अर्थ - सफाई के साथ चोरी करना
   वाक्य प्रयोग - इतने लोगों के बीच से घड़ी गायब ! चोर ने तो जैसे आँखों का काजल ही चुरा लिया है

3. मुहावरा – आँखों में धूल झोंकना
अर्थ – सरे आम धोखा देना
वाक्य प्रयोग –परीक्षक की आँखों में धूल झोंककर कुछ विद्यार्थी अच्छे अंक तो पा जाते हैं, परंतु इससे उन्हें जीवन में सफलता नहीं मिलती है।

4. मुहावरा – आखें फेर लेना
अर्थ – पहले जैसा व्यवहार न रखना
वाक्य प्रयोग – जब से उसे अफसरी मिली है, उसने माँ–बाप, यार–दोस्त सबसे आँखें फेर ली है।

5. मुहावरा – आँखें बिछाना
अर्थ – प्रेम से स्वागत करना
वाक्य प्रयोग – तुम्हारी राह में आँखें बिछाये कब से बैठा हूँ; तुम जल्द आ जाओ।

6. मुहावरा – आँख में पानी न होना
अर्थ – बेशर्म होना
वाक्य प्रयोग – बेईमान लोगों की आँखों में पानी नहीं होता।

7. मुहावरा – आँखों में गड़ना
अर्थ – पसंद आना
वाक्य प्रयोग – तुम्हारी कलम मेरी आँखों में गड़ गयी है, इसे तुम मुझे दे दो।

8. मुहावरा – आँखे लाल करना
अर्थ – क्रोध से देखना
वाक्य प्रयोग – आँखें लाल मत करो, इससे मैं डरनेवाला नहीं हूँ।

9. मुहावरा – खाक छानना
अर्थ – भटकना
वाक्य प्रयोग – नौकरी की खोज में वह खाक छानता रहा।

10. मुहावरा – खेत रहना या आना
अर्थ – वीरगति पाना
वाक्य प्रयोग – पानीपत की तीसरी लड़ाई में इतने मराठे खेत आये कि मराठा–भूमि जवानों से खाली हो गयी।

11. मुहावरा – खटाई में पड़ना
अर्थ – झमेले में पड़ना, रुक जाना
वाक्य प्रयोग – बात तय थी, लेकिन ऐन मौके पर उसके मुकर जाने से सारा काम खटाई में पड़ गया।

12. मुहावरा – खाक फाँकना
अर्थ – मारा–मारा फिरना
वाक्य प्रयोग – पहले तो उसने नौकरी छोड़ दी, अब नौकरी की तलाश में खाक फाँक रहा है।

13. मुहावरा – खाक में मिलना
अर्थ – सब कुछ नष्ट हो जाना
वाक्य प्रयोग – बाढ़ आने पर उसका सब कुछ खाक में मिल गया।
मुहावरा – खिचड़ी पकाना
अर्थ – गुप्त बात या कोई षड्यंत्र करना
वाक्य प्रयोग – छात्रों को खिचड़ी पकाते देख अध्यापक ने उन्हें डाँट दिया।
14. मुहावरा – खूँटा गाड़ना
अर्थ – रहने का स्थान निर्धारित करना
वाक्य प्रयोग – उसने तो यहीं पर खूँटा गाड़ लिया है, लगता है जीवन भर यहीं रहेगा।
15. मुहावरा – खून-पसीना एक करना
अर्थ – बहुत कठिन परिश्रम करना
वाक्य प्रयोग – रामू खून-पसीना एक करके दो पैसे कमाता है।
16. मुहावरा – खून के आँसू रुलाना
अर्थ – बहुत सताना या परेशान करना
वाक्य प्रयोग – रामू कलियुगी पुत्र है, वह अपने माता-पिता को खून के आँसू रुला रहा है।
17. मुहावरा – खून सवार होना
अर्थ – बहुत क्रोध आना
वाक्य प्रयोग – उसके ऊपर खून सवार है, आज वह कुछ भी कर सकता है।
18. मुहावरा – ख्याली पुलाव पकाना
अर्थ – असंभव बातें करना
वाक्य प्रयोग – अरे भाई! ख्याली पुलाव पकाने से कुछ नहीं होगा, कुछ काम करो।
19. मुहावरा – खेल बिगड़ना
अर्थ – काम बिगड़ना
वाक्य प्रयोग – अगर पिताजी ने साथ नहीं दिया तो हमारा सारा खेल बिगड़ जाएगा।
20. मुहावरा – खोपड़ी गंजी करना
अर्थ – बहुत मारना-पीटना
वाक्य प्रयोग – लोगों ने मार-मार कर चोर की खोपड़ी गंजी कर दी।
21. मुहावरा – खोद-खोद कर पूछना
अर्थ – अनेकानेक प्रश्न पूछना
वाक्य प्रयोग – खोद-खोद कर पूछना बंद करो, मैं इस तरह के सवालों के जबाब नहीं दूँगा।
22. मुहावरा – गले का हार होना
अर्थ – बहुत प्यारा
वाक्य प्रयोग – लक्ष्मण राम के गले का हार थे।

23. मुहावरा – गर्दन पर छुरी चलाना
अर्थ – नुकसान पहुँचाना
वाक्य प्रयोग – मुझे पता चल गया कि विरोधियों से मिलकर तुम किस तरह मेरे गले पर छुरी चला रहे थे।

24. मुहावरा – गड़े मुर्दे उखाड़ना
अर्थ – दबी हुई बात फिर से उभारना
वाक्य प्रयोग – जो हुआ सो हुआ, अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ?

25. मुहावरा – गागर में सागर भरना
अर्थ – एक रंग –ढंग पर न रहना
वाक्य प्रयोग – उसका क्या भरोसा वह तो गिरगिट की तरह रंग बदलता है।

26. मुहावरा – गिरगिट की तरह रंग बदलना
अर्थ – बातें बदलना
वाक्य प्रयोग – गिरगिट की तरह रंग बदलने से तुम्हारी कोई इज्जत नहीं करेगा।

27. मुहावरा – गाल बजाना
अर्थ – डींग हाँकना
वाक्य प्रयोग – जो करता है, वही जानता है। गाल बजानेवाले क्या जानें ?

28. मुहावरा – गुस्सा पीना
अर्थ – क्रोध दबाना
वाक्य प्रयोग – गुस्सा पीकर रह गया। चाचा का वह मुँहलगा न होता, तो उसकी गत बना छोड़ता।

29. मुहावरा – गूलर का फूल होना
अर्थ – लापता होना
वाक्य प्रयोग – वह तो ऐसा गूलर का फूल हो गया है कि उसके बारे में कुछ कहना मुश्किल है।

30. मुहावरा – गुदड़ी का लाल
अर्थ – गरीब के घर में गुणवान का उत्पत्र होना
वाक्य प्रयोग – अपने वंश में प्रेमचन्द सचमुच गुदड़ी के लाल थे।
मुहावरा – गाँठ में बाँधना
अर्थ – खूब याद रखना
वाक्य प्रयोग – यह बात गाँठ में बाँध लो, तन्दुरुस्ती रही तो सब रहेगा।

31. मुहावरा – गुड़ गोबर करना
अर्थ – बनाया काम बिगाड़ना
वाक्य प्रयोग – वीरू ने जरा–सा बोलकर सब गुड़–गोबर कर दिया।

32. मुहावरा – गुरु घंटाल
अर्थ – दुष्टों का नेता या सरदार
वाक्य प्रयोग – अरे भाई, मोनू तो गुरु घंटाल है, उससे बचकर रहना।
33. मुहावरा – गज भर की छाती होना
अर्थ – अत्यधिक साहसी होना
वाक्य प्रयोग – उसकी गज भर की छाती है तभी तो उसने अकेले ही चार–चार आतं. कवादियों को मार दिया।
34. मुहावरा – गढ़ फतह करना
अर्थ – कठिन काम करना
वाक्य प्रयोग – आई.ए.एस. पास करके शंकर ने सचमुच गढ़ फतह कर लिया।
35. मुहावरा – गधे को बाप बनाना
अर्थ – काम निकालने के लिए मूर्ख की खुशामद करना
वाक्य प्रयोग – रामू गधे को बाप बनाना अच्छी तरह जानता है।
36. मुहावरा – गरम होना
अर्थ – क्रोधित होना
वाक्य प्रयोग – अंजू की दादी जरा–जरा सी बात पर गरम हो जाती है।
37. मुहावरा – गला काटना
अर्थ – किसी ठगना
वाक्य प्रयोग – कल अध्यापक ने बताया कि किसी का गला काटना बुरी बात है।
38. मुहावरा – गला पकड़ना
अर्थ – किसी को जिम्मेदार ठहराना
वाक्य प्रयोग – गलती चाहे किसी की हो, पिताजी मेरा ही गला पकड़ते हैं।
39. मुहावरा – गला फाड़ना
अर्थ – जोर से चिल्लाना
वाक्य प्रयोग – राजू कब से गला फाड़ रहा है कि चाय पिला दो, पर कोई सुनता ही नहीं।
40. मुहावरा – गले पर छुरी चलाना
अर्थ – अत्यधिक हानि पहुँचाना
वाक्य प्रयोग – उसने मुझे नौकरी से बेदखल करा के मेरे गले पर छुरी चला दी।
41. मुहावरा – गले न उतरना
अर्थ – पसन्द नहीं आना
वाक्य प्रयोग – मुझे उसका काम गले न हीं उतरता है, वह हर काम उल्टा करता है।
42. मुहावरा – गाजर–मूली समझना
अर्थ – तुच्छ समझना
वाक्य प्रयोग – मोहन ने कहा कि उसे कोई गाजर–मूली न समझे, वह बहुत कुछ कर सकता है।

43. मुहावरा – गूँगे का गुड़
अर्थ – वर्णनातीत अर्थात जिसका वर्णन न किया जा सके
वाक्य प्रयोग – दादाजी कहते हैं कि ईश्वर के ध्यान में जो आनंद मिलता है, वह तो गूँगे का गुड़ है।

44. मुहावरा – गोबर गणेश
अर्थ – मूर्ख
वाक्य प्रयोग – वह तो एकदम गोबर गणेश है, उसकी समझ में कुछ नहीं आता।

45. मुहावरा – घर का न घाट का
अर्थ – कहीं का नहीं
वाक्य प्रयोग – उसे कोई काम आता नहीं और न लगन ही है कि कुछ सीखे-पढ़े। वह घर का न घाट का है, जिये तो कैसे जिये।

46. मुहावरा – घाव पर नमक छिड़कना
अर्थ – दु:ख में दु:ख देना
वाक्य प्रयोग – राम वैसे ही दुखी है, तुम उसे परेशान करके घाव पर नमक छिड़क रहे हो।

47. मुहावरा – घोड़े बेचकर सोना
अर्थ – बेफिक्र होना
वाक्य प्रयोग – बेटी तो ब्याह दी। अब क्या, घोड़े बेचकर सोओगे?

48. मुहावरा – घड़ों पानी पड़ जाना
अर्थ – अत्यन्त लज्जित होना
वाक्य प्रयोग – वह हमेशा फस्ट क्लास लेता था मगर इस बार परीक्षा में चोरी करते समय रँगे हाथ पकड़े जाने पर बच्चू पर घड़ों पानी पड़ गया।

49. मुहावरा – घी के दीए जलाना
अर्थ – अप्रत्याशित लाभ पर प्रसन्नता
वाक्य प्रयोग – जिससे तुम्हारी बराबर ठनती रही, वह बेचारा कल शाम कूच कर गया। अब क्या है, घी के दीये जलाओ।

50. मुहावरा – घाट-घाट का पानी पीना
अर्थ – हर प्रकार का अनुभव होना
वाक्य प्रयोग – मुन्ना घाट-घाट का पानी पीए हुए है, उसे कौन धोखा दे सकता है?

51. मुहावरा – घर का उजाला
अर्थ – सुपुत्र अथवा इकलौता पुत्र
वाक्य प्रयोग – सब जानते हैं कि मोहन अपने घर का उजाला है।

52. मुहावरा – घर का बोझ उठाना
अर्थ – घर का खर्च चलाना या देखभाल करना
वाक्य प्रयोग – बचपन में ही अपने पिता के मरने के बाद राकेश घर का बोझ उठा रहा है।

53. मुहावरा – घर का नाम डुबोना
अर्थ – परिवार या कुल को कलंकित करना
वाक्य प्रयोग – रामू ने चोरी के जुर्म में जेल जाकर घर का नाम डुबो दिया।

54. मुहावरा – घर फूँककर तमाशा देखना
अर्थ – अपना घर स्वयं उजाड़ना या अपना नुकसान खुद करना
वाक्य प्रयोग – जुए में सब कुछ बर्बाद करके राजू अब घर फूँक के तमाशा देख रहा है।

55. मुहावरा – घर में आग लगाना
अर्थ – परिवार में झगड़ा कराना
वाक्य प्रयोग – वह तो सबके घर में आग लगाता फिरता है इसलिए उसे कोई अपने पास नहीं बैठने देता।

56. मुहावरा – घर में भुंजी भाँग न होना
अर्थ – बहुत गरीब होना
वाक्य प्रयोग – रामू के घर में भुंजी भाँग नहीं हैं और बातें करता है नवाबों की।

57. मुहावरा – घाव पर मरहम लगाना
अर्थ – सांत्वना या तसल्ली देना
दादी पहले तो मारती है, फिर घाव पर मरहम लगाती है।

58. मुहावरा – घाव हरा होना
अर्थ – भूला हुआ दुःख पुनः याद आना
वाक्य प्रयोग – राजा ने अपने मित्र के मरने की खबर सुनी तो उसके अपने घाव हरे हो गए।

59. मुहावरा – घास न डालना
अर्थ – सहायता न करना या बात तक न करना
वाक्य प्रयोग – मैनेजर बनने के बाद राजू अब मुझे घास नहीं डालता।

60. मुहावरा – घी-दूध की नदियाँ बहना
अर्थ – समृद्ध होना
वाक्य प्रयोग – श्रीकृष्ण के युग में हमारे देश में घी-दूध की नदियाँ बहती थीं।

61. मुहावरा – घोड़े पर सवार होना
अर्थ – वापस जाने की जल्दी में होना
वाक्य प्रयोग – अरे मित्र, तुम तो सदैव घोड़े पर सवार होकर आते हो, जरा हमारे पास भी बैठो।

62. मुहावरा – घोलकर पी जाना
अर्थ – कंठस्थ याद करना
वाक्य प्रयोग – रामू दसवीं में गणित को घोलकर पी गया था तब उसके 90 प्रतिशत अंक आए हैं।

63. मुहावरा – घपले में पड़ना
अर्थ – किसी काम का खटाई में पड़ना
वाक्य प्रयोग – लोन के कागज पूरे न होने के कारण लोन स्वीकृति का मामला घपले में पड़ गया है।

64. मुहावरा – घुट-घुट कर मरना
अर्थ – असह्य कष्ट सहते हुए मरना
वाक्य प्रयोग – गरीबों पर अत्याचार करने वाले घुट-घुट कर मरेंगे।

65. मुहावरा – चिकना घड़ा होना
अर्थ – बेशर्म होना
वाक्य प्रयोग – तुम ऐसा चिकना घड़ा हो तुम्हारे ऊपर कहने-सुनने का कोई असर नहीं पड़ता।

66. मुहावरा – चिराग तले अँधेरा
अर्थ – पण्डित के घर में घोर मूर्खता का आचरण
वाक्य प्रयोग – पण्डितजी स्वयं तो बड़े विद्वान हैं, किन्तु उनके लड़के को चिराग तले अँधेरा ही जानो।

67. मुहावरा – चैन की बंशी बजाना
अर्थ – मौज करना
वाक्य प्रयोग – आजकल राम चैन की बंशी बजा रहा है।

68. मुहावरा – चार दिन की चाँदनी
अर्थ – थोड़े दिन का सुख
वाक्य प्रयोग – राजा बलि का सारा बल भी जब चार दिन की चाँदनी ही रहा, तो तुम किस खेत की मूली हो?

69. मुहावरा – चूड़ियाँ पहनना
अर्थ – स्त्री की-सी असमर्थता प्रकट करना
वाक्य प्रयोग – इतने अपमान पर भी चुप बैठे हो! चूड़ियाँ तो नहीं पहन रखी है तुमने?

70. मुहावरा – चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना
अर्थ – डरना, घबराना
वाक्य प्रयोग – साम्यवाद का नाम सुनते ही पूँजीपतियों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगती हैं।

71. मुहावरा – चाँदी काटना
अर्थ – खूब आमदनी करना
वाक्य प्रयोग – कार्यालय में बाबू लोग खूब चाँदी काट रहे हैं।

72. मुहावरा – चकमा देना
अर्थ – धोखा देना
वाक्य प्रयोग – वह बदमाश मुझे चकमा देकर भाग गया।

73. मुहावरा – चना–चबैना
अर्थ – रूखा–सूखा भोजन
वाक्य प्रयोग – आजकल रामू चना–चबैना खाकर गुजारा कर रहा हैं।
74. मुहावरा – चमड़ी उधेड़ना या खींचना
अर्थ – बहुत पीटना
वाक्य प्रयोग – राजू, तुमने दुबारा मुँह खोला तो मैं तुम्हारी चमड़ी उधेड़ दूँगा।
75. मुहावरा – चलता पूर्जा
अर्थ – चालाक
वाक्य प्रयोग – रवि चलता पूर्जा है, उससे बचकर रहना ही अच्छा है।
76. मुहावरा – चाँद का टुकड़ा
अर्थ – बहुत सुन्दर
रामू का पुत्र तो चाँद का टुकड़ा है, वह उसे प्रतिदिन काला टीका लगाता है।
77. मुहावरा – चाँदी ही चाँदी होना
अर्थ – खूब धन लाभ होना
वाक्य प्रयोग – अरे मित्र! यदि तुम्हारी ये दुकान चल गई तो चाँदी ही चाँदी हो जाएगी।
78. मुहावरा – चाँदी का जूता
अर्थ – घूस या रिश्वत
वाक्य प्रयोग – जब रामू ने लाइन में लगे बिना अपना काम करा लिया तो उसने मुझसे कहा– तुम भी चाँदी का जूता मारो और काम करा लो, लाइन में क्यों लगे हो?
79. मुहावरा – चादर देखकर पाँव पसारना
अर्थ – आमदनी के अनुसार खर्च करना
वाक्य प्रयोग – पिताजी ने मुझसे कहा कि आदमी को चादर देखकर पाँव पसारने चाहिए, वरना उसे पछताना पड़ता है।
80. मुहावरा – चार सौ बीस
अर्थ – कपटी एवं धूर्त व्यक्ति
वाक्य प्रयोग – मुन्ना चार सौ बीस है, इसलिए सब उससे दूर रहते हैं।
81. मुहावरा – चिकनी–चुपड़ी बातें
अर्थ – धोखा देने वाली बातें
वाक्य प्रयोग – एक व्यक्ति चिकनी–चुपड़ी बातें करके रामू की माँ को ठग ले गया।
82. मुहावरा – चिड़िया उड़ जाना
अर्थ – चले जाना या गायब हो जाना
वाक्य प्रयोग – अरे भाई, कब से तुमसे कहा था कि शहद अच्छा है, ले लो। अब तो चिड़िया उड़ गई। जाओ अपने घर।

83. मुहावरा – चिनगारी छोड़ना
अर्थ – लड़ाई-झगड़े वाली बात करना
वाक्य प्रयोग – राजू ने ऐसी चिनगारी छोड़ी कि दो मित्रों में झगड़ा हो गया।

84. मुहावरा – चिल्ल-पौं मचना
अर्थ – शोरगुल होना
वाक्य प्रयोग – जब कक्षा में अध्यापक नहीं होते तो चिल्ल-पौं मच जाती है।

85. मुहावरा – चुल्लू भर पानी में डूब मरना
अर्थ – अत्यन्त लज्जित होना
वाक्य प्रयोग – जब सबके सामने राजू का झूठ पकड़ा गया तो उसके लिए चुल्लू भर पानी में डूब मरने वाली बात हो गई।

86. मुहावरा – चूना लगाना
अर्थ – ठगना
वाक्य प्रयोग – कल एक अनजान आदमी गोपाल को 100 रुपए का चूना लगा गया।

87. मुहावरा – चेहरे का रंग उड़ना
अर्थ – निराश होना
वाक्य प्रयोग – जब रानी को परीक्षा में फेल होने की सूचना मिली तो उसके चेहरे का रंग उड़ गया।

88. मुहावरा – चेहरा खिलना
अर्थ – खुश होना
वाक्य प्रयोग – जब अमित दसवीं में उत्तीर्ण हो गया तो उसका चेहरा खिल गया।

89. मुहावरा – चैन की वंशी बजाना
अर्थ – सुख से समय बिताना
वाक्य प्रयोग – मेरा मित्र डॉक्टर बनकर चैन की वंशी बजा रहा हैं।

90. मुहावरा – चोली-दामन का साथ
अर्थ – काफी घनिष्ठता
वाक्य प्रयोग – धीरू और वीरू का चोली-दामन का साथ है।

91. मुहावरा – चोला छोड़ना
अर्थ – शरीर त्यागना
वाक्य प्रयोग – गाँधीजी ने चोला छोड़ते समय 'हे राम' कहा था।

92. मुहावरा – चट कर जाना
अर्थ – सबका सब खा जाना
वाक्य प्रयोग – वह तीन दिन से भूखा था, सारा खाना एकदम चट कर गया।

93. मुहावरा – चरबी चढ़ना
अर्थ – मदांध होना
वाक्य प्रयोग – लॉटरी लगते ही प्रमोद पर चरबी चढ़ गई है, दूसरों को कुछ समझता ही नहीं है।

94. मुहावरा – चहल-पहल होना
अर्थ – रौनक होना
वाक्य प्रयोग – दिवाली के कारण आज बाजार में बहुत चहल-पहल है।

95. मुहावरा – चूर चूर कर देना
अर्थ – नष्ट करना
वाक्य प्रयोग – कारगिल युद्ध में भारतीय सेना ने पाकिस्तान का घमंड चूर-चूर कर दिया था।

96. मुहावरा – छक्के छूटना
अर्थ – बुरी तरह पराजित होना
वाक्य प्रयोग – महाराजकुमार विजयनगरम की विकेट-कीपरी में अच्छे-अच्छे बॉलर के छक्के छूट चुके हैं।

97. मुहावरा – छप्पर फाड़कर देना
अर्थ – बिना मेहनत का अधिक धन पाना
वाक्य प्रयोग – ईश्वर जिसे देता है, उसे छप्पर फाड़कर देता है।

98. मुहावरा – छाती पर पत्थर रखना
अर्थ – कठोर हृदय
वाक्य प्रयोग – उसने छाती पर पत्थर रखकर अपने पुत्र को विदेश भेजा था।

99. मुहावरा – छाती पर साँप लोटना
अर्थ – ईर्ष्या से हृदय जलना
वाक्य प्रयोग – जब पड़ोसी ने नई कार ली तो शेखर की छाती पर साँप लोट गया।

100. मुहावरा – छठी का दूध याद आना
अर्थ – बहुत कष्ट आ पड़ना
वाक्य प्रयोग – मैंने जब अपना मकान बनवाया तो मुझे छठी का दूध याद आ गया।

101. मुहावरा – छत्तीस का आँकड़ा
अर्थ – घोर विरोध
वाक्य प्रयोग – मुझमें और मेरे मित्र में आजकल छत्तीस का आँकड़ा है।

102. मुहावरा – छाती फूलना
अर्थ – गर्व होना
वाक्य प्रयोग – जब मैंने एम.ए. कर लिया तो मेरे अध्यापक की छाती फूल गई।

103. मुहावरा – छींका टूटना
अर्थ – अनायास लाभ होना
वाक्य प्रयोग – अरे, उसकी तो लॉटरी निकल गई। इसे कहते हैं– छींका टूटना।

104. मुहावरा – छलनी कर डालना
अर्थ – शोक-विह्वल कर देना
वाक्य प्रयोग – तुम्हारी जली-कटी बातों ने मेरा कलेजा छलनी कर डाला है, अब मुझसे बात मत करो।

105. मुहावरा – छाप पड़ना
अर्थ – प्रभाव पड़ना
वाक्य प्रयोग – प्रोफेसर शर्मा का व्यक्तित्व ही ऐसा है। उनकी छाप सब पर जरूर पड़ती है।

106. मुहावरा – छी-छी करना
अर्थ – घृणा प्रकट करना
वाक्य प्रयोग – तुम्हारे काले कारनामों के कारण सब लोग तुम्हारे लिए छी-छी कर रहे हैं।

107. मुहावरा – जलती आग में घी डालना
अर्थ – क्रोध बढ़ाना
वाक्य प्रयोग – बहन ने भाई की शिकायत करके जलती आग में भी डाल दिया।

108. मुहावरा – जमीन आसमान एक करना
अर्थ – बहुत प्रयास करना
वाक्य प्रयोग – मै शहर में अच्छा मकान लेने के लिए जमीन आसमान एक कर दे रहा हूँ परन्तु सफलता नहीं मिल रही है।

109. मुहावरा – जूती चाटना
अर्थ – खुशामद करना, चापलूसी करना
वाक्य प्रयोग – संजीव ने अफसरों की जूतियाँ चाटकर ही अपने बेटे की नौकरी लगवाई है।

110. मुहावरा – जहर उगलना
अर्थ – कड़वी बातें कहना या भला-बुरा कहना
वाक्य प्रयोग – पता नहीं क्या बात हुई, आज राजू अपने मित्र के खिलाफ जहर उगल रहा था।

111. मुहावरा – जख्म पर नमक छिड़कना
अर्थ – दु:खी या परेशान को और परेशान करना
वाक्य प्रयोग – जब सोहन भिखारी को बुरा-भला कहने लगा तो मैंने कहा कि हमें किसी के जख्म पर नमक नहीं छिड़कना चाहिए।

112. मुहावरा – जख्म हरा हो जाना
अर्थ – पुराने दु:ख या कष्ट भरे दिन याद आना
वाक्य प्रयोग – जब भी मैं गंगा स्नान के लिए जाता हूँ तो मेरा जख्म हरा हो जाता है, क्योंकि गंगा नदी में मेरा मित्र डूबकर मर गया था।

113. मुहावरा – जबान में ताला लगाना
अर्थ – चुप रहने पर विवश करना
वाक्य प्रयोग – सरकार जब भी चाहे पत्रकारों की जबान में ताला लगा सकती है।

114. मुहावरा – जमीन पर पाँव न पड़ना
अर्थ – अत्यधिक खुश होना
वाक्य प्रयोग – रानी दसवीं में उत्तीर्ण हो गई है तो आज उसके जमीन पर पाँव नहीं पड़ रहे हैं।

115. मुहावरा – जमीन में समा जाना
अर्थ – बहुत लज्जित होना
वाक्य प्रयोग – जब उधार के पैसे न देने पर सबके सामने रामू का अपमान हुआ तो वह जमीन में ही समा गया।

116. मुहावरा – जल-भुन कर राख होना
अर्थ – बहुत क्रोधित होना
वाक्य प्रयोग – सुरेश जरा-सी बात पर जल-भुन कर राख हो जाता है।

117. मुहावरा – जल में रहकर मगर से बैर करना
अर्थ – अपने आश्रयदाता से शत्रुता करना
वाक्य प्रयोग – मैंने रामू से कहा कि जल में रहकर मगर से बैर मत करो, वरना नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा।

118. मुहावरा – जवाब देना
अर्थ – नौकरी से निकालना
वाक्य प्रयोग – आज राजू जब देर से दफ्तर गया तो उसके मालिक ने उसे जवाब दे दिया।

119. मुहावरा – जहर का घूँट पीना
अर्थ – कड़वी बात सुनकर चुप रह जाना
वाक्य प्रयोग – सबके सामने अपमानित होकर रानी जहर का घूँट पीकर रह गई।

120. मुहावरा – जहर की गाँठ
अर्थ – बुरा या दुष्ट व्यक्ति
वाक्य प्रयोग – अखिल जहर की गाँठ है, उससे मित्रता करना बेकार है।

121. मुहावरा – जान हथेली पर लेना
अर्थ – जान की परवाह न करना
वाक्य प्रयोग – सीमा पर सैनिक जान हथेली पर लेकर चलते हैं और देश की रक्षा करते हैं।

122. मुहावरा – जाल फेंकना
अर्थ – किसी को फँसाना
वाक्य प्रयोग – उस अजनबी ने मुझ पर ऐसा जाल फेंका कि मेरे 500 रुपये ठग लिए।

123. मुहावरा – जाल में फँसना
अर्थ – षड्यंत्र या चंगुल में फँसना
वाक्य प्रयोग – राजू कल उस ठग के जाल में फँस गया तो मैंने ही उसे बचाया था।

124. मुहावरा – जी खट्टा होना
अर्थ – मन में वैराग पैदा होना
वाक्य प्रयोग – मेरे दादाजी का तो शहर से जी खट्टा हो गया है। वे अब गाँव में ही रहते हैं।

125. मुहावरा – जी छोटा करना
अर्थ – हतोत्साहित करना
वाक्य प्रयोग – अरे मित्र, जी छोटा मत करो, जो लेना है, ले लो। पैसे मैं दे दूँगा।

126. मुहावरा – जी हाँ, जी हाँ करना
अर्थ – खुशामद करना
वाक्य प्रयोग – रमन, जी हाँ, जी हाँ करके ही चपरासी से बाबू बन गया।

127. मुहावरा – जी जलना
अर्थ – संताप का अनुभव करना
वाक्य प्रयोग – अपनी बहुओं की आदतों को देख-देखकर तुम क्यों अपना जी जलाती हो?' पिताजी ने माँ को समझाते हुए कहा।

128. मुहावरा – जी भर के
अर्थ – जितना जी चाहे
वाक्य प्रयोग – इस बार गर्मियों में हमने जी भर के आम खाए।

129. मुहावरा – जी चुराना
अर्थ – काम में मन न लगाना
वाक्य प्रयोग – जो लोग काम से जी चुराते हैं कभी सफल नहीं हो पाते।

130. मुहावरा – जीती मक्खी निगलना
अर्थ – जान-बूझकर गलत काम करना
वाक्य प्रयोग – अरे मित्र! तुम तो मुझे जीती मक्खी निगलने को कह रहे हो! मैं जान-बूझकर किसी का अहित नहीं कर सकता।

131. मुहावरा – जूतियाँ चटकाना
अर्थ – बेकार में, बेरोजगार घूमना
वाक्य प्रयोग – एम.ए. करने के बाद भी शंकर जूतियाँ चटका रहा है।

132 मुहावरा – जौहर दिखाना
अर्थ – वीरता दिखाना
वाक्य प्रयोग – भारतीय जवान सीमा पर अपना खूब जौहर दिखाते हैं।

133. मुहावरा – ज्वाला फूँकना
अर्थ – क्रोध दिलाना
वाक्य प्रयोग – रामू की जरा-सी करतूत ने उसके पिता के अन्दर ज्वाला फूँक दी है।

134. मुहावरा – जान के लाले पड़ना
अर्थ – प्राण बचाना कठिन लगना
वाक्य प्रयोग – रात के अँधेरे में मुसाफिरों को डाकुओं ने घेर लिया। बेचारे मुसाफिरों की जान के लाले पड़ गए। सब कुछ छीन लिया तब बड़ी मुश्किल से छोड़ा।

135. मुहावरा – जान में जान आना
अर्थ – घबराहट दूर होना
वाक्य प्रयोग – लग रहा था आज विमान नहीं मिल पाएगा। हमलोग ट्रैफिक में फँसे हुए थे, पर जब मोबाइल पर संदेश आया कि विमान एक घंटा लेट हो गया है तब जाकर जान में जान आई।

136. मुहावरा – जुल्म ढाना
अर्थ – अत्याचार करना
वाक्य प्रयोग – जो लोग असहायों पर जुल्म ढाते हैं, ईश्वर उन्हें कभी-न-कभी सजा देता ही हैं।

137. मुहावरा – जोश ठंडा पड़ना
अर्थ – उत्साह कम होना
वाक्य प्रयोग – वह कई बार आई० ए० एस० की परीक्षा में बैठा, पर सफल न हो सका। अब तो बेचारे का जोश ही ठंडा पड़ गया है।

138. मुहावरा – झक मारना
अर्थ – विवश होना
वाक्य प्रयोग – दूसरा कोई साधन नहीं है। झक मारकर तुम्हे साइकिल से जाना पड़ेगा।

139. मुहावरा – झाँसे में आना
अर्थ – धोखे में आना
वाक्य प्रयोग – वह बहुत होशियार है, फिर भी झाँसे में आ गया।

140. मुहावरा – झूठ का पुतला
अर्थ – बहुत झूठा व्यक्ति
वाक्य प्रयोग – वीरू तो झूठ का पुतला है तभी कोई उसकी बात का विश्वास नहीं करता।

141. मुहावरा – झूठ के पुल बाँधना
अर्थ – झूठ पर झूठ बोलना
वाक्य प्रयोग – अपनी नौकरी बचाने के लिए रामू ने झूठ के पुल बाँध दिए।

142. मुहावरा – झाड़ू फिरना
अर्थ – सब बर्बाद हो जाना
वाक्य प्रयोग – मेरी सारी मेहनत पर तुम्हारे कारण झाड़ू फिर गया। अब मैं फिर से यह काम नहीं कर सकता।

143. मुहावरा – टाँग अड़ाना
अर्थ – अड़चन डालना
वाक्य प्रयोग – हर बात में टाँग ही अड़ाते हो या कुछ आता भी है तुम्हे?

144. मुहावरा – टस से मस न होना
अर्थ – कुछ भी प्रभाव न पड़ना
वाक्य प्रयोग – दवा लाने के लिए मैं घंटों से कह रहा हूँ, परन्तु आप टस से मस नहीं हो रहे हैं।

145. मुहावरा – टके सेर मिलना
अर्थ – बहुत सस्ता मिलना
वाक्य प्रयोग – आजकल आलू टके सेर मिल रहे हैं।

146. मुहावरा – टर-टर करना
अर्थ – बकवास करना/व्यर्थ में बोलते रहना
वाक्य प्रयोग – सुनील तो हर वक्त टर-टर करता रहता है। कौन सुनेगा उसकी बात?

147. मुहावरा – टाँग खींचना
अर्थ – किसी के बनते हुए काम में बाधा डालना
वाक्य प्रयोग – रमेश ने मेरी टाँग खींच दी, वरना मैं मैनेजर बन जाता।

148. मुहावरा – टुकड़ों पर पलना
अर्थ – दूसरे की कमाई पर गुजारा करना
वाक्य प्रयोग – सुमन अपने मामा के टुकड़ों पर पल रहा है।

149. मुहावरा – टपक पड़ना
अर्थ – सहसा आ जाना
वाक्य प्रयोग – हमलोग फिल्म जाने का कार्यक्रम बना रहे थे कि न जाने कहाँ से अध्यापक टपक पड़े और कार्यक्रम रद्द हो गया।

150. मुहावरा – टालमटोल करना
अर्थ – बहाना बनाना
वाक्य प्रयोग – मैंने उनसे पूछा, 'टालमटोल मत कीजिए। साफ बताइए, आप मेरी मदद करेंगे या नहीं?'

151. मुहावरा – टुकुर-टुकुर देखना
अर्थ – टकटकी लगाकर देखना
वाक्य प्रयोग – भिखारी भीख माँग रहा था और उसका छोटा-सा बच्चा सबको टुकु. र-टुकुर देखे जा रहा था।
152. मुहावरा – ठन-ठन गोपाल
अर्थ – खाली जेब अथवा अत्यन्त गरीब
वाक्य प्रयोग – सुमेर तो ठन-ठन गोपाल है, वह चंदा कहाँ से देगा?
153. मुहावरा – ठंडा पड़ना
अर्थ – मर जाना
वाक्य प्रयोग – वह साईकिल से गिरते ही ठंडा पड़ गया।
154. मुहावरा – ठठरी हो जाना
अर्थ – बहुत कमजोर या दुबला-पतला हो जाना
वाक्य प्रयोग – बीमारी के कारण मोहन ठठरी हो गया है।
155. मुहावरा – ठन जाना
अर्थ – लड़ाई-झगड़ा हो जाना या परस्पर विरोध होना
वाक्य प्रयोग – जब दो पार्टियों में आपस में ठन जाती है तो परिणाम अच्छा नहीं होता।
156. मुहावरा – ठाट-बाट से रहना
अर्थ – शानौशौकत से रहना
वाक्य प्रयोग – वे जिस ठाट-बाट से रहते हैं, उसकी बराबरी शायद ही कोई कर सके।
157. मुहावरा – ठीकरा फोड़ना
अर्थ – दोष लगाना
वाक्य प्रयोग – गलती आपकी है और ठीकरा दूसरों के सिर फोड़ रहे हैं?
158. मुहावरा – ठोंक बजाकर देखना
अर्थ – अच्छी तरह से जाँच-परख करना
वाक्य प्रयोग – घर-परिवार सब कुछ ठोंक बजाकर देख लेना तब शादी के लिए हाँ करना।
159. मुहावरा – डींग मारना या हाँकना
अर्थ – शेखी मारना
वाक्य प्रयोग – जब देखो, शेखू डींग मारता रहता है- 'मैंने ये किया, मैंने वो किया'।
160. मुहावरा – डेढ़/ढाई चावल की खिचड़ी पकाना
अर्थ – सबसे अलग काम करना
वाक्य प्रयोग – सुधीर अपनी डेढ़ चावल बनी खिचड़ी अलग पकाता है।
161. मुहावरा – डंका पीटना
अर्थ – प्रचार करना
वाक्य प्रयोग – अनिल ने झूठा डंका पीट दिया कि उसकी लॉटरी खुल गई है।

162. मुहावरा – डकार तक न लेना
अर्थ – किसी का माल हड़प कर जाना
वाक्य प्रयोग – इससे बचकर रहो। सारा माला हड़प लेगा और डकार तक न लेगा।
163. मुहावरा – डूब मरना
अर्थ – बहुत लज्जित होना
वाक्य प्रयोग – इस तरह की बातें मेरे लिए डूब मरने के समान हैं।
164. मुहावरा – डोरे डालना
अर्थ – किसी को अपने प्रेम-पाश में फँसाने की कोशिश करना
वाक्य प्रयोग – उस पर डोरे डालने की कोशिश मत करो। वह तुम्हारे चक्कर में आने वाली नहीं।
165. मुहावरा – ढेर हो जाना
अर्थ – गिरकर मर जाना
वाक्य प्रयोग – कल पुलिस की मुठभेड़ में दो बदमाश ढेर हो गए।
166. मुहावरा – ढपोरशंख होना
अर्थ – केवल बड़ी-बड़ी बातें करना, काम न करना
वाक्य प्रयोग – राहुल तो ढपोरशंख है, बस बातें ही करता है, काम कुछ नहीं करता।
167. मुहावरा – ढाई ईंट की मस्जिद
अर्थ – सबसे अलग कार्य करना
वाक्य प्रयोग – राजेश घर में कुआँ खुदवाकर ढाई ईंट की मस्जिद बना रहा है।
168. मुहावरा – ढेर करना
अर्थ – मार गिराना
वाक्य प्रयोग – पुलिस ने कल दो लुटेरों को सरेआम ढेर कर दिया।
169. मुहावरा – ढल जाना
अर्थ – कमजोर हो जाना, वृद्धावस्था की ओर जाना
वाक्य प्रयोग – बीमारी के कारण उसका सारा शरीर ढल गया है।
170. मुहावरा – ढिंढोरा पीटना
अर्थ – घोषणा करना
वाक्य प्रयोग – केवल ढिंढोरा पीटने से काम नहीं बनता। काम बनाने के लिए लोगों का विश्वास जीतना जरूरी है।
171. मुहावरा – तूती बोलना
अर्थ – बोलबाला होना
वाक्य प्रयोग – आजकल तो राहुल गाँधी की तूती बोल रही है।
172. मुहावरा – तिल का ताड़ बनाना
अर्थ – छोटी-सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना
वाक्य प्रयोग – शांति तो तिल का ताड़ बनाने में माहिर है।

173. मुहावरा - तीन तेरह करना
अर्थ - नष्ट करना, तितर-बितर करना
वाक्य प्रयोग - जरा-से झगड़े ने दोनों भाइयों को तीन तेरह कर दिया।

174. मुहावरा - तकदीर खुलना या चमकना
अर्थ - भाग्य अनुकूल होना
वाक्य प्रयोग - सरकारी नौकरी लगने से श्याम की तो तकदीर खुल गई।

175. मुहावरा - तलवे धोकर पीना
अर्थ - अत्यधिक आदर-सत्कार या सेवा करना
वाक्य प्रयोग - अमन अपने माता-पिता के तलवे धोकर पीता है तभी लोग उसे श्रवण का अवतार कहते हैं।

176. मुहावरा - तलवार सिर पर लटकना
अर्थ - खतरा होना
वाक्य प्रयोग - आजकल रामू के मैनेजर से उसकी कहासुनी हो गई है इसलिए तलवार उसके सिर पर लटकी हुई है।

177. मुहावरा - ताक में बैठना
अर्थ - मौके की तलाश में रहना
वाक्य प्रयोग - सुधीर बहुत दिनों से ताक में बैठा था कि उसे मैं कब अकेला मिलूँ और वो मुझे पीटे।

178. मुहावरा - तारीफ के पुल बाँधना
अर्थ - अधिक प्रशंसा या तारीफ करना
वाक्य प्रयोग -राकेश जब फर्स्ट क्लास पास हुआ तो सभी ने उसकी तारीफ के पुल बाँध दिए।

179. मुहावरा - तारे तोड़ लाना
अर्थ - कठिन या असंभव कार्य करना
वाक्य प्रयोग - जब विवेक ने अपनी डींग मारनी शुरू की तो मैंने कहा- बस करो भाई! तारे नहीं तोड़ लाए हो, जो इतनी डींग मार रहे हो।

180. मुहावरा - तिनके का सहारा
अर्थ - थोड़ी-सी मदद
वाक्य प्रयोग - मैंने मोहित की जब सौ रुपए की मदद की तो उसने कहा कि डूबते को तिनके का सहारा बहुत होता है।

181. मुहावरा - तीस मारखाँ बनना
अर्थ - अपने को बहुत शूरवीर समझना
वाक्य प्रयोग - मुन्ना खुद को बहुत तीस मारखाँ समझता है, जब देखो लड़ाई की बातें करता रहता है।

182. मुहावरा – तेल निकालना
अर्थ – खूब कस कर काम लेना
वाक्य प्रयोग – प्राइवेट फर्म तो कर्मचारी का तेल निकाल लेती है। तभी विकास को नौकरी करना पसंद नहीं है।

183. मुहावरा – तोता पालना
अर्थ – किसी बुरी आदत को न छोड़ना
वाक्य प्रयोग – केशव ने तंबाकू खाने का तोता पाल लिया है। बहुत मना किया, मानता ही नहीं है।

184. मुहावरा – तबीयत भरना
अर्थ – मन भरना, इच्छा न होना
वाक्य प्रयोग – इस शहर से अब मेरी तबीयत भर चुकी है इसलिए इस शहर को छोड़कर जाना चाहता हूँ।

185. मुहावरा – तह तक पहुँचना
अर्थ – गुप्त रहस्य को मालूम कर लेना
वाक्य प्रयोग – जब तक वह इस मामले की तह तक नहीं पहुँचेगा तब तक कोई फैसला नहीं सुनाएगा।

186. मुहावरा – ताक-झाँक करना
अर्थ – इधर-उधर देखना
वाक्य प्रयोग – दूसरे के घर में ताक-झाँक करना अच्छी आदत नहीं है।

187. मुहावरा – तानकर सोना
अर्थ – निश्चित होकर सोना
वाक्य प्रयोग – बेटी के विवाह के बाद वह सारी चिंताओं से मुक्त हो गया है और अब तानकर सोता है।

188. मुहावरा – ताल ठोंकना
अर्थ – लड़ने के लिए ललकारना
वाक्य प्रयोग – उसके सामने तुम ताल मत ठोंको, तुम उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाओगे।

189. मुहावरा – तिलमिला उठना
अर्थ – बहुत बुरा मानना
वाक्य प्रयोग – जब मैंने उसकी पोल खोल दी तो वह तिलमिला उठा।

190. मुहावरा – तू-तू मैं-मैं होना
अर्थ – आपस में कहा-सुनी होना
वाक्य प्रयोग – कल रमेश और उसकी पत्नी के बीच तू-तू मैं-मैं हो गई।

191. मुहावरा – तूल पकड़ना
अर्थ – उग्र रूप धारण करना
वाक्य प्रयोग – बातों-ही-बातों में कहा-सुनी हो गई और झगड़े ने तूल पकड़ ली।
192. मुहावरा – तैश में आना
अर्थ – क्रोध करना
वाक्य प्रयोग – तैश में आकर किसी का अपमान करना गलत है।
193. मुहावरा – त्राहि-त्राहि करना
अर्थ – विपत्ति या कठिनाई के समय रक्षा या शरण के लिए प्रार्थना करना
वाक्य प्रयोग – आग लगने पर बच्चे का उपाय न देखकर लोग त्राहि-त्राहि करने लगे।
194. मुहावरा – थूक कर चाटना
अर्थ – कह कर मुकर जाना
वाक्य प्रयोग – कल मुन्ना थूक कर चाट गया। अब उस पर कोई विश्वास नहीं करेगा।
195. मुहावरा – थाली का बैंगन होना
अर्थ – ऐसा आदमी जिसका कोई सिद्धान्त न हो
वाक्य प्रयोग – आजकल के नए-नए नेता तो थाली के बैंगन हैं।
196. मुहावरा – थक कर चूर होना
अर्थ – बहुत थक जाना
वाक्य प्रयोग – मई की धूप में चार कि० मी० की पैदल यात्रा करने के कारण मैं तो थककर चूर हो गया हूँ।
197. मुहावरा – थर्रा उठना
अर्थ – अत्यंत भयभीत होना
वाक्य प्रयोग – अचानक इतनी तेज धमाका हुआ कि दूर तक के लोग थर्रा उठे।
198. मुहावरा – थैली का मुँह खोलना
अर्थ – खूब धन व्यय करना
वाक्य प्रयोग – सेठ रामप्रसाद ने अपनी बेटी के विवाह में थैली का मुँह खोल दिया था।
199. मुहावरा – दिन दूना रात चौगुना
अर्थ – तेजी से तरक्की करना
वाक्य प्रयोग – रामदास अपने व्यापार में दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है।
200. मुहावरा – दौड़-धूप करना
अर्थ – बड़ी कोशिश करना
वाक्य प्रयोग – कौन बाप अपनी बेटी के ब्याह के लिए दौड़-धूप नहीं करता ?
201. मुहावरा – दो कौड़ी का आदमी
अर्थ – तुच्छ या अविश्वसनीय व्यक्ति
वाक्य प्रयोग – किस दो कौड़ी के आदमी की बात करते हो?

202. मुहावरा – दो दिन का मेहमान
अर्थ – जल्द मरने वाला
वाक्य प्रयोग – किसी का क्या बिगाड़ेगा ? वह बेचारा खुद दो दिन का मेहमान है।

203. मुहावरा – दूध के दाँत न टूटना
अर्थ – ज्ञानहीन या अनुभवहीन
वाक्य प्रयोग – वह सभा में क्या बोलेगा ? अभी तो उसके दूध के दाँत भी नहीं टूटे हैं।

204. मुहावरा – दूज का चाँद होना या ईद का चाँद होना
अर्थ – कभी-कभार दिखाई पड़ना
वाक्य प्रयोग – मित्र, आजकल तो तुम दूज का चाँद हो रहे हो।

205. मुहावरा – दो नावों पर पैर रखना/दो नावों पर सवार होना
अर्थ – दो काम एक साथ करना
वाक्य प्रयोग – मित्र, तुम दो नावों पर पैर मत रखो- या तो पढ़ लो, या नौकरी कर लो।

206. मुहावरा – दरार पड़ना
अर्थ – मतभेद पैदा होना
वाक्य प्रयोग – अब कौशल और कौशिक की दोस्ती में दरार पड़ गई है।

207. मुहावरा – दसों उंगलियाँ घी में होना
अर्थ – खूब लाभ होना
वाक्य प्रयोग – आजकल रामअवतार की दसों उंगलियाँ घी में हैं।

208. मुहावरा – दाँत खट्टे करना
अर्थ – परास्त करना, हराना
वाक्य प्रयोग – महाभारत में पांडवों ने कौरवों के दाँत खट्टे कर दिए थे।

209. मुहावरा – दाई से पेट छिपाना
अर्थ – जानने वाले से भेद छिपाना
वाक्य प्रयोग – मैं पंकज की हरकत जानता हूँ, फिर भी वह दाई से पेट छिपा रहा था।

210. मुहावरा – दाद देना
अर्थ – प्रशंसा करना
वाक्य प्रयोग – माहेश्वरी सर के पढ़ाने के ढंग की सभी छात्र दाद देते हैं।

211. मुहावरा – दाल-भात में मूसलचन्द
अर्थ – दो व्यक्तियों की बातों में तीसरे व्यक्ति का हस्तक्षेप करना
वाक्य प्रयोग – शंकर हर जगह दाल-भात में मूसलचन्द की तरह आ जाता है।

212. मुहावरा – दिन गँवाना
अर्थ – समय नष्ट करना
वाक्य प्रयोग – बेरोजगारी में रोहन आजकल यूँ ही दिन गँवा रहा है।

213. मुहावरा – दिन-रात एक करना
अर्थ – कठिन श्रम करना
वाक्य प्रयोग – मोहन ने दसवीं पास करने के लिए दिन-रात एक कर दिया था।

214. मुहावरा – दिन आना
अर्थ – अच्छा समय आना
वाक्य प्रयोग – अभी उनके दिन चल रहे हैं पर कभी-न-कभी हमारे भी दिन आएँगे।

215. मुहावरा – दिमाग सातवें आसमान पर होना
अर्थ – बहुत अधिक घमंड होना
वाक्य प्रयोग – सरकारी नौकरी लगने पर परमजीत का दिमाग सातवें आसमान पर हो गया है।

216. मुहावरा – दिमाग खाना या खाली करना
अर्थ – मगजपच्ची या बकवास करना
वाक्य प्रयोग – मेरे दिमाग खाली करने के बाद भी गणित का सवाल सोनू की समझ में नहीं आया।

217. मुहावरा – दिल पर पत्थर रखना
अर्थ – दु:ख सहकर या हानि होने पर चुप रहना
वाक्य प्रयोग – रामू के जब पाँच हजार रुपए खो गए तो उसने दिल पर पत्थर रख लिया।

218. मुहावरा – दिल पसीजना
अर्थ – किसी पर दया आना
वाक्य प्रयोग – भिखारी की दुर्दशा देखकर मेरा दिल पसीज गया।

219. मुहावरा – दिल का काला या खोटा
अर्थ – कपटी अथवा दुष्ट
वाक्य प्रयोग – मुन्ना दिल का काला है।

220. मुहावरा – दिल बाग-बाग होना
अर्थ – अत्यधिक हर्ष होना
वाक्य प्रयोग – वर्षों बाद बेटा घर आया तो माता-पिता का दिल बाग-बाग हो गया।

221. मुहावरा – दिल का गुबार निकालना
अर्थ – मन का मलाल दूर करना
वाक्य प्रयोग – अपने बेटे के विवाह में पंडित रामदीन ने अपने दिल के सारे गुबार निकाल लिए।

222. मुहावरा – दिल की दिल में रह जाना
अर्थ – मनोकामना पूरी न होना
वाक्य प्रयोग – जिस लड़की से वह विवाह करना चाहता था उससे कह ही नहीं पाया और इस तरह से दिल की दिल में ही रह गई।

223. मुहावरा - दिल के अरमान निकलना
अर्थ - इच्छा पूरी होना
वाक्य प्रयोग - जब मेरे दिल के अरमान निकलेंगे तब मुझे तसल्ली मिलेगी।

224. मुहावरा - दिल्ली दूर होना
अर्थ - लक्ष्य दूर होना
वाक्य प्रयोग - अभी तो मोहन ने सिर्फ दसवीं पास की है। उसे डॉक्टर बनना है तो अभी दिल्ली दूर है।

225. मुहावरा - दूध का धुला
अर्थ - निष्पाप; निर्दोष
वाक्य प्रयोग - मुकेश तो दूध का धुला है, लोग उसे चोरी के इल्जाम में खाहमखाह फँसा रहे हैं।

226. मुहावरा - दूध का-सा उबाल आना
अर्थ - एकदम से क्रोध आना
वाक्य प्रयोग - जैसे ही मैंने पिताजी से रुपए माँगे, उनमें दूध का-सा उबाल आ गया।

227. मुहावरा - दूध की नदियाँ बहना
अर्थ - धन-दौलत से पूर्ण होना
वाक्य प्रयोग - कृष्ण के युग में मथुरा में दूध की नदियाँ बहती थीं।

228. मुहावरा - दो-दो हाथ होना
अर्थ - लड़ाई होना
वाक्य प्रयोग - छोटी-सी बात पर राजू और रामू में दो-दो हाथ हो गए।

229. मुहावरा - दोनों हाथों में लड्डू होना
अर्थ - हर प्रकार से लाभ होना
वाक्य प्रयोग - अब अजय के तो दोनों हाथों में लड्डू हैं।

230. मुहावरा - दूर के ढोल सुहावने होना या लगना
अर्थ - दूर की वस्तु या व्यक्ति अच्छा लगना
वाक्य प्रयोग - जब मैंने वैष्णो देवी जाने को कहा तो पिताजी बोले कि तुम्हें दूर के ढोल सुहावने लग रहे हैं, चढ़ाई चढ़ोगे तब मालूम पड़ेगा।

231. मुहावरा - दफा होना
अर्थ - चले जाना
वाक्य प्रयोग - अगर तुम वहाँ से दफा न हुए होते तो तुम्हारी खैर नहीं थी।

232. मुहावरा - दाल रोटी चलना
अर्थ - जीवन निर्वाह होना
वाक्य प्रयोग - इतनी तनख्वाह मिल जाती है कि किसी तरह दाल-रोटी चल जाती है।

233. मुहावरा – दिल बल्लियों उछलना
अर्थ – बहुत खुश होना
वाक्य प्रयोग – नौकरी की खबर मिलते ही उसका दिलबल्लियों उछलने लगा।
234. मुहावरा – दुखती रग को छूना
अर्थ – मर्म पर आघात करना
वाक्य प्रयोग – उसकी दुखती रग को मत छुओ वरना वह रो पड़ेगी।
235. मुहावरा – दुलत्ती झाड़ना
अर्थ – दोनों लातों से मारना
वाक्य प्रयोग – घोड़ा जब दुलत्ती झाड़ता है तब थोड़ी दूर रहना चाहिए।
236. मुहावरा –दूध की लाज रखना
अर्थ – वीरोचित कार्य करना
वाक्य प्रयोग – माँ ने अपने बेटे को युद्ध में भेजते समय यही कहा था कि 'बेटे मेरे दूध की लाज रखना। या तो जीत कर लौटना या शहीद हो जाना'।
237. मुहावरा – दूध पीता बच्चा
अर्थ – अबोध एवं निरपराध व्यक्ति
वाक्य प्रयोग – वह कोई दूध पीता बच्चा नहीं है जो हमेशा उसे टोकती रहती हो।
238. मुहावरा – देखते रह जाना
अर्थ – दंग रह जाना
वाक्य प्रयोग – इतने छोटे बच्चे के करतब लोग देखते रह गए।
239. मुहावरा – देह टूटना
अर्थ – शरीर में दर्द होना
वाक्य प्रयोग – लगता है इनफैक्शन हो गया है। सुबह से ही मेरी देह टूट रही है।
240. मुहावरा – द्वार–द्वार फिरना
अर्थ – घर–घर भीख माँगना
वाक्य प्रयोग – बेचारा द्वार–द्वार फिरता है तब जाकर पेट भरने लायक भीख मिलती है।
241. मुहावरा – धूप में बाल सफेद करना
अर्थ – बिना अनुभव के जीवन का बहुत बड़ा भाग बिता देना
वाक्य प्रयोग – रामू काका ने धूप में बाल सफेद नहीं किए हैं, उन्हें बहुत अनुभव है।
242. मुहावरा – धोबी का कुत्ता घर का न घाट का
अर्थ – जिसका कहीं ठिकाना न हो, निरर्थक व्यक्ति
वाक्य प्रयोग – जब से रामू की नौकरी छूटी है, उसकी दशा धोबी का कुत्ता घर न घाट का जैसी है।
243. मुहावरा – धन्नासेठ का नाती बनना
अर्थ – गरीब आदमी का बहुत गर्व करना
वाक्य प्रयोग – किशन के पास कुछ भी नहीं है, फिर भी धन्नासेठ का नाती बनता है।

244. मुहावरा – धमाचौकड़ी मचाना
अर्थ – उपद्रव करना
वाक्य प्रयोग – अंकुर और टीटू मिलकर बहुत धमाचौकड़ी मचाते हैं।

245. मुहावरा – धूल फाँकना
अर्थ – मारा-मारा फिरना
वाक्य प्रयोग – बी.ए. पास करने के बाद कालू नौकरी के लिए धूल फाँक रहा है।

246. मुहावरा – धुन का पक्का
अर्थ – लगन से काम करने वाला
वाक्य प्रयोग – जो धुन के पक्के होते हैं वे काम पूरा करके ही छोड़ते हैं।

247. मुहावरा – धूनी रमाना
अर्थ – साधु या विरक्त हो जाना, कहीं पर जाकर निवास करना
वाक्य प्रयोग – हमारा क्या है? जहाँ कहीं भी धूनी रमा देंगे वहीं अपना किया बन जाएगा।

248. मुहावरा – धूल चाटना
अर्थ – खुशामद करना
वाक्य प्रयोग – पहले तो बहुत अकड़ रहे थे। जब पता चला कि मदन मंत्री का बेटा है तो लगे उसकी धूल चाटने।

249. मुहावरा – धूल छानना
अर्थ – मारना-पीटना
वाक्य प्रयोग – बदमाशी करोगे, तो धूल झाड़ देंगे।

250. मुहावरा – नौ-दो ग्यारह होना
अर्थ – भाग जाना
वाक्य प्रयोग – बिल्ली को देखकर चूहे नौ दो ग्यारह हो गए।

251. मुहावरा – निन्यानबे के फेर में पड़ना
अर्थ – अत्यधिक धन कमाने में व्यस्त होना
वाक्य प्रयोग – आजकल रामू सब कुछ भूलकर निन्यानबे के फेर में पड़ा हुआ है।

252. मुहावरा – नमक का हक अदा करना
अर्थ – बदला/ऋण चुकाना
वाक्य प्रयोग – यदि आप मेरी मदद करेंगे तो जीवन भर मैं आपके नमक का हक अदा करता रहूँगा।

253. मुहावरा – नमक-मिर्च लगाना
अर्थ – बढ़ा-चढ़ाकर कहना
वाक्य प्रयोग – मेरे भाई ने नमक-मिर्च लगाकर मेरी शिकायत पिता जी से कर डाली।

254. मुहावरा – नयनों का तारा
अर्थ – अत्यन्त प्रिय व्यक्ति या वस्तु
वाक्य प्रयोग – पिंटू अपने माता-पिता के नयनों का तारा है।
255. मुहावरा – नाक में दम करना
अर्थ – बहुत परेशान करना
वाक्य प्रयोग – इस बच्चे ने तो नाक में दम कर दिया है। कितना ऊधम करता है ये!
256. मुहावरा – नाक में नकेल डालना
अर्थ – नियंत्रण में करना
वाक्य प्रयोग – अशोक ने मैनेजर बनकर सबकी नाक में नकेल डाल दी है।
257. मुहावरा – नाक रगड़ना
अर्थ – बहुत अनुनय-विनय करना
वाक्य प्रयोग – सुरेश को नाक रगड़ने पर भी नौकरी नहीं मिली।
258. मुहावरा – नाकों चने चबाना
अर्थ – बहुत परेशान होना
वाक्य प्रयोग – शिवाजी से टक्कर लेकर मुगलों को नाकों चने चबाने पड़े।
259. मुहावरा – नाक कटना
अर्थ – इज्जत जाना
वाक्य प्रयोग – पोल खुलते ही सबके सामने उसकी नाक कट गयी।
260. मुहावरा – नाम डुबोना
अर्थ – प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि खोना
वाक्य प्रयोग – सीमा ने घर से भाग कर अपने माँ-बाप का नाम डुबो दिया।
261. मुहावरा – नंगा कर देना
अर्थ – असलियत प्रकट कर देना
वाक्य प्रयोग – यदि ज्यादा बक-बक करोगे तो सबके सामने नंगा कर दूँगा।
262. मुहावरा – नंबर दो का पैसा/रुपया
अर्थ – अवैध धन
वाक्य प्रयोग – सारे नेता नंबर दो के पैसे को स्विस बैंक में जमा करने में लगे हैं।
263. मुहावरा – नशा उतरना/काफूर होना
अर्थ – घमण्ड दूर होना
वाक्य प्रयोग – व्यापार में घाटा होते ही सेठ जी का नशा उतर गया/काफूर हो गया।
264. मुहावरा – न लेना न देना
अर्थ – कोई संबंध न रखना
वाक्य प्रयोग – रोहन का अपनी पत्नी से न लेना है न देना। दोनों अलग हो गए हैं।

265. मुहावरा – नजर अंदाज करना
अर्थ – उपेक्षा करना
वाक्य प्रयोग – धनवान बच्चों के सामने गरीब बच्चों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।
266. मुहावरा – नजर डालना
अर्थ – देखना
वाक्य प्रयोग – यदि आप इस तरफ नजर डालेंगे तो आपको सब समझ में आ जाएगा।
267. मुहावरा – नजरबंद करना
अर्थ – जेल में रखना
वाक्य प्रयोग – गाँधी जी को अंग्रेजों ने कई बार नजरबंद करके रखा था।
268. मुहावरा – नजर बचाकर
अर्थ – चुपके से
वाक्य प्रयोग – माता-पिता की नजर बचाकर वह सिनेमा देखने आई थी।
269. मुहावरा – नसीब फूटना
अर्थ – भाग्य का प्रतिकूल होना
वाक्य प्रयोग – हमारे तो नसीब फूटे थे जो इस शहर में आकर बसे।
270. मुहावरा – नाम कमाना
अर्थ – ख्याति प्राप्त करना
वाक्य प्रयोग – कंप्यूटर के क्षेत्र में मेरे बेटे ने बहुत नाम कमाया है।
271. मुहावरा – नाक भौं चढ़ाना
अर्थ – घृणा प्रदर्शित करना
वाक्य प्रयोग – इस जगह को देखकर नाक-भौं मत चढ़ाओ। इतनी खराब जगह नहीं है यह।
272. मुहावरा – नुकताचीनी करना
अर्थ – दोष दिखाना, आलोचना करना
वाक्य प्रयोग – तुम हर बात में नुक्ताचीनी क्यों करती हो, कोई भी बात सीधे क्यों नहीं मान लेती हो।
273. मुहावरा – नींद हराम करना
अर्थ – चिंता आदि के कारण सो न पाना
वाक्य प्रयोग – बेटी के विवाह की चिंता में वर्मा जी की नींद हराम हो गई है।
274. मुहावरा – पेट काटना
अर्थ – अपने भोजन तक में बचत
वाक्य प्रयोग – अपना पेट काटकर वह अपने छोटे भाई को पढ़ा रहा है।
275. मुहावरा – पेट में चूहे कूदना
अर्थ – जोर की भूख
वाक्य प्रयोग – पेट में चूहे कूद रहे हैं। पहले कुछ खा लूँ, तब तुम्हारी सुनूँगा।

276. मुहावरा – पौ बारह होना
अर्थ – खूब लाभ होना
वाक्य प्रयोग – क्या पूछना है ! आजकल तुम व्यापारियों के ही तो पौ बारह हैं।
277. मुहावरा – पाँचों उँगलियाँ घी में होना
अर्थ – पूरे लाभ में
वाक्य प्रयोग – पिछड़े देशों में उद्योगियों और मेहनतकशों की हालत पतली रहती है तथा दलालों, कमीशन एजेण्टों और नौकरशाहों की ही पाँचों उँगलियाँ घी में रहता हैं।
278. मुहावरा – परछाई से भी डरना
अर्थ – बहुत डरना
वाक्य प्रयोग – राजू तो अपने पिताजी की परछाई से भी डरता है।
279. मुहावरा – पल्ला झाड़ना
अर्थ – पीछा छुड़ाना
वाक्य प्रयोग – मैंने उसे उधार पैसे नहीं दिए तो उसने मुझसे पल्ला झाड़ लिया।
280. मुहावरा – पाँव फूलना
अर्थ – डर से घबरा जाना
वाक्य प्रयोग – जब चोरी पकड़ी गई तो रामू के पाँव फूल गए।
281. मुहावरा – पानी का बुलबुला
अर्थ – क्षणभंगुर, थोड़ी देर का
वाक्य प्रयोग – संतों ने ठीक ही कहा है– ये जीवन पानी का बुलबुला है।
282. मुहावरा – पानी फेरना
अर्थ – समाप्त या नष्ट कर देना
वाक्य प्रयोग – मित्र! तुमने तो सब किये कराए पर पानी फेर दिया।
283. मुहावरा – पारा चढ़ना
अर्थ – क्रोधित होना
वाक्य प्रयोग – मेरे दादाजी का जरा–सी बात में पारा चढ़ आता है।
284. मुहावरा – पेट का गहरा
अर्थ – भेद छिपाने वाला
वाक्य प्रयोग – कल्लू पेट का गहरा है, राज की बात नहीं बताता।
285. मुहावरा – पेट का हल्का
अर्थ – कोई बात न छिपा सकने वाला
वाक्य प्रयोग – रामू पेट का हल्का है, उसे कोई बात बताना बेकार है।
286. मुहावरा – पट्टी पढ़ाना
अर्थ – गलत सलाह देना
वाक्य प्रयोग – किसी को पट्टी पढ़ाना अच्छी बात नहीं।

287. मुहावरा – पत्थर का कलेजा
अर्थ – कठोर हृदय व्यक्ति
वाक्य प्रयोग – शेरसिंह का पत्थर का कलेजा है तभी अपने माता-पिता के देहांत पर उसकी आँखों में आँसू नहीं थे।

288. मुहावरा – पर्दा उठना
अर्थ – भेद प्रकट होना
वाक्य प्रयोग – आज सच्चाई से पर्दा उठ ही गया कि मुन्ना धनवान है।

289. मुहावरा – पलकें बिछाना
अर्थ – बहुत श्रद्धापूर्वक आदर-सत्कार करना
वाक्य प्रयोग – नेताजी के आने पर सबने पलकें बिछा दीं।

290. मुहावरा – पाँव धोकर पीना
अर्थ – अत्यन्त सेवा-शुश्रुषा और सत्कार करना
वाक्य प्रयोग – रमा अपनी सासु माँ के पाँव धोकर पीती है।

291. मुहावरा – पीठ ठोंकना
अर्थ – शाबाशी देना
वाक्य प्रयोग – कक्षा में फर्स्ट आने पर अध्यापक ने राजू की पीठ ठोंक दी।

292. मुहावरा – प्राण हथेली पर लेना
अर्थ – जान खतरे में डालना
वाक्य प्रयोग – सैनिक प्राण हथेली पर लेकर देश की रक्षा करते हैं।

293. मुहावरा – पलक-पाँवड़े बिछाना
अर्थ – बहुत श्रद्धापूर्वक स्वागत करना
वाक्य प्रयोग – गाँधी जी जिस गाँव से भी निकल जाते थे लोग उनके स्वागत में पल. क-पाँवड़े बिछा देते थे।

294. मुहावरा – पल्ला पकड़ना
अर्थ – आश्रय लेना
वाक्य प्रयोग – अब पल्ला पकड़ा है तो जीवनभर साथ निभाना होगा।

295. मुहावरा – पाँव पड़ना
अर्थ – बहुत अनुनय-विनय करना
वाक्य प्रयोग – मेरे पाँव पड़ने से कुछ न होगा, जाकर अपने अध्यापक से माँफी माँगो।

296. मुहावरा – पाँव में बेड़ी पड़ना
अर्थ – स्वतंत्रता नष्ट हो जाना
वाक्य प्रयोग – मल्लिका का विवाह क्या हुआ बेचारी के पाँवों में बेड़ी पड़ गई है, उसके सास-ससुर उसे कहीं आने-जाने ही नहीं देते।

297. मुहावरा – पाँवों में मेंहदी लगना
अर्थ – कहीं जाने में अशक्त होना
वाक्य प्रयोग – तुम्हारे पाँवों में क्या मेंहदी लगी है जो तुम बाजार तक जाकर सब्जी भी नहीं ला सकते?

298. मुहावरा – पाँसा पलटना
अर्थ – भाग्य का प्रतिकूल होना
वाक्य प्रयोग – पता नहीं कब क्या से क्या हो जाए? पाँसा पलटते देर नहीं लगती।

299. मुहावरा – पानी की तरह रुपया बहाना
अर्थ – अन्धाधुन्ध खर्च करना
वाक्य प्रयोग – सेठजी ने सेठानी के इलाज पर पानी की तरह रुपया बहाया पर कुछ न हो सका।

300. मुहावरा – पाप का घड़ा भरना
अर्थ – पाप का पराकाष्ठा पर पहुँचना
वाक्य प्रयोग – वह दुष्ट समझता था कि उसके पापों का घड़ा कभी भरेगा ही नहीं, पर समय किसी को नहीं छोड़ता।

301. मुहावरा – पिंड छुड़ाना
अर्थ – पीछा छुड़ाना
वाक्य प्रयोग – बड़ा दुष्ट है वह। उससे पिंड छुड़ाना बहुत मुश्किल है।

302. मुहावरा – पीछा छुड़ाना
अर्थ – जान छुड़ाना
वाक्य प्रयोग – बड़ी मुश्किल से मैं उससे पीछा छुड़ाकर आया हूँ।

303. मुहावरा – पीठ दिखाना
अर्थ – हारकर भागना/पीछे हटना
वाक्य प्रयोग – पाकिस्तानी सेना पीठ दिखाकर भाग निकली।

304. मुहावरा – पुरजा ढीला होना
अर्थ – व्यक्ति का सनकी हो जाना
वाक्य प्रयोग – मदन लाल के दिमाग का पुरजा ढीला हो गया है। उसे पता ही नहीं चलता कि क्या बोल रहा है?

305. मुहावरा – पेट में दाढ़ी होना
अर्थ – बहुत चालाक होना
वाक्य प्रयोग – उसे सीधा मत समझना। उसके पेट में दाढ़ी है, किसी भी दिन चकमा दे सकता है।

306. मुहावरा – पेट में बल पड़ना
अर्थ – इतना हँसना कि पेट दुखने लगे
वाक्य प्रयोग – आज सब लोगों ने जो चुटकले सुनाए उन्हें सुनकर सब लोगों के पेट में बल पड़ गए।

307. मुहावरा – पैर उखड़ना
अर्थ – भाग जाना
वाक्य प्रयोग – युद्ध में कौरवों की सेना के पैर उखड़ गए।

308. मुहावरा – पैर फैलाकर सोना
अर्थ – निश्चिंत रहना
वाक्य प्रयोग – बेटी का विवाह हो जाए फिर पैर फैला कर सोऊँगा।

309. मुहावरा – पोल खुलना
अर्थ – किसी का छुपा हुआ दोष सामने आ जाना
वाक्य प्रयोग – जब तुम्हारी पोल खुल जाएगी तब ये ही लोग तुम्हारा क्या हाल करेंगे तुम्हें अनुमान नहीं है।

310. मुहावरा – पोल खोलना
अर्थ – रहस्य प्रकट करना
वाक्य प्रयोग – आखिर एक दिन पोल खुली कि वह पैसा कहाँ से लाता है।

311. मुहावरा – पैसा डूबना
अर्थ – हानि होना
वाक्य प्रयोग – इस कारोबार में मेरा पैसा डूब गया।

312. मुहावरा – प्राणों की बाजी लगाना
अर्थ – जान की परवाह न करना
वाक्य प्रयोग – चिंता मत करो। प्राणों की बाजी लगाकर वह तुम्हारी रक्षा करेगा।

@UPSC_THOUGHT

Get Best Quality
Magazines , Pdfs
&
All Exam Study Material in
Hindi & English Both
Languages

CLICK HERE

Https://t.me/Upsc_thought